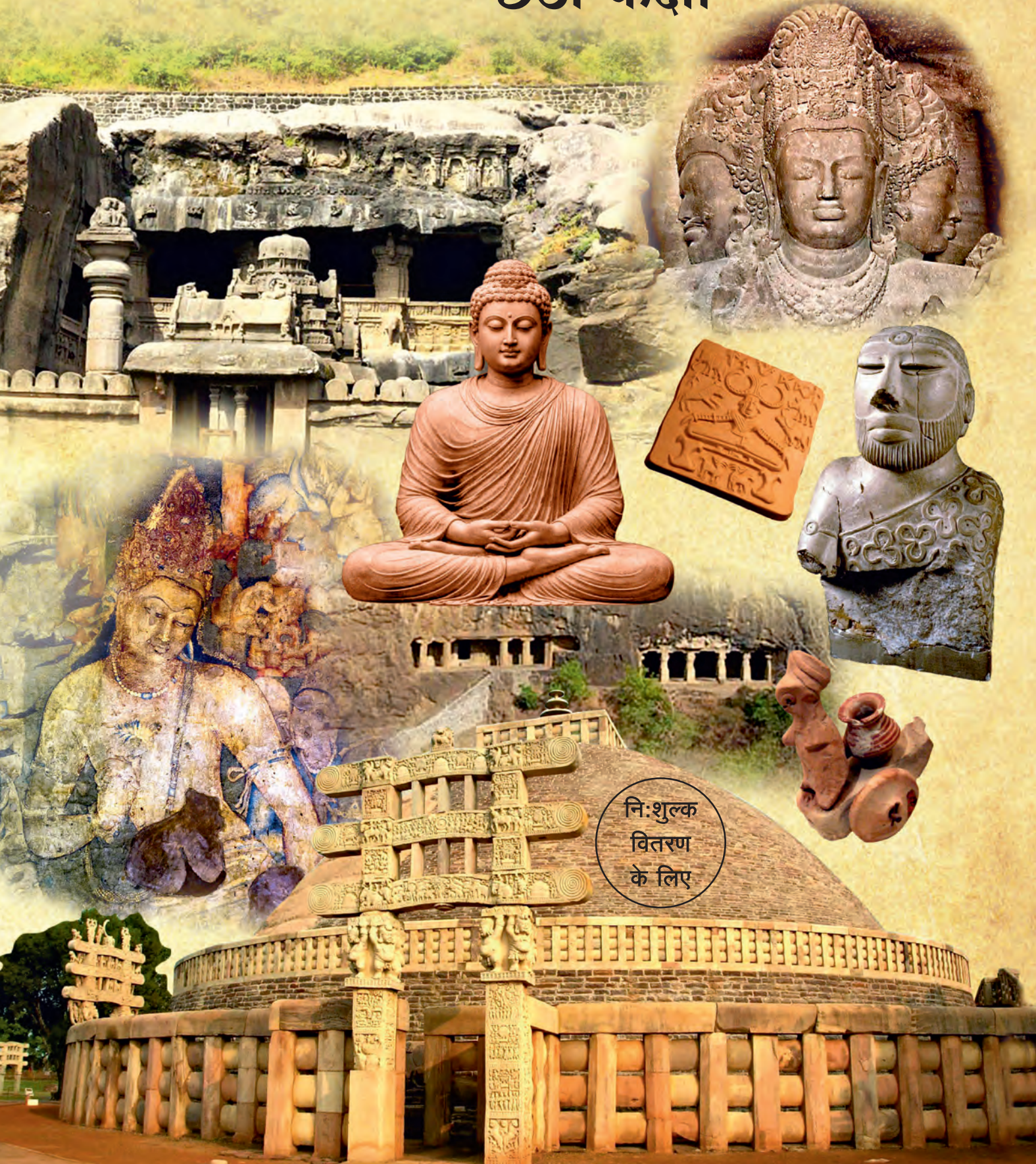




इतिहास और नागरिक शास्त्र

छठी कक्षा



निःशुल्क
वितरण
के लिए



टेली मानस हेल्पलाइन

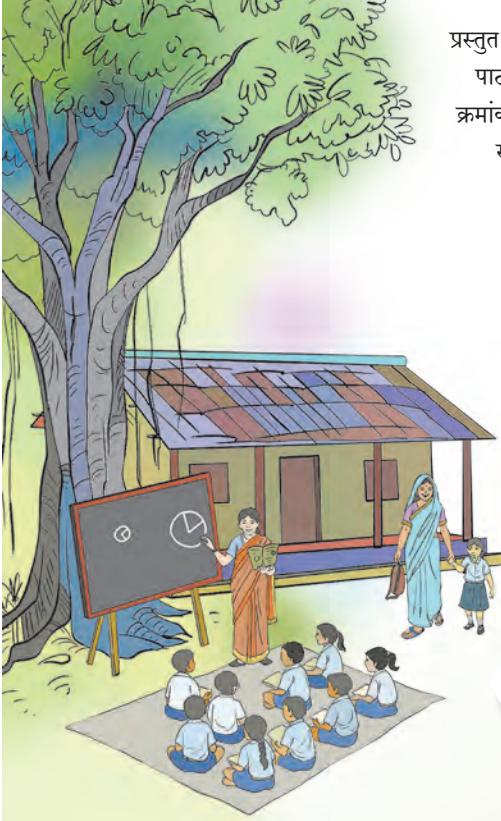
Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना 'टेली मानस' महाराष्ट्र राज्य में अक्टूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा निःशुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके निःसंकोच बताएँ तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की निःशुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।



प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद, पुणे, महाराष्ट्र द्वारा पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार करके उनके द्वारा पाठ्यपुस्तक की जाँच की गई है। शासन निर्णय क्रमांक: अभ्यास २११६ (प्र.क्र.४३/१६) एस डी-४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. १६.०५.२०१६ को हुई इस समिति की बैठक में प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक शैक्षिक वर्ष २०२६-२७ से निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

इतिहास और नागरिक शास्त्र

छठी कक्षा



समग्र शिक्षा



महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११ ००४



चौखट में दिए गए Q.R. Code को स्मार्ट फोन द्वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक और पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक्, श्राव्य एवं दृक्-श्राव्य रूप में अध्ययन-अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति :

जून २०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४.

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

इतिहास समिति

डॉ. शुभांगना अत्रे, अध्यक्ष	श्री श्रीकांत बापट, सदस्य
श्री किशोर पाटील, सदस्य	श्री सोमेश शर्मा, सदस्य
श्रीमती. मुग्धा लेले, सदस्य	श्री निनाद तेंडुलकर, सदस्य
डॉ. शिवानी लिमये, सदस्य	डॉ. सिद्धार्थ जाधव, सदस्य
श्री पंकज शिंदे, सदस्य	डॉ. विजय माने, सदस्य
डॉ. अनुजा शिंदे, सदस्य	श्री शंकर खरात, सदस्य
श्री अरुण इंगळे, सदस्य	डॉ. प्रशम कोल्हे, सदस्य
श्रीमती. सुमन गायकवाड, सदस्य	डॉ. राजानंद पट्टेबहादूर, सदस्य
श्री ताराचंद्र आवळे, सदस्य	डॉ. नलिनी वाघमारे, सदस्य
श्री कुशलकुमार समरीत, सदस्य	श्री रामेश्वर लोटके
श्री विक्रम अडसूळ, सदस्य	(अभ्यासक्रम समन्वयक)
श्री प्रशांत शेवतकर, सदस्य	श्री अरूण जाधव
श्री सुहास धस, सदस्य	(अभ्यासक्रम समन्वयक)
डॉ. सचिन डेंगळे, सदस्य	श्रीमती वर्षा सरोदे, सदस्य सचिव
श्री निलेश बनकर, सदस्य	

नागरिकशास्त्र समिति

डॉ. हर्षद भोसले, अध्यक्ष	डॉ. व्मंकटेश खरात, सदस्य
डॉ. प्रिया इंगळकर, सदस्य	डॉ. ज्योती बुवा, सदस्य
श्री अविनाश बगाडे, सदस्य	डॉ. प्रभाकर लोंढे, सदस्य
श्री चंद्रहास हिप्परकर, सदस्य	डॉ. नंदकिशोर बोकाडे, सदस्य
श्री प्रशांत जोशी, सदस्य	श्री नारायण मुदगलवाड, सदस्य
प्रा. सुनिता दळवी, सदस्य	श्री दत्तत्रय राठोड, सदस्य
श्री शाम राऊत, सदस्य	डॉ. बाळासाहेब किलचे, सदस्य
डॉ. शिवाजी रेणापुरे, सदस्य	श्री रविंद्र जिंदे, सदस्य
श्री कृष्णा रोकडे, सदस्य	डॉ. संहिता जोशी, सदस्य
श्रीमती. अंजली ढमाळ, सदस्य	डॉ. नेहा आगाशे, सदस्य
श्री शिवाजी कराळे, सदस्य	श्रीमती. वर्षारानी भोपळे
डॉ. राजेश पावडे, सदस्य	(अभ्यासक्रम समन्वयक)
श्री बाळू भोसले, सदस्य	श्रीमती, सदस्य सचिव
डॉ. सुचित्रा घोगरे-काटकर, सदस्य	

गाभा समिति सदस्य

डॉ. महेश्वर कळलावे	श्री प्रशांत दिवेकर
श्री मोहन शेते	श्रीमती प्रतिमा गुप्ते

लेखक

डॉ. प्रिया गोहाड
डॉ. परिमल सुधाकर
प्रा. शिवाजी मोटेगावकर

समीक्षक

डॉ. मंजिरी भालेराव	एंड. जयश्री आव्हाड
इतिहास	(विधीतज्ज्ञ)
(गुणवत्ता परीक्षक)	
डॉ. संज्योत आपटे	डॉ. शर्मिष्ठा ओक
नागरिकशास्त्र	(CWSN तज्ज्ञ)
(गुणवत्ता परीक्षक)	

संयोजन

श्रीमती वर्षा सरोदे
(प्र. विशेषाधिकारी)

इतिहास व नागरिकशास्त्र, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.

हिंदी भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी (वि.का.)

हिंदी भाषांतर विषय तज्ञ

प्रा. शशि निघोजकर	प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला
सौ. संगीता सावंत	

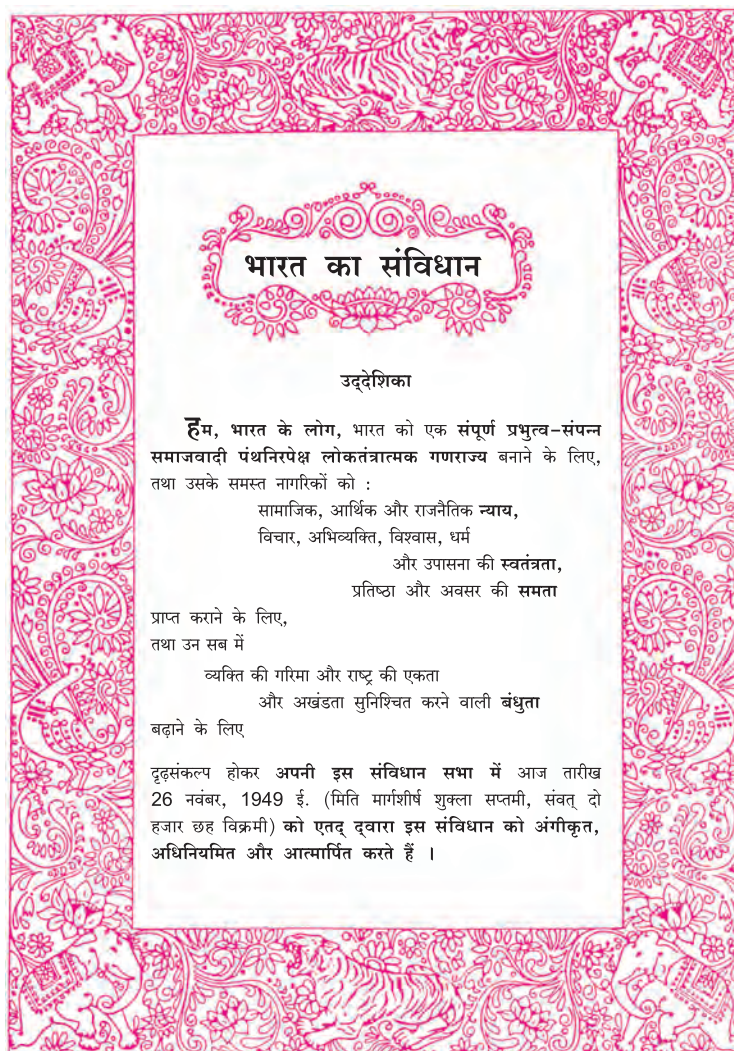
निर्मिती

श्रीमती मिताली शितप	श्री शशांक कणिकदळे
प्र. मुख्य निर्मिती अधिकारी	निर्मिती अधिकारी

प्रकाशक

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक

पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - २५



भारत का संविधान भाग ४ क मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
- (घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

राष्ट्रगान

जनगणमन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-
बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की
समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं
पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन
परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता
मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों
का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से
सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने
देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा
रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में
ही मेरा सुख निहित है ।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ॥धृ॥

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ॥१॥

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ॥२॥

प्रस्तावना

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०' के अनुसार महाराष्ट्र राज्य में 'शालेय शिक्षा पाठ्यक्रम २०२६' तैयार किया गया है। इस शासन मान्य पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन शालेय वर्ष २०२६-२७ से क्रमशः प्रारंभ हुआ है। इस पाठ्यक्रम में तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक इतिहास और नागरिक शास्त्र विषयों का समावेश 'हमारे आस-पास का संसार - भाग-२' में किया गया है। छठी कक्षा से अगले पाठ्यक्रम में इतिहास और नागरिकशास्त्र की स्वतंत्र पाठ्यपुस्तकें होंगी। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक भारतीय ज्ञान परंपरा पंचकोश, इक्कीसवीं शताब्दी के कौशल, बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोण, कृतियुक्त विद्यार्थी केंद्रित अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया जैसे व्यापक दृष्टिकोण को सम्मुख रखकर तैयार की गई है। प्राथमिक शिक्षा के इस चरण में विद्यार्थियों में कौन-सी अध्ययन निष्पत्तियाँ विकसित हों, उनके अनुसार पाठों में दी गई कृतियाँ, अध्ययन अनुभव और उपक्रम जैसे उद्देश्यों की नवीनतापूर्ण रचना की गई है। विद्यार्थियों में अध्ययन निष्पत्तियाँ दृढ़ करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य है। परिणामस्वरूप पाठ्यपुस्तक में इस लक्ष्य पर विशेष रूप से बल दिया गया है।

इतिहास के भाग में 'प्राचीन भारत का इतिहास' दिया गया है। इसके माध्यम से छात्रों में अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति व्यापक जागरूकता बढ़ाने का उद्देश्य है।

प्राचीन भारत का इतिहास मानव की उत्क्रांति, सांस्कृतिक विकास और समृद्ध परंपरा की साक्ष्य रहा है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के इतिहास विभाग में पुरातत्त्ववीय साधन, शिलालेख, सिक्के, साहित्यिक ग्रंथ, आप्रवासियों के यात्रावर्णन जैसे ऐतिहासिक साधनों के आधार पर प्राचीन भारत का इतिहास किस प्रकार उद्घाटित होता है, इसकी विस्तार में समीक्षा की गई है। इस पाठ्यपुस्तक में अश्मयुग की घुमंतू अवस्था से कृषि, स्थायी बस्तियाँ और नागरीकरण तक की यात्रा को बताया गया है। हड़प्पा संस्कृति, वैदिक कालखंड, महाजनपदों का उदय, मौर्य, शुंग, सातवाहन और गुप्त आदि कालखंडों का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास सरल और अध्ययनपूर्ण पद्धति से स्पष्ट किया गया है। प्राचीन समय का प्रशासन, अर्थव्यवस्था और समाज रचना के परस्पर संबंध पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, कला, स्थापत्य, साहित्य, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, दर्शन और धर्म द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को उद्घाटित किया गया है। प्राचीन भारत का प्रभाव मात्र भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित न रहकर भारत के बाहर भी किस प्रकार फैल गया, इसका भी विचार किया गया है। व्यापार, धर्म और कला आदि के माध्यम से भारत के चीन, दक्षिण-पूर्वी एशिया, मध्य एशिया और भूमध्य प्रदेशों के साथ स्थापित संबंध बताए गए हैं। पाठ्यपुस्तक को संवादात्मक बनाने का प्रयास करते समय विभिन्न चौखटों के माध्यम से विद्यार्थियों को अधिक कृतिशील बनाने का प्रयत्न भी किया गया है। विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना, भूतकाल का आकलन करने की क्षमता में वृद्धि करना और भारत की समृद्ध विरासत का बोध कराना प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का मूल उद्देश्य है।

नागरिक शास्त्र के खंड में 'स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था' के बारे में जानकारी प्राप्त करते समय विकास योजनाओं में स्थानीय लोगों का सहभाग और महिलाओं की सहभागिता द्वारा जो परिवर्तन आए हैं, उनका उद्देश्यपूर्वक उल्लेख किया गया है। हमारे देश का प्रशासन संविधान, कानून और अधिनियमों के अनुसार चलाया जाता है, इसे विद्यार्थियों को सरल भाषा में बताया गया है। पाठों में चौखटों के अंतर्गत दी गई जानकारी के कारण विद्यार्थियों का अध्ययन अधिक परिणामकारक हो सकेगा। शिक्षकों के लिए पृथक रूप में सूचनाएँ दी गई हैं। अध्यापन अधिकाधिक कृतिप्रधान बने; इसके लिए उपक्रम दिए गए हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सहभागी होने के लिए नागरिकों का सुज्ञान होना आवश्यक है और इसके लिए इस पुस्तक की पाठ्यसामग्री महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

पाठ्यपुस्तक अधिकाधिक निर्दोष और स्तरीय बने, इसके लिए महाराष्ट्र के सभी भागों के चुनिंदा शिक्षकों तथा कतिपय शिक्षातज्ञों और विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का समीक्षण कराया गया है। प्राप्त सूचनाओं और अभिप्रायों का सावधानीपूर्वक विचार कर इस पुस्तक को अंतिम रूप दिया गया है। मंडल की इतिहास विषय समिति और नागरिक शास्त्र समिति, लेखक और चित्रकार ने इस पाठ्यपुस्तक को अत्यंत आस्थापूर्वक तैयार किया है। इन सभी को मंडल हृदय से धन्यवाद देता है।

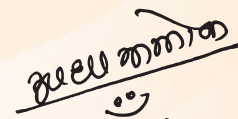
प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थी, पालक, शिक्षक स्वागत करेंगे, इसी आशा के साथ

इतिहास और नागरिक शास्त्र के आनंददायी अध्ययन के लिए शुभकामनाएँ!

पुणे

दिनांक : १ मई २०२६

भारतीय सौर दिनांक : वैशाख ११, शके १९४८, महाराष्ट्र दिन


(अनुराधा ओक)

संचालक

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

पाठ पर आधारित अध्ययन निष्पत्ति

पाठ्यक्रम के उद्देश्य: CG-1 – मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित स्रोतों का आकलन करना और अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करना।			
अ. क्र.	अध्ययन क्षमता	अध्ययन निष्पत्ति	पृष्ठ क्रमांक
१	इतिहास के स्रोत (साधन) C – १.१ मानव जीवन के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं को समझने के लिए जानकारी के अनेक स्रोत (प्राथमिक, द्वितीयक) एकत्रित करता है और उनके बीच संबंध स्थापित करता है। C – १.२ मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जानकारी को सामग्री, सारिणियों, आकृतियों, मानचित्रों या अन्य स्वरूपों में प्रस्तुत और विश्लेषण करता है।	- प्राचीन समय के मानव जीवन के विविध पहलुओं को समझने के लिए इतिहास के स्रोत स्पष्ट कर उनके द्वारा विविध जानकारी एकत्रित करता है और उनके बीच संबंध स्पष्ट करता है। अ) प्राचीन इतिहास के प्राथमिक स्रोत बताता है। ब) इतिहास के द्वितीयक स्रोत बताता है। क) इतिहास के भौतिक स्रोतों के नाम बताकर उनकी जानकारी को समझता है। ड) इतिहास के लिखित स्रोत पहचानकर मानव जीवन के विविध पहलुओं को समझता है। इ) इतिहास के मौखिक स्रोत पहचानकर उनकी जानकारी समझता है। फ) इतिहास के अध्ययन के विविध (भौतिक/लिखित/मौखिक) स्रोतों का वर्गीकरण करता है। - महाराष्ट्र के विविध उत्खनन स्थान, विरासत स्थान, वस्तुसंग्रहालयों के नाम बताकर महाराष्ट्र के मानचित्र में उन्हें दर्शाता है और उनकी जानकारी बताता है। उनके संरक्षण और संवर्धन का महत्व समझ लेता है और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ संबंध स्थापित करता है। अ) महाराष्ट्र के विविध उत्खनन स्थान, विरासत स्थान बताकर महाराष्ट्र के मानचित्र में दर्शाता है। ब) महाराष्ट्र के विभिन्न वस्तु संग्रहालय की सैर करता है और जानकारी लिखता है। - पाठ्यसामग्री, सारिणियाँ, आकृतियाँ, मानचित्रों का निरीक्षण कर प्राचीन समय के मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जानकारी का एकत्रीकरण और वर्गीकरण करता है। अ) मानव जीवन के पहलुओं से संबंधित पाठ्यसामग्री की जानकारी को एकत्रित कर वर्गीकरण द्वारा उसे समझता है। ब) मानव जीवन के पहलुओं से संबंधित जानकारी आकृतियों की सहायता से एकत्रित कर वर्गीकरण द्वारा समझता है। क) प्राकृतिक और ऐतिहासिक मानचित्र का निरीक्षण कर मानव जीवन से संबंधित ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान मानचित्र में दर्शाता है और उसके आधार पर जानकारी एकत्रित कर वर्गीकरण के आधार पर समझता है। ड) मानव जीवन के पहलुओं से संबंधित जानकारी सारिणी की सहायता से एकत्रित कर वर्गीकरण द्वारा समझता है।	१, २, ३, ४, ५, ६, ७ २, ३, ४, ५, ६, ७ २, ३, ४, ५, ६, ७ २, ३, ४, ५, ६, ७ २, ३, ४, ५, ६, ७ २, ४, ५, ६, ७ २, ३, ४, ५, ६, ७ ५, ६, ७, १३, १४, १५ १३, १४, १५ १३, १४ ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५ ८, ९, १०, १२, १३, १४, १५ ८, १०, १४ ९, १४, १५ ८, १०, १३, १४, १५
पाठ्यक्रम ध्येय : CG – १ मानव जीवन के विविध पहलुओं से संबंधित स्रोतों का आकलन करना और अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करना। CG – २ मानव संस्कृति में हुई निरंतरता और परिवर्तनों की प्रक्रियाओं की खोज कुछ विशिष्ट उदाहरणों और उनके संदर्भों तथा कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की सहायता से करना।			
२	प्रागैतिहासिक कालखंड C- १.१ मानव जीवन के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं को समझने के लिए जानकारी के अनेक स्रोत (प्राथमिक, द्वितीयक) एकत्रित करता है और उनके बीच संबंध स्थापित करता है। C- २.१ भूतकाल में आए परिवर्तन, उनका समाज पर दिखाई देनेवाले स्पष्ट परिणामों का विश्लेषण करता है।	- महाराष्ट्र के विभिन्न उत्खनन स्थानों, विरासत स्थानों, वस्तु संग्रहालयों के नाम बताकर उन्हें महाराष्ट्र के मानचित्र में दर्शाकर उनकी जानकारी बताता है। उनके संरक्षण और संवर्धन का महत्व समझता है और मानव जीवन के विविध पहलुओं के साथ उनका सहसंबंध स्थापित करता है। क) महाराष्ट्र के विरासत स्थान मानचित्र में दर्शाकर जानकारी बताता है और उनके संरक्षण और संवर्धन का महत्व बताता है। - प्राचीन भारत की सांस्कृतिक यात्रा पर हुए विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं के परिणामों को स्पष्ट करता है। अ) प्राचीन भारत की सांस्कृतिक यात्रा पर हुए विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं के परिणामों को स्पष्ट करता है। ब) प्रागैतिहासिक कालखंड की संकल्पना को समझकर प्रागैतिहासिक कालखंड और ऐतिहासिक कालखंड, इन दोनों कालखंडों के मानव संस्कृति की यात्रा, परिवर्तन की जानकारी बताता है। - अश्म युग और ताम्रअश्म युग का अर्थ और जानकारी बताकर तत्कालीन मानव जीवन में आए बदलावों का समाज पर हुए परिणामों को स्पष्ट करता है। अ) अश्म युग का अर्थ बताकर मानचित्र में महाराष्ट्र के अश्मयुगीन स्थानों को दर्शाता है। ब) पुराश्म युग, मध्यश्म युग और नवाश्म युग की जानकारी बताकर तुलना करता है। क) पुराश्म युग, मध्यश्म युग और नवाश्म युग के मानव जीवन में आए परिवर्तनों को बताता है। ड) ताम्रअश्म युग का अर्थ स्पष्ट करता है। इ) ताम्रअश्मयुगीन महाराष्ट्र के सावलदा, जोर्वे, इनामगाँव, दायमाबाद आदि स्थानों को मानचित्र में दर्शाकर उनका महत्व बताता है। फ) ताम्रअश्म युग की विशेषताएँ बताता है। - मानव समाज के विकास के विभिन्न चरण समझकर मानव बस्ती, सभ्यता, संस्कृति आदि के क्रम में होने वाले कालानुरूप विविध परिवर्तनों का मानव समाज पर हुए परिणाम का विश्लेषण करता है।	१३, १४, १५ ६, १५ १०, ११, १२, १३, १४, १५ ९, १०, १६, १७, १८ १०, ११, १२, १३, १४ १०, ११, १३, १४, १५ १०, ११, १५ ११, १२, १३, १४, १५ ११, १२, १३, १४, १५ १३, १४, १५ १३, १४, १५ १३, १४, १५ ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५

पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – २ मानव संस्कृति में आई निरंतरता और बदलावों की प्रक्रिया की समीक्षा को कुछ विशिष्ट उदाहरणों और उनके संदर्भों तथा कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की सहायता से खोजेगा।		
३	हड़प्पा संस्कृति C- २.१ भूतकाल में आए प्रमुख परिवर्तन, उनका समाज पर जो प्रभाव पड़ा है; उनका विश्लेषण करता है।	- प्राचीन समय की हड़प्पा संस्कृति के उत्खनन स्थानों को मानचित्र में दर्शाकर जनजीवन की विशेषताओं, परिवर्तनों को स्पष्ट करता है और हड़प्पा संस्कृति के ह्रास के कारण स्पष्ट करता है। अ) हड़प्पा संस्कृति का कालखंड बताता है। ब) हड़प्पा संस्कृति के स्थान और समकालीन वैश्विक संस्कृति के स्थान मानचित्र में दर्शाता है। क) हड़प्पा संस्कृति की नगर रचना की विशेषताएँ बताकर जनजीवन में आए परिवर्तन को स्पष्ट करता है। ड) हड़प्पा संस्कृति के ह्रास के कारणों को स्पष्ट करता है।
४	वैदिक संस्कृति C- २.१ भूतकाल में हुए प्रमुख बदलाव, समाज पर उसके स्पष्ट परिणामों का विश्लेषण करता है।	- वैदिक संस्कृति के वाङ्मयीन, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में आए बदलावों को स्पष्ट करता है। अ) वैदिक वाङ्मय के नाम बताकर उनका भारतीय संस्कृति में जो महत्त्व है, उसे स्पष्ट करता है। ब) वैदिक समय के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन और आश्रम व्यवस्था आदि की जानकारी बताता है।
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – ७ अ) भारत का समृद्ध भूतकाल और वर्तमान काल और उनसे संबंधित गौरवशाली सांस्कृतिक विविधता की एकता, बहुलवाद, विरासत, परंपराएँ, साहित्य, कलाएँ, स्थापत्य शास्त्र, दर्शन, वैद्यक, शास्त्र, विज्ञान और मानव समाज को अन्य योगदानों के साथ समझना। ब) यद्यपि भौगोलिक विविधता है फिर भी एकात्मता के लिए अन्य आवश्यक घटकों द्वारा भारतीय होने का अर्थ और महत्त्व की अनुभूति होना।		
५	विविध धर्मों की सीख C- ७.३ भारतीय परंपरा के अनुसार समुदायों और सामाजिक समूहों का समावेशन और उसका सांस्कृतिक घटकों द्वारा होने वाले वैश्विक प्रभावों को जानता है।	- प्राचीन समय के विविध समुदाय, उनकी वेशभूषा, रहन-सहन, जीवन शैली, आचरण, संस्कृति, परंपरा, शिक्षा और व्यवसाय का परिचय प्राप्त करता है। अ) प्राचीन भारतीय परंपरा का विश्व के विविध समुदायों पर होने वाले प्रभाव को बताता है। ब) प्राचीन भारत के विभिन्न धार्मिक विचार धारा और उनके विचार स्पष्ट करता है।
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – ४ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाओं का समाज पर होने वाला परिणाम, व्यक्ति और सामूहिक संस्था समाज को किस प्रकार आकार देते हैं, इसे समझना।		
६	जनपद और महाजनपद C- ४.१ परिसर अथवा प्रदेश की विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के कार्यों के बारे में जानकारी एकत्रित करता है, उस जानकारी का प्रबंधन करता है और उनका अर्थ स्थापित करता है। मानव समाज के लिए उसका महत्त्व पहचानता है।	- वैदिकोत्तर कालखंड की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं के कार्य और जनपदों की जानकारी एकत्रित करता है और उनका मानव समाज के लिए महत्त्व बताता है। अ) वैदिकोत्तर कालखंड की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं की जानकारी को एकत्रित कर तत्कालीन मानव जीवन का महत्त्व बताता है। ब) प्राचीन भारत के जनपद बताकर उनकी विशेषताएँ और महत्त्व उदाहरण सहित बताता है। क) प्राचीन भारत के विविध महाजनपदों द्वारा दिए गए योगदान को बताकर उनकी तुलना करता है।
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – ४ सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाओं के कार्यों का समाज पर होने वाला परिणाम, व्यक्ति और सामूहिक संस्था समाज को किस प्रकार आकार देते हैं, यह समझना।		
७	मौर्यकालीन भारत C- ४.२ सामान्यतः व्यक्ति समूह/समुदाय समाज पर सामाजिक/सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करता है।	- प्राचीन समय के विविध साम्राज्य, व्यक्ति समाज का तत्कालीन समाज पर जो प्रभाव हुआ है, उसका मूल्यांकन करता है। अ) मौर्य साम्राज्य की स्थापना और विस्तार में चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट बिंदुसार के योगदान को स्पष्ट करता है। ब) सम्राट अशोक द्वारा किए गए कलिंग पर आक्रमण और परिणाम बताकर उसका विश्लेषण करता है। क) सम्राट अशोक का कलिंग युद्ध, धर्मप्रसार और जनकल्याण के कार्यों के बारे में योगदान बताता है। ड) सम्राट अशोक के धर्मप्रसार कार्य का विश्लेषण करता है। इ) सम्राट अशोक जनकल्याण कार्य का महत्त्व बताता है। फ) मौर्यकालीन राज्य व्यवस्था और जनजीवन की जानकारी बताता है। ग) मौर्यकालीन कला, स्थापत्य और साहित्य की जानकारी बताकर भारत के राष्ट्रीय प्रतीक और मौर्यकालीन स्थापत्य कला के बीच के सहसंबंध को स्पष्ट करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – ३ विविध सामाजिक, ऐतिहासिक घटनाओं अथवा प्रसंगों के कारणों और परिणामों के बीच संबंध खोजना और उन्हें मानव जीवन के समस्त परिणामों से जोड़ना। CG – ७ अ) भारत के समृद्ध भूतकाल और वर्तमानकाल के गौरवशाली सांस्कृतिक विविधता में एकता, बहुलवाद, विरासत, परंपरा, साहित्य, कला, स्थापत्य शास्त्र, दर्शन, वैद्यक शास्त्र, विज्ञान और मानव समाज को अन्य योगदान सहित समझना। (ब) भौगोलिक विविधता होने पर भी एकात्मता के लिए अन्य आवश्यक घटकों द्वारा भारतीय होने का अर्थ और महत्व की अनुभूति होना।			
८	प्राचीन भारत और महाराष्ट्र के राज्य और राजवंश C-७.४ प्राचीन भारत और महाराष्ट्र के राज्य और राजवंशों से परिचय प्राप्त करता है। C-३.२ सामाजिक समूह समुदायों में उनके प्रदेश और संसार के अन्य भागों में सामंजस्य और संघर्ष के कारण और उनका मानव समाज पर होने वाले परिणामों के प्रभाव को पहचानता है।	• प्राचीन भारत और महाराष्ट्र के राज्य और राजवंशों (शुंग, कण्व, सातवाहन, शक, कुषाण, गुप्त, वर्धन आदि) का योगदान स्पष्ट करता है। अ) शुंग साम्राज्य का विस्तार बताकर उसके ग्रीक राज्य विरोधी नीति का विश्लेषण करता है। ब) कण्व साम्राज्य के विस्तार को स्पष्ट करता है। क) प्राचीन महाराष्ट्र और भारत के सातवाहन राजवंश के उल्लेखनीय योगदान को बताता है। ड) भारतीय मुद्रा निर्माण में इंडो-ग्रीकों के नवीनतापूर्ण योगदान को स्पष्ट करता है। इ) शकों के साम्राज्य विस्तार को स्पष्ट करता है। फ) कुषाणों का साम्राज्य विस्तार, प्रशासन व्यवस्था, उनपर भारतीय संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट करता है। ग) गुप्तकालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन का परिचय स्पष्ट करता है। ह) सम्राट हर्षवर्धन का साम्राज्य विस्तार में योगदान स्पष्ट करता है। ड) राज्यसत्ता और सांस्कृतिक क्षेत्र में कुषाणों का योगदान स्पष्ट करता है। इ) विदेशी आक्रमणों के कारण भारतीयों की युद्धनीति, आहार, रीति-परंपरा में आए बदलाव बताकर परिणाम स्पष्ट करता है।	५७,५८,५९,६०, ६१, ६२,६३,६४ ५७,६३,६४ ५८,६३,६४ ५९,६३,६४ ५८,६३,६४ ५९,६३,६४ ६०,६३,६४ ६१,६३,६४ ६२,६३,६४ ६०,६१,६४ ५७,५८,६०
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – ७ अ) भारत का समृद्ध भूतकाल और वर्तमानकाल के गौरवशाली सांस्कृतिक विविधता में एकता, बहुवाद, विरासत, परंपरा, साहित्य, कला, स्थापत्य शास्त्र, दर्शन, वैद्यक शास्त्र, विज्ञान और मानव समाज को अन्य योगदान सहित जानना। ब) भौगोलिक विविधता होने पर एकात्मता के लिए अन्य आवश्यक घटकों द्वारा भारतीय होने का अर्थ और महत्व की अनुभूति होना।			
९	प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत C-७.१ भारत के समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक घटक, भाषा, कला, सैद्धांतिक कल्पना, मूल्य, वेशभूषा, आहार, परंपरा, त्योहार, व्यापार, वाणिज्य, आयुर्वेद और योग, स्वास्थ्य-विषयक आदतों में समानता पहचानकर विविधता में एकता स्पष्ट करता है। C-७.३ भारतीय परंपरा के अनुसार समुदायों और सामाजिक समूहों का समावेशन और उसका सांस्कृतिक घटकों द्वारा होने वाला वैश्विक प्रभाव जानता है।	१) प्राचीन भारतीय संस्कृति के समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक घटकों को समझकर उनके बीच की समानता पहचानकर विविधता में एकता को स्पष्ट करता है। अ) प्राचीन भारत के सांस्कृतिक जीवन में पाई जाने वाली भाषा, कला, परंपरा, वेशभूषा, आहार आदि घटकों की जानकारी सोदाहरण स्पष्ट करता है। ब) प्राचीन भारत के आर्थिक जीवन में समाविष्ट व्यापार व वाणिज्य की जानकारी सोदाहरण स्पष्ट करता है। क) प्राचीन भारत के वैद्यक शास्त्र, ज्ञान-शाखा में अंतर्भूत आयुर्वेद, योग और स्वास्थ्य विषयक आदतों की जानकारी वर्गीकरणसह स्पष्ट करता है। ड) प्राचीन भारत के विविध प्रदेशों और महाराष्ट्र के सांस्कृतिक घटकों के बीच साम्य और भेद स्पष्ट कर विविधता में एकता को सोदाहरण स्पष्ट करता है। १) प्राचीन कालखंड के विविध समुदाय उनकी वेशभूषा, रहन-सहन, जीवनशैली, आचरण, संस्कृति, परंपरा, शिक्षा और व्यवसाय से परिचित होता है। क) भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय की जानकारी इकट्ठा कर उसे समझता है। ड) प्राचीन भारतीय व्यवसाय अत्यंत समृद्ध और उन्नत था, इसका कारणसहित विवेचन करता है।	६९,७० ६५,६६,६७,७२,७३ ६९ ६९,७०,७२ ७०,७१ ७०,७१,७२,७३ ७१,७२,७३ ६९
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – २ मानव संस्कृति में चलने वाली निरंतरता और बदलावों की प्रक्रिया की समीक्षा को कुछ विशिष्ट उदाहरणों और उनके संबंधों तथा कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की सहायता से खोजना CG – ३ विविध सामाजिक, ऐतिहासिक अथवा प्रसंगों के कारणों और परिणामों के बीच संबंध खोजना और उन्हें मानव जीवन के समस्त परिणामों से जोड़ना।			
१०	प्राचीन भारत और संसार C- २.२ मानव समाज के विशिष्ट रिश्ते-नाते, रीति-प्रथाएँ और कृति, समाज में बड़े परिवर्तन टिके रहते हैं, ऐसी विशिष्ट बातों के प्रसार घटकों को पहचानता है। C-३.२ सामाजिक समूह और समुदायों में, उनके प्रदेश में और संसार के अन्य भागों में सामंजस्य और संघर्ष के कारण और मानव समाज पर हुए उनके परिणामों को पहचानता है।	१) मानव जीवन के विशिष्ट रिश्ते-नाते, रीति-प्रथाएँ और कृति, समाज में होने वाले बड़े परिवर्तन टिके रहते हैं; यह बताकर पर्शियन और ग्रीक संस्कृति के समन्वय के घटक बताता है। अ) पर्शियन संस्कृति का भारत पर हुए अनुकूल और प्रतिकूल परिणाम बताता है। ब) ग्रीक संबंधों का भारत पर हुए अनुकूल और प्रतिकूल परिणाम बताता है। २) हमारे आस-पास के मानव जीवन में पाई जाने वाली विविधता को स्पष्ट कर अनेक संस्कृतियों का एक-दूसरे के साथ हुए संपर्क और विविध प्रदेशों का पारस्परिक सामंजस्य, संघर्ष समझकर उनका मानव जीवन पर हुए दूरगामी परिणामों को स्पष्ट करता है। अ) भारत और पड़ोसी देशों के बीच के परस्पर सहसंबंध को स्पष्ट करता है। ब) भारतीय उपमहाद्वीप और ईरान, ग्रीक के बीच के संबंध स्पष्ट कर पश्चिम एशियाई देशों के साम्राज्य विस्तार के कारण भारतीय उपमहाद्वीप पर हुए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यापार, संचार, प्रशासनिक, शैक्षिक परिणामों को स्पष्ट करता है। क) सिकंदर द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के कारण सामाजिक और राजनीतिक परिस्थिति में आए हुए बदलावों को बताता है।	७४,७५ ७४,७५,७६ ७६,७७ ७८,८०,८१ ७८,७९,८१ ८०,८१ ७६,७७,८१

शिक्षकों द्वारा पुस्तक को उपयोग में लाते समय

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य राज्य के सभी विद्यार्थियों की अध्ययन निष्पत्ति में सुधार लाना है। अतः अध्यापन के समय पाठ्यपुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठों में समाविष्ट अध्ययन निष्पत्तियों को सम्मुख रखना आवश्यक है।
- प्रत्येक पाठ की अध्यापन प्रक्रिया का नियोजन करते समय अध्ययन निष्पत्तियों के अनुसार पाठ के अध्ययन अनुभवों और कृतियों की योजना करें।
- बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोण से पाठों में विभिन्न अध्ययन अनुभूतियाँ सुझाई गई हैं। इसका समग्र रूप में विचार करें। विविध विषयों की सहायता से एकात्मिक पद्धति द्वारा सहजता से अध्ययन-अध्यापन होगा, इसका बोध कर लें।
- प्राचीन भारत का इतिहास विद्यार्थियों को पढ़ाने का प्रयोजन विद्यार्थी हमारी संस्कृति और परंपराओं की सर्वांगीण जानकारी से परिचित हों और उसके द्वारा उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय एकात्मता का बोध वृद्धिगंत हो। प्राचीन भारत का इतिहास पढ़ाते समय शिक्षक उपरोक्त प्रयोजन को ध्यान में रखकर अध्ययन-अध्यापन का नियोजन करें।
- अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने और प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन से इसे विकसित करने के लिए, विभिन्न प्रकार की प्राचीन वस्तुओं, सिक्कों और प्राचीन वास्तुकला के उदाहरणों को खोजने के लिए विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देना चाहिए। उन्हें पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त जानकारी एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विविध कृतियों के माध्यम से विषय के प्रति बोध और सूझ-बूझ में वृद्धि की जा सकेगी।
- पाठ्यसामग्री का बोझ न बढ़े, इसके लिए पाठ्यपुस्तक में प्रत्येक मुद्दे की विस्तारपूर्वक जानकारी उदाहरणों और स्पष्टीकरण सहित देना संभव नहीं होता है। अध्ययन के पूर्व विभिन्न संदर्भों द्वारा विद्यार्थियों के लिए पाठ्यसामग्री अधिक सरल होने की दृष्टि से अध्यापकों ने आवश्यक जानकारी संबंधित स्थानों पर देना आवश्यक है।
- हड़प्पा संस्कृति के समय से भारत के दूरस्थ देशों के साथ प्रस्थापित व्यापारिक संबंध प्राचीन भारत की समृद्धि की जड़ में पाए जाते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का स्वरूप संक्षेप में समझाकर बताएँ। इस प्रकार का व्यापार विश्वबंधुत्व और अंतरराष्ट्रीय सामंजस्य के बिना संभव नहीं होता है, यह विद्यार्थियों के ध्यान में लाएँ।
- दक्षिण-पूर्व एशिया के इंडोनेशिया, कंबोडिया देशों में रामायण और महाभारत महाकाव्य को नृत्य नाट्य के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा अभी तक चली आ रही है। वहाँ के प्राचीन शिल्पों में भी इन महाकाव्यों की कथाओं का समावेश पाया जाता है। इस संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त कर उसे कक्षा में प्रस्तुत की जा सकेगी, इसके लिए विद्यार्थियों को प्रकल्प दें।
- नागरिक शास्त्र विषय का प्रारंभ करने से पूर्व हमारे देश की शासन संरचना स्पष्ट करें। संघ शासन, संघ राज्य शासन, और स्थानीय स्वायत्त शासन का स्वरूप संक्षेप में स्पष्ट करें।
- भारत की खाद्य विविधता दर्शाने के लिए 'हमारा सामाजिक जीवन' पाठ में भारत के स्थूल मानचित्र का उपयोग किया गया है।
- स्थानीय संस्था के प्रशासन के विषय में राज्य सरकार के स्वतंत्र कानून हैं। इन कानूनों की विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को देना अपेक्षित नहीं है परंतु हमारे देश का प्रशासन संविधान, कानून और अधिनियमों के अनुसार चलता है, यह उन्हें अवश्य बताएँ। कानून का प्रशासन होने के लाभ उन्हें विभिन्न उदाहरणों द्वारा दर्शाएँ।
- ७३वें और ७४वें संविधान संशोधन के कारण स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं का सबलीकरण हुआ है। इस बिंदु को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं में आए हुए परिवर्तनों के बारे में बताएँ।
- स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं में महिलाओं की सहभागिता और उनकी सहभागिता के कारण आए परिवर्तनों को अवश्य बताएँ।
- अंग्रेजों के शासनकाल में स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था को 'स्थानीय स्वराज्य संस्था' कहा जाता था। स्वतंत्रता के पश्चात सभी स्तरों पर स्वराज्य (हमारा राज्य) होने के कारण अब उसे 'स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था' कहा जाता है।
- विशेष आवश्यकतावाले विद्यार्थियों के बारे में शिक्षक अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया करते समय संकेत भाषा (Sign Language ) तथा पूरक अध्यापन शास्त्रीय पद्धतियों का उपयोग करें। विशेष आवश्यकतावाले विद्यार्थियों को जो पद्धति संभव होगी, उस पद्धति द्वारा व्यक्त होने का अवसर दें।

विषय सूची

अ.क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१	इतिहास के साधन	१
२	प्रागैतिहासिक कालखंड	८
३	हड़प्पा संस्कृति	१६
४	वैदिक संस्कृति	२६
५	विविध धर्मों की सीख	३३
६	जनपद और महाजनपद	४३
७	मौर्यकालीन भारत	४९
८	प्राचीन भारत और महाराष्ट्र में राज्य और राजवंश	५७
९	प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत	६५
१०	प्राचीन भारत और संसार	७४



इतिहास के साधन



१.१ इतिहास का एकत्रीकरण

१.२ भौतिक साधन

१.३ लिखित साधन

१.४ मौखिक साधन

१.५ प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत

१.६ महाराष्ट्र में वस्तु संग्रहालय और विरासत धरोहरें

हमारे देश का इतिहास अति प्राचीन है परंतु उसका हमें किस प्रकार ज्ञान हुआ? हमारे पूर्वज कैसे रहते थे? उनके जीवन में घटित घटनाएँ, उनकी संस्कृति, समाज और राज्य व्यवस्था का अध्ययन कैसे किया जाता है?

क्या तुम्हारे मन में भी ऐसे प्रश्न उत्पन्न हुए हैं? तुम्हारे मन में उत्पन्न प्रश्नों को लिखो।



कल्पना करो

तुम किसी किले में घूम रहे हो। अचानक तुम्हें जमीन पर गिरा हुआ सिक्का मिल गया अथवा किसी दीवार पर उकेरा हुआ लेख दिखाई दिया, किसी पेड़ की जड़ में गड़ा हुआ खप्पर का टुकड़ा दिखा, तो निश्चित ही यह प्रश्न तुम्हारे मन में उभरेगा कि यह सब किस समय का है? इसका क्या अर्थ है? ये वस्तुएँ हमें भूतकाल की कौन-सी कहानी बताती होंगी?

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हम इतिहास के विविध साधनों का अध्ययन करते हैं।

यही वह जादुई कुँजी है जिसके द्वारा हमें हजारों वर्षों पूर्व के लोगों के जीवन में झाँककर देखना संभव होता है।

पाँचवीं कक्षा में तुम्हें इस विषय में जानकारी प्राप्त हुई है। इतिहास में हम जो कुछ पढ़ते अथवा सीखते हैं, वह इतिहास के प्रमाणों के आधार पर लिखा जाता है। जिन बातों/तथ्यों द्वारा इतिहास के प्रमाण प्राप्त होते हैं; वे बातें/तथ्य इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के स्रोत होते हैं।

१.१ इतिहास का एकत्रीकरण

इतिहास के एकत्रीकरण का अर्थ किसी पहेली के टुकड़े-टुकड़ों को जोड़ने जैसा है। भूतकाल के सिक्के, चित्र, मिट्टी के बर्तन, शिलालेख जैसी असंख्य वस्तुएँ मानो उस पहेली के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। जब इतिहासकार इन टुकड़ों को व्यवस्थित रूप से जोड़ते हैं, तब भूतकाल का एक सुंदर चित्र तैयार हो जाता है। अनुसंधान के स्रोतों द्वारा हम भूतकाल की घटनाओं, विचारों, संस्कृति और जीवनशैली को समझ सकते हैं। इन स्रोतों का विभाजन प्राथमिक साधन, द्वितीयक साधन और मौखिक साधन के रूप में किया जाता है।

हमारे पूर्वजों द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुएँ, उत्कीर्ण लेख तथा उस समय की रीति-प्रथाएँ, परंपराएँ, लोककला, लोकसाहित्य, ऐतिहासिक दस्तावेज जैसे विविध साधनों के माध्यम से हम अपने इतिहास की खोज कर सकते हैं। इन सभी को 'इतिहास के साधन' कहते हैं।

प्राथमिक साधन

ये साधन सीधे संबंधित कालखंड के होते हैं।

जैसे : शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के, मौलिक दस्तावेज (भूजपत्र, अनुबंध पत्र, पत्र आदि), पुरानी वस्तुएँ, शस्त्र, प्राचीन वास्तुएँ, मंदिर आदि।

महत्त्व: इतिहास लिखते समय ये साधन उस कालखंड के यथावत तथ्यों की जानकारी देते हैं।

द्वितीयक साधन

इन साधनों में प्राथमिक साधनों का अध्ययन करके जानकारी दी जाती है।

जैसे : इतिहास विषय से संबंधित पुस्तकें, अध्ययन से संबंधित लेख, वृत्तचित्र (जानकारीपट) अनुसंधान पर निबंध, विशेषज्ञों के व्याख्यान, विश्वकोश आदि।

महत्त्व: इन साधनों द्वारा इतिहास की सुसंगतिपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। शोधकर्ता विश्लेषण कर ये साधन तैयार करते हैं।

मौखिक साधन

इन साधनों में भूतकाल की घटनाएँ, परंपराएँ, संस्कृति अथवा अनुभव मौखिक स्वरूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित किए जाते हैं।

जैसे : लोककथाएँ, कल्पित कथाएँ, लोकगीत, ओवी (सबद्ध पद), भारुड, लावणी, पोवाडा (शौर्यगान), लोकनाट्य, कीर्तन, तमाशा आदि। शौर्य कहानी और वीरगाथाएँ, ग्रामीणों और वृद्धों के संस्मरण और अनुभव, यात्रावर्णन, व्यापारियों अथवा सैनिकों द्वारा बताई गई कहानियाँ।

महत्त्व: जिस कालखंड के प्रमाण उपलब्ध नहीं होते हैं, उस कालखंड का जनजीवन, परंपराएँ और संस्कृति को समझने के लिए मौखिक साधनों का उपयोग होता है।

१.२ भौतिक साधन



करके देखो

तुम्हारे घर-परिवार की पुरानी वस्तुएँ तुम्हारे घर-परिवार का इतिहास बताते हैं। जैसे- अलबम, कोई पुराना बर्तन, कोई चित्र अथवा अलमारी में रखी दादी की साड़ी को एक संदूक में संभालकर रखो। उसे हम 'विरासत की संदूक' कहेंगे। ये वस्तुएँ किसका इतिहास बताते हैं; यह कक्षा में बताओ।

ये वस्तुएँ इतिहास के भौतिक साधन हैं। जिन साधनों को हम अपनी आँखों से देख सकते हैं और हाथ से स्पर्श कर सकते हैं, उन साधनों का उपयोग इतिहास

का अध्ययन करने में बहुत महत्वपूर्ण होता है। भौतिक साधन उस कालखंड के जनजीवन, संस्कृति, परंपरा, खेल, कला और विज्ञान की जानकारी देते हैं। अतः इतिहास के अनुसंधान में ये साधन प्राथमिक साधन के रूप में जाने जाते हैं।

प्राचीन समय में मनुष्य द्वारा उपयोग में लाई गई असंख्य वस्तुएँ आज भी प्राप्त होती हैं। उन वस्तुओं में शिलालेख, ताम्रपत्र, पुराने सिक्के, औजार, बर्तन, पत्थर अथवा धातुओं की मूर्तियाँ, पुराने भवन-इमारतें, गढ़-किले, मंदिर, जलाशय आदि का समावेश होता है। ये सभी 'भौतिक साधन' हैं। आज भी ये साधन पुरातत्त्व संग्रहालय और ऐतिहासिक स्थानों पर देखने को मिलते हैं।

खनन में पाए गए खप्पर के टुकड़े, उसके लिए उपयोग में लाई गई मिट्टी, उसपर किया हुआ लेप और रंगीन



भौतिक साधन

नक्काशी अथवा कलाकृति के आधार पर ये बर्तन किस कालखंड के होंगे; वे किसलिए उपयोग में लाए जाते होंगे; इसे वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर समझा जाता है।

अनाज, फलों के बीज और प्राणियों की हड्डियों के अवशेषों द्वारा उस-उस कालखंड की भोजन पद्धति को ज्ञात कर सकते हैं। उकेरे हुए शिलालेख, तत्कालीन प्रशासन, धार्मिक और सामाजिक जीवन के विषय में जानकारी देते हैं। उस कालखंड के औजार और संरक्षक परकोटे, रजवाड़े, पुरातन वास्तुओं का अध्ययन करने से उस कालखंड की रक्षा व्यवस्था, युद्ध प्रणाली और वास्तुकला की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही, पुराने सिक्के अथवा मुहरों के आधार पर तत्कालीन अर्थव्यवस्था, शासकों के नाम, धार्मिक परंपराओं और कलाओं पर प्रकाश डाला जाता है। इसका अर्थ यह है कि उस कालखंड के मानव जीवन का इतिहास समझने के लिए भौतिक साधन महत्वपूर्ण होते हैं।

१.३ लिखित साधन

लिखित स्वरूप में जो साधन उपलब्ध हैं; उन्हें हम 'लिखित साधन' कहते हैं। इन लिखित साधनों द्वारा उस कालखंड की भाषा, लिपि, संस्कृति, राजनीतिक नीतियाँ, सामाजिक संरचना, धार्मिक और सामाजिक विचारधारा की जानकारी प्राप्त होती है।

अश्मयुग में अर्थात् प्रागैतिहासिक कालखंड में मनुष्य को लिखने की कला अवगत नहीं थी। उस कालखंड की जानकारी को हम भौतिक साधनों द्वारा मालूम करते हैं, परंतु जैसे-जैसे मनुष्य की आकलन क्षमता और भाषा विकसित होती गई; वैसे-वैसे मनुष्य ने अपने अनुभव और जानकारी को चित्रों और चिह्नों द्वारा व्यक्त करना आरंभ किया। यही लेखन कला का प्रारंभ था। कालांतर में लेखन प्रणाली विकसित होने के लिए दीर्घ कालावधि लगी।



क्या तुम जानते हो?

इतिहास लिखने के लिए जिस कालखंड के लिखित प्रमाण उपलब्ध होते हैं; उस कालखंड को हम 'ऐतिहासिक कालखंड' के रूप में जानते हैं। जिस कालखंड में लिपि का उद्गम और विकास नहीं हुआ था, उस कालखंड को 'प्रागैतिहासिक कालखंड' कहते हैं।

प्राचीन समय में व्यापारियों, शासकों और विद्वानों ने अपने अनुभवों, घटनाओं अथवा आदेशों का अंकन कर रखा है। हमें लिखित साधनों द्वारा उस कालखंड की लिपि, भाषा, लेखन शैली और लोगों के आचार-विचार, परंपराएँ और जीवन प्रणाली की जानकारी प्राप्त होती है। उस समय के अंकन/लेखन के आधार पर उस कालखंड की जानकारी प्राप्त होती है। इन साधनों के आधार पर इतिहासकार विश्लेषण करता है और उस-उस कालखंड का इतिहास लिखते हैं। विभिन्न संग्रहालयों, पुस्तकालयों और मंदिरों में प्राचीन समय के लिखित साधन देखने को मिलते हैं।



करके देखो

तुम अपने दादा जी-दादी जी अथवा परिवार के दूसरे बड़े-बुजुर्गों से बातचीत करो। उनके बचपन की यादें, उनके गाँव/शहर की कहानियाँ, तीज-त्योहार, उनके द्वारा अनुभव की गई किसी ऐतिहासिक घटना के बारे में समझो और इन बातों का अंकन अपनी अंकन कॉपी में करो। तभी तुम जान जाओगे कि इतिहास कितना जीवित और मनोरंजक है।

१.४ मौखिक साधन

मौखिक साधन अर्थात् लिखित स्वरूप में न रखकर जो जानकारी मौखिक रूप में बताई जाती है, उसे मौखिक साधन कहते हैं। यह जानकारी समाज की स्मृति में रक्षित /सहेजकर रखी जाती है। इस जानकारी में कल्पित कथाएँ, ओवियाँ, पोवाड़े (शौर्यगान), कहावतें और लोकगीतों का समावेश होता है। कई बार मौखिक स्वरूप में किसी समाज का इतिहास, जीवन शैली, सामाजिक घटनाएँ, तीज-त्योहार का वर्णन पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहेजकर रखी जाती है। कुछ कल्पित कथाएँ यद्यपि काल्पनिक होती हैं, फिर भी उन कथाओं में कोई-न-कोई सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ छुपा होता है। व्यक्ति और समूह की विचारधारा बनने में मौखिक परंपराओं का सहभाग रहता है। अतः इतिहास के अध्ययन में मौखिक साधनों का उपयोग करते समय इतिहासकार इन बातों की जाँच कर, तुलनात्मक पद्धति से विचार करते हैं और अन्य साधनों की सहायता से इतिहास लेखन के लिए उसका उपयोग करते हैं।

१.५ प्राचीन भारत के इतिहास के साधन

प्राचीन कालखंड अर्थात् अश्मयुग के कालखंड से लेकर ईस्वी सन आठवीं शताब्दी तक का कालखंड है। अश्मयुग का इतिहास पूर्णतः पुरातत्त्वीय उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए भौतिक साधनों पर आधारित है। उसके पश्चात के कालखंड के इतिहास को समझने-जानने के लिए लिखित साधनों का अत्यधिक उपयोग होता है।

भारतीय इतिहास के अति प्राचीन साधन वेद हैं। आरंभ में वेद लिखित स्वरूप में नहीं थे। प्राचीन भारतीयों ने उन्हें कंठस्थ करने की विधि विकसित कर ली थी। कालांतर में वेदों का लेखन किया गया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इन चार वेदों में देवताओं की स्तुति, यज्ञविधि और सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है। वेदों के पश्चात ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषदों की रचना हुई। इन्हीं ग्रंथों द्वारा प्राचीन भारतीय दर्शन की पहचान होती है। साथ ही; रामायण और महाभारत महाकाव्य भी प्राचीन भारतीय इतिहास के साधन हैं।



ढूँढो तो!

तमिल भाषा में लिखा 'संघम साहित्य' अति प्राचीन साहित्य है। इस विषय में जानकारी ढूँढकर उसे लिखो।

प्राचीन भारत में जैन और बौद्ध दर्शन के आधार पर विपुल मात्रा में लिखित साहित्य लिखा गया। 'तिपिटक' नाम से पहचाने जाने वाले बौद्ध ग्रंथों में गौतम बुद्ध की सीख, भिक्षुओं के नियम और सैद्धांतिक विचार-विनिमय का उल्लेख प्राप्त होता है। ये ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए हैं। जैन धर्म के ग्रंथों को 'आगम साहित्य' कहते हैं। इस साहित्य में वर्धमान महावीर की सीख और अहिंसा का वर्णन उपलब्ध है। ये ग्रंथ प्राकृत भाषा की 'अर्धमागधी' में लिखे गए हैं। इन धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ कुछ ग्रंथ प्रशासन, नीति-नियम, कानून और समाज व्यवस्था के संबंध में थे। लिखित जानकारी केवल ग्रंथों में ही नहीं होती है अपितु वह पत्थरों, ताम्रपटों और दीवारों पर भी उकेरी हुई पाई जाती है। सम्राट अशोक ने अनेक शिलालेख उकेरवाकर धर्मनीति और समाजनीति के विषय में अपने विचार प्रजा तक पहुँचाए। ये लेख ब्राह्मी लिपि में उकेरे गए हैं। उनमें कुछ लेख खरोष्ठी और अरेमाइक लिपि में उकेरे गए हैं। साथ ही; भूदान और राजस्व माफी से संबंधित आदेश ताम्रपटों पर उकेरकर रखे जाते थे। इन अंकनों द्वारा प्रशासन की जानकारी ज्ञात होती है।



करके देखो

तुम अपने तथा अपने मित्रों-सहेलियों तथा परिवार के सदस्यों के नाम निम्न सारिणी के आधार पर ब्राह्मी लिपि में लिखो।

५ ५ :: :: ६ ६ ७ ७ ८ ८ ९ ९ १० १०

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

+ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

प फ ब भ म य र ल व श

८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

ष स ह ळ क्ष ज्ञ

+ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

प्राचीन भारत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए विदेशी आप्रवासियों द्वारा लिखे गए यात्रा वर्णन भी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने यहाँ देखी हुई शिक्षा व्यवस्था, धार्मिक जीवन, जनजीवन आदि का विस्तार में वर्णन किया है। परिणामतः उस कालखंड में भारतीयों का जीवन कैसा था ? इसे हम समझते हैं।

१.६ महाराष्ट्र में वस्तु संग्रहालय और विरासत के स्थान

■ महाराष्ट्र के वस्तुसंग्रहालय

इतिहास से संबंधित वस्तु संग्रहालय में इतिहास के साधन संगृहीत और प्रदर्शित किए जाते हैं। महाराष्ट्र में अनेक प्रसिद्ध वस्तु संग्रहालय हैं। वहाँ हमें प्राचीन समय की वस्तुएँ, सिक्के, चित्रकला, मूर्तियाँ, पांडुलिपियाँ, वेशभूषा, हस्तकला और अन्य ऐतिहासिक वस्तुएँ देखने को मिलती हैं। महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय – मुंबई प्रसिद्ध है। यहाँ भारत के इतिहास से संबंधित वस्तुएँ संगृहीत की गई हैं। पुणे के डेक्कन कॉलेज स्नातकोत्तर और अनुसंधान संस्था के वस्तु संग्रहालय में विविध समय की वस्तुएँ देखने को मिलती हैं। राजा दिनकर केळकर संग्रहालय में विभिन्न घरेलू वस्तुएँ, अलंकार, गहने, औजार, वाद्य, वस्त्र और कलाकृतियों के कक्ष हैं। ये वस्तुएँ पूर्व समय के लोगों की जीवनशैली के दर्शन कराते हैं।

नागपुर का मध्यवर्ती संग्रहालय, छत्रपति संभाजीनगर का छत्रपति शिवाजी महाराज संग्रहालय, कोल्हापुर का श्री छत्रपति शाहू संग्रहालय और सातारा का श्री छत्रपति शिवाजी महाराज संग्रहालय, नाशिक जिले में त्र्यंबकेश्वर के समीप अंजनेरी का शांति कृष्ण



छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय

म्यूजियम ऑफ मनी एंड हिस्ट्री आदि ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तु संग्रहालयों के कुछ उदाहरण हैं।

महाराष्ट्र की विरासत धरोहरें

महाराष्ट्र ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपन्नता प्राप्त राज्य है। विश्व स्तर की यूनेस्को संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त और राज्य सरकार द्वारा संरक्षित अनेक महत्वपूर्ण विरासत धरोहरें महाराष्ट्र में हैं। ये धरोहरें हमारे इतिहास के गौरवशाली प्रतीक हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध विरासत धरोहरें अजंता और एलोरा की गुफाएँ हैं। इन स्थानों को वर्ष १९८३ ई. में यूनेस्को की विश्व



अजंता की गुफाएँ

विरासत धरोहर की सूची में समाविष्ट किया गया। मुंबई के समीप घारापुरी की गुफाएँ, कान्हेरी कंदराएँ भी विख्यात हैं। उनमें घारापुरी गुफाओं को विश्व विरासत के रूप में वर्ष १९८७ में समावेश किया गया। मुंबई की विशेष सुशोभनवाली (आर्ट डेको) ७६ इमारतों की यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में वर्ष २०१९ में समावेश किया गया है।

मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस बड़ा भव्य रेल स्थानक है। यह रेल स्थानक अंग्रेजों के शासनकाल का 'गोथिक' स्थापत्य शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है। वर्ष १९९७ ई. में विश्व विरासत धरोहर के रूप में इसे घोषित किया गया है।

महाराष्ट्र की सह्याद्रि पर्वत शृंखलाएँ 'पश्चिम घाट' के रूप में जानी जाती हैं। ये पर्वत शृंखलाएँ जैव विविधताओं से संपन्न हैं। इन पर्वत शृंखलाओं को यूनेस्को ने वर्ष २०१२ ई. में प्राकृतिक विरासत धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की है। यहाँ अनेक दुर्लभ

पशु-पक्षी और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। अभी-अभी यूनेस्को ने 'मराठा मिलिट्री लैंडस्केप्स' के रूप में १२ गढ़-किलों को 'विश्व विरासत धरोहर' के रूप में मान्यता दी है। इनमें से ११ गढ़-किले महाराष्ट्र में हैं। तमिलनाडु राज्य में जिंजी नामक किला है। ये गढ़ किले मराठा साम्राज्य के सैन्य कौशल, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतीक समझे जाते हैं।

महाराष्ट्र की ये विरासत धरोहरें हमारी संस्कृति, इतिहास और परंपरा के प्रतीक हैं। ये धरोहरें ऐतिहासिक पर्यटन के आकर्षण हैं और उनका अध्ययन करके हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के प्रति हमारे गौरव भाव में वृद्धि होती है।

तुम्हारा मत क्या है?

विरासत धरोहरों का संवर्धन करना हम सब का कर्तव्य है। इसके लिए तुम अपना क्या योगदान दोगे?



स्वाध्याय

प्र.१ अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण करो।

१. वर्धमान महावीर की सीख _____ ग्रंथ द्वारा प्राप्त होती है।

- अ) उपनिषद ब) तिपिटक
क) आगम साहित्य ड) संघम साहित्य

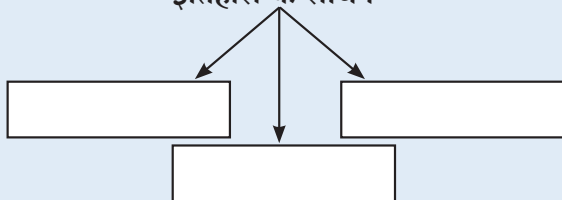
२. भारतीय इतिहास के अति प्राचीन साधन _____ हैं।

- अ) आरण्यके ब) वेद
क) ब्राह्मण ग्रंथ ड) उपनिषद

ब) उचित जोड़ियाँ मिलाओ

- | | |
|---------------|---|
| गुट 'अ' | गुट 'ब' |
| १) लिखित साधन | अ) लोकगीत |
| २) भौतिक साधन | ब) विदेशी आप्रवासियों द्वारा लिखे गए यात्रा वर्णन |
| ३) मौखिक साधन | क) सिक्के, औजर |

प्र.२ अ) संकल्पना चित्र पूर्ण करो
इतिहास के साधन



ब) यह चित्र साधनों के किस वर्ग में आता है? लिखो।



.....



.....



.....

प्र.३ अ) निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो।

- इतिहास के लिखित और मौखिक साधनों में अंतर बताओ।
- भौतिक साधनों के नाम लिखकर इतिहास के अध्ययन में उनका महत्व लिखो।
- आधुनिक समय के कौन-से साधन भविष्य की पीढ़ियों को इतिहास बता सकेंगे? लिखो।

प्र.४ अ) किसी पुरानी वस्तु जैसे मूर्ति, सिक्के, मुद्राएँ, बर्तन, गहने, कागजात (दस्तावेज), खिलौने आदि के आधार पर मानव जीवन में आए परिवर्तन की कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है, वह लिखो।

ब) निम्न सारिणी पूर्ण करो।

शहर के स्थानों के नाम	वस्तु संग्रहालय का नाम	विशेषताएँ
मुंबई		
.....	राजा दिनकर केळकर संग्रहालय	
.....		विविध पुरातत्त्विक वस्तु का संग्रहालय

कृति

- तीज - त्योहारों से संबंधित लोकगीत, कहानी, पोवाडे (शौर्यगीत), भारुडे (जन जागरण गीत), ओवियाँ (सबद) का संग्रह करके परिपाठ में प्रस्तुत करो।
- महाराष्ट्र के 'विरासत धरोहर' स्थानों की चित्र सारिणी बनाओ और उसका उपयोग करके 'विरासत भित्ति' तैयार करो।

प्र.५ 'भराठा मिल्ट्री लैंडस्केप्स' नाम से प्रकाशित किए गए बारह गढ़-किलों के नाम अंतरजाल की सहायता से ढूँढ़ो।

स	लहे	र	ज	य	ग	ढ	खां	तुं	ग	ला	अ
कु	के	अ	व	ची	त	ग	ढ	दे	न्हा	र	र्ना
ला	ळ	क	सु	व	र्ण	दु	र्ग	प	री	स	ल
बा	ना	ह	वं	वा	रू	ग	ड	वा	स्ते	टा	सिं
वि	वि	रि	द	शि	भी	सि	मा	ल	व	ण	धु
ज	शा	श्चं	न	व	व	ह	पा	स	ढ	प	दु
य	ल	द्र	ग	ने	ग	ग	ली	ग	भो	र	र्ग
दु	ग	ग	ड	री	ड	ड	ह	ना	द	गि	री
र्ग	ढ	ढ	उं	दे	री	लो	वा	रू	ग	ढ	रा
प्र	ता	प	ग	ढ	तो	र	णा	कां	गो	री	य
व	स	ई	का	कि	ला	क	म	ल	ग	ड	ग
रा	जिं	जी	सिं	ख	ग	ढ	रा	ज	ग	ढ	ढ

१. रायगढ़

७. _____

२. _____

८. _____

३. _____

९. _____

४. _____

१०. _____

५. _____

११. _____

६. _____

१२. _____

उपक्रम

- तुम्हारे गाँव के समीप के/जिलों के समीप के संग्रहालय में जाओ। उसका प्रतिवेदन लेखन करो।



प्रागैतिहासिक कालखंड



२.१ प्राचीन भारत – भौगोलिक पार्श्वभूमि

२.२ प्रागैतिहासिक कालखंड

२.३ मध्याश्म युग से नवाश्म युग

२.४ ताम्रअश्म युग

२.५ महाराष्ट्र में उत्खनन स्थान

विद्यार्थियों, एक क्षण के लिए आँखें बंद करो और कल्पना करो कि तुम ऐसे कालखंड में रहते हो जहाँ कहीं भी मोबाइल नहीं, गाड़ी नहीं, खिलौने नहीं, यहाँ तक कि मकान, गाँव, विद्यालय, सड़क कुछ भी नहीं हैं।



बताओ तो!

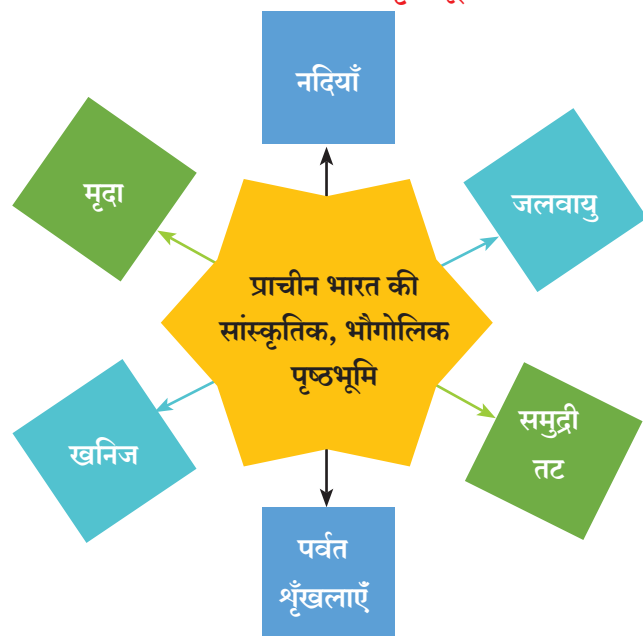
- ऐसे कालखंड में यदि तुम रहे होते तो तुम्हारा दैनिक जीवन कैसा होता?
- तुम कहाँ रहे होते?
- ऐसे स्थान पर कड़ाके की ठंड में गर्मी पाने के लिए तुमने क्या किया होता?
- भोजन कैसे पकाया होता?
- कोई वन्य पशु तुम्हारी दिशा में आता देख तुमने क्या किया होता?

लाखों-हजारों वर्ष पूर्व आदिमानव के कालखंड में उसे ऐसी ही स्थितियों का सामना करना पड़ता था। आज हम जो कुछ देखते हैं, जिन सुख-सुविधाओं का उपभोग लेते हैं, उन्हें पाने के लिए लाखों वर्ष गुजरने पड़े। इस कालखंड के चरण में घुमंतू अवस्था से स्थिर जीवन की ओर, जंगल से गाँव की ओर और कालांतर में प्रगत संस्कृति तक का अद्भुत इतिहास समाया हुआ है। चलो, मानव की इस एकदम प्रारंभिक अवस्था के विषय में चरण-प्रति चरण-परिचय प्राप्त करेंगे।

क्या तुम्हें याद है?

इसके पहले तुमने मानव की उत्क्रांति के चरणों और आदिमानव का जीवन, भोजन पद्धति, औजार, कला आदि के विषय में अध्ययन किया है। उसका तुम्हें क्या-क्या याद आता है, इसका कक्षा में पुनरावर्तन करो।

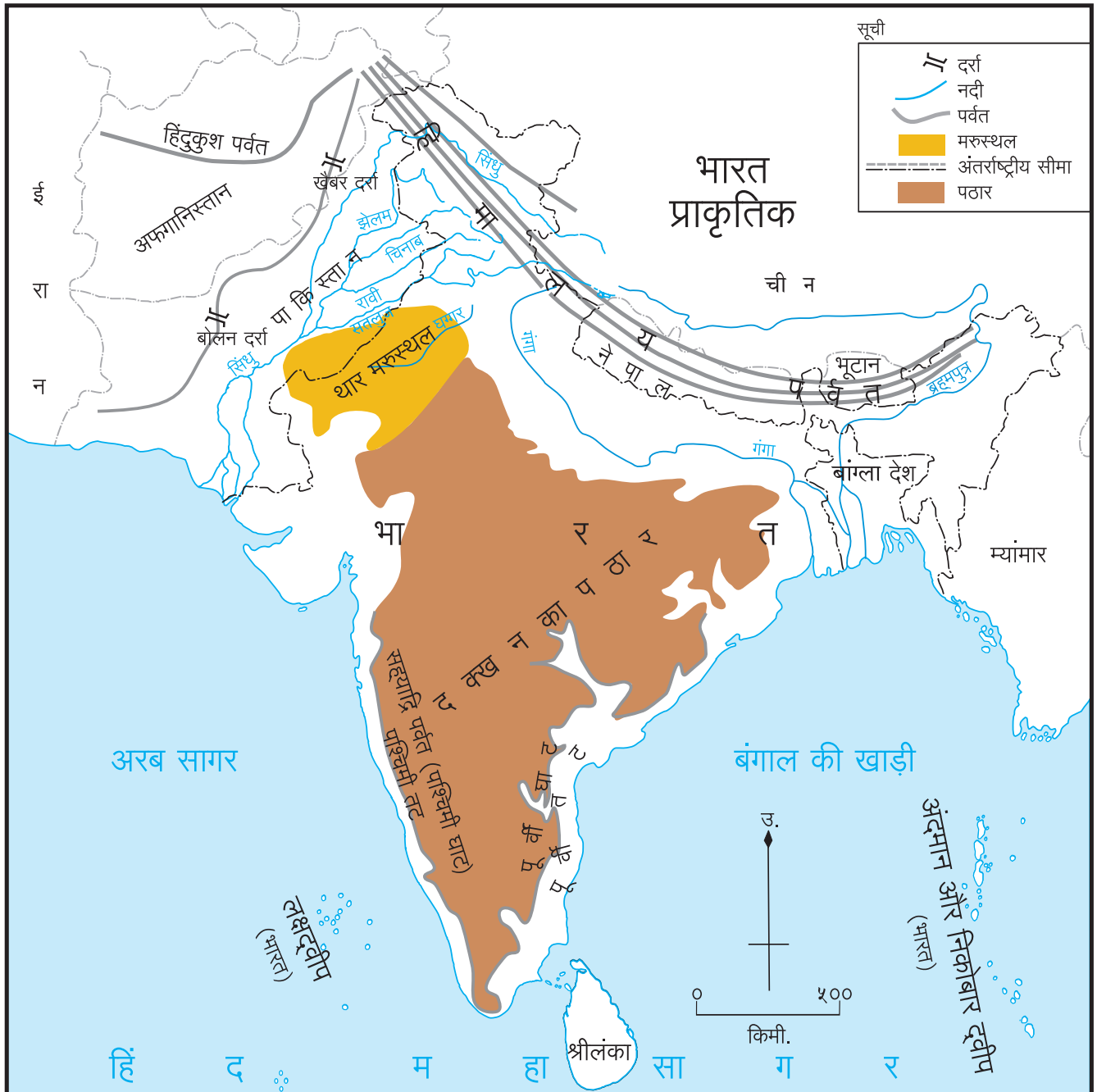
२.१ प्राचीन भारत – भौगोलिक पृष्ठभूमि



मानवी इतिहास के विकास में संबंधित प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जिस प्रदेश में मानव रहता है, वहाँ के पर्वत,

नदियाँ, जलवायु, भूमि और प्राकृतिक संसाधन वहाँ के मानव समूह की जीवन शैली को रचते हैं। कौन-सी फसलें लेनी चाहिए, कौन-से पशु पालने चाहिए, कहाँ बस्ती बसानी चाहिए, संचार-परिवहन कैसा होना चाहिए, यह सब संबंधित प्रदेश की भौगोलिक विशेषताओं पर निर्भर करता है। प्राचीन भारत में मानवी संस्कृति का विकास विविध स्वरूपों में हुआ। उसका प्रमुख कारण भारत की भौगोलिक विविधता है।

भारत एक विशाल देश है और विविधताओं से विभूषित है। उत्तर की ओर से आने वाली तूफानी हवाएँ, आँधी, शरीर को जकड़ देने वाली ठंड जैसी प्राकृतिक आपदाओं से हिमालय की ऊँची-ऊँची पर्वत शृंखलाएँ रक्षा करती हैं। उत्तर भारत में जलवायु ठंडी और शुष्क होती है और दक्षिण भारत की जलवायु उष्ण और नम होती है। परिणामतः कृषि पद्धति, फसलें और मानव जीवन की शैली में भिन्नता दिखाई देती है।



प्राचीन समय में भारत की नदियों के कारण निर्माण हुई गाद अथवा काँप की उर्वर भूमि में कृषि का विकास हुआ। भारत की कृषि के लिए मध्य भारत का विस्तृत पठार और गंगा-यमुना के दोआब का मैदानी प्रदेश अत्यंत अनुकूल सिद्ध हुआ।

दखन का पठार खनिज संसाधनों से संपन्न है। परिणामतः यहाँ धातुकार्य, मिट्टी के बर्तन बनाने के कार्य का और ताम्रअश्म संस्कृति का विकास हुआ। प्राचीन महाराष्ट्र की ताम्रअश्मयुगीन उपनिवेश (बस्तियाँ), कृषि और जीवन शैली के लिए गोदावरी, कृष्णा जैसी नदियाँ और उसकी उपनदियाँ कारण बनीं।

भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी होने से समुद्री व्यापार को प्राचीन समय से बढ़ावा मिला है। अतः दूरस्थ प्रदेश के लोगों और संस्कृति के साथ भारतीयों का संपर्क हुआ।

इन विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं के कारण भारत में अनेक संस्कृतियों, परंपराओं और जीवन शैलियों का उदय हुआ।

२.२ प्रागैतिहासिक काल

पिछले वर्ष तुमने पढ़ा है कि 'एप' वानर की कुछ प्रजातियाँ उत्क्रांत होती हुई मानव की निर्मिति हुई। इस प्रारंभिक मानव को 'आदिमानव' कहते हैं।

मानव की उत्क्रांति के महत्वपूर्ण चरण –



क्या तुम जानते हो?

क्या तुम एक मनोरंजन की बात जानते हो? एक दंतकथा अथवा कल्पित कथा है कि हिमालय का

निवासी 'यती' है। यह यती एक गूढ़ और बालोंवाला प्राणी है। उसे 'हिममानव' कहते हैं। कहा जाता है कि इस परिसर में कई बार बड़े आकारों के पदचिह्न देखे गए हैं परंतु अनुसंधान द्वारा यह स्पष्ट हुआ है कि पाए गए ये पदचिह्न हिमालय में रहने वाले भालुओं अथवा अन्य प्राणियों के हैं। फिर भी नृवंशविज्ञान के विद्वान इन कथाओं का अध्ययन करते हैं क्योंकि ऐसी दंतकथाएँ संस्कृति, परंपरा और लोगों की कल्पना शक्ति के बारे में बहुत कुछ बताती-कहती हैं।

आदिमानव का जीवन अत्यंत कठिन और जटिल था। वह घुमंतू और भटकने वाली अवस्था में था। अतः वह निरंतर भोजन, जल, आश्रय और सुरक्षा की खोज में घूमता था। वह अन्न के लिए शिकार करता था। फल, कंदमूल इकट्ठा करता था। उसके औजार लकड़ी, पत्थर अथवा हड्डियों से बने होते थे। आदिमानव हाथ हिलाकर, विविध प्रकार की आवाजों अथवा हावभाव की सहायता से संवाद स्थापित करते थे।

इस कालखंड को प्रागैतिहासिक कालखंड के रूप में जाना जाता है। पिछले पाठ में तुमने जानकारी प्राप्त की है कि जिस कालखंड में लिपि का उद्गम अथवा विकास नहीं हुआ था, उस कालखंड को 'प्रागैतिहासिक कालखंड' कहते हैं।

इस कालखंड में मानव ने उल्लेखनीय प्रगति की। उसके जीवन का अध्ययन प्रमुख रूप से पथरीले औजार, हड्डियाँ, मिट्टी के बर्तन, गुफाचित्र जैसे प्रमाणों के आधार पर किया जाता है। मानव के साधनों, जीवन शैली, भोजन पद्धति और बस्ती के स्वरूपों में परिवर्तन होते गए।

■ अश्म युग

जिस कालखंड के शास्त्रों में प्रमुखतः पत्थर के औजार पाए जाते हैं, उस कालखंड को हम 'अश्म युग' कहते हैं। 'अश्म' का अर्थ पत्थर है।



सोचो

अश्म युगीन मानव ने पत्थर का उपयोग किन कारणों के लिए किया होगा ?

अश्म युगीन मानव ने पत्थरों के बड़े टुकड़ों को तराशकर औजार बनाए होंगे। वह इन तोड़क औजारों का उपयोग कठोर छिलकों के फल अथवा भीतरी गिरी पाने के लिए हड्डियाँ तोड़ने के लिए करता होगा। पत्थर को आकार देना उस कालखंड के मानव की बुद्धि के विकास का प्रथम चरण था। औजारों के आकार और प्रकार के आधार पर अश्म युग के तीन कालखंड बनाए जा सकते हैं- पुराश्म युग, मध्याश्म युग और नवाश्म युग।

■ पुराश्म युग

पुराश्म युग का मानव पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था। वह गुफाओं अथवा बड़े वृक्षों की डालियों पर रहकर स्वयं की रक्षा करता था। पुराश्म युग के प्रारंभिक औजार उबड़-खाबड़ थे। उनका उपयोग वह शिकार करने, खुरचने, खनन आदि कार्यों के लिए करता था। मानव इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार अग्नि का आविष्कार है और यह इसी कालखंड में हुआ।



सोचो

अग्नि का उपयोग करना सीखने के कारण मानव के जीवन में कौन-से परिवर्तन हुए होंगे ? सोचो और लिखो।

- अन्न पकाना आ गया। परिणामतः उसका पाचन सहजता से होने लगा।

- -----
- -----
- -----

पुराश्मयुगीन औजार नदी अथवा नाले के किनारे पर पाए जाते हैं। पुराश्मयुगीन स्थानों में से महाराष्ट्र में नाशिक के निकट गंगापुर और नेवासा के समीप चिरकी-नेवासा स्थान प्रसिद्ध हैं।

२.३ मध्याश्म युग से नवाश्म युग

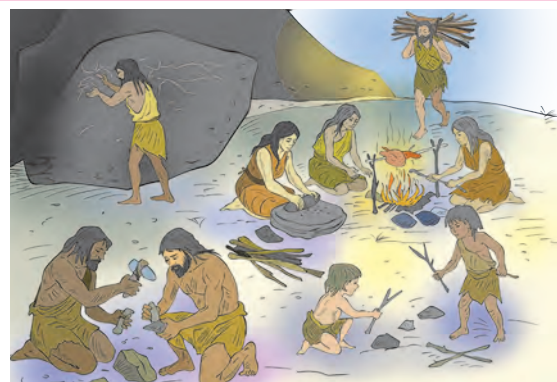
■ मध्याश्म युग

इस कालखंड में बुद्धिमान मानव ने पहाड़ों की दरारों और चट्टानों द्वारा निर्माण हुई प्राकृतिक कंदराओं और शैलाश्रय में आश्रय लिया। शैलाश्रय का अर्थ पहाड़ का आगे निकल आया कोटर जैसा हिस्सा है। वहाँ वह समूह बनाकर रहने लगा। इस कालखंड में पत्थर के औजार बनाने की तकनीक में बहुत अच्छी प्रगति हुई थी। औजारों का आकार छोटा हो गया। अब वह विभिन्न प्रकार के पत्थरों का उपयोग करने लगा। ये औजार शिकार करना, मछली पकड़ना, काटना, तोड़ना जैसे अनेक कार्यों के लिए उपयोगी होते थे। वह सींगों और हड्डियों को घिसकर-तराशकर धारदार औजार बनाने लगा। मानव ने कुत्ता, भेड़-बकरी जैसे प्राणियों को मानव को परचना और उनको अपने साथ हिलना-मिलना प्रारंभ किया। मानव के साथ हिलने-मिलने और उसे परचने वाला पहला प्राणी कुत्ता है। इसी कालखंड में मछली पकड़ना भी आरंभ हुआ। कालांतर में वह गुफा में अथवा अस्थायी बसेरा बनाकर रहने लगा। यह कालखंड घुमंतू जीवन से स्थिर जीवन की ओर यात्रा करने का संक्रमण काल था। महाराष्ट्र के जलगाँव जिले में पाटणे मध्याश्म युग का महत्वपूर्ण स्थान है।



बताओ तो !

दिए गए चित्र का निरीक्षण करो और उसपर कक्षा में चर्चा करो।



प्राकृतिक गुफा

■ नवाश्म युग

नवाश्म युग में औजार बनाने की तकनीक में अधिक प्रगति हुई। उनमें पत्थर के एक नए औजार 'कुल्हाड़ी' का समावेश हुआ। पुराश्म युग में कुल्हाड़ी के फल के आकारों के औजार थे परंतु अब मानव ने उसमें बेंट (डंडा) लगाने की युक्ति ढूँढ़ निकाली। इसे आधुनिक कुल्हाड़ी का प्रारूप कह सकते हैं।



नवाश्मयुगीन कुल्हाड़ी

कृषि तकनीक में हुई प्रगति इस कालखंड का सबसे बड़ा परिवर्तन था। मध्याश्म युग में मानव प्राकृतिक रूप से उग आए अनाज की कटाई करना सीख गया था। नवाश्म युग में उसने सही ऋतु में अनाज की बुआई करना आरंभ किया। इस कालखंड में उसे बुआई से लेकर कटाई करने तक एक ही स्थान पर रहना आवश्यक था। परिणाम स्वरूप कुछ समय तक वह एक ही स्थान पर रहने लगा। यहीं से धीरे-धीरे गाँव-बस्तियों का उदय हुआ।



करके देखो

पुराश्म युग, मध्याश्म युग और नवाश्म युग में मानव की जीवनशैली में जो परिवर्तन हुआ, उसे दर्शाने वाली सारिणी बनाओ।

नवाश्म युग का महत्वपूर्ण परिवर्तन कृषि की खोज है। इस कालखंड में मानव ने अनाज, दूध का उत्पादन करने की कला को आत्मसात किया था। कृषि का प्रारंभ करने का श्रेय स्त्रियों को दिया जाता है। नुकीली लाठी के सहारे स्त्रियाँ ही बीजों की बुआई करने का कार्य करती होंगी। बुआई के लिए उपयोग में लाई जाने वाली नुकीली लाठी वजनदार बनकर जमीन में गहरे खोदा जा सके इसलिए उन लाठियों के बीचोबीच छेदवाले पत्थर बिठाए जाते थे।

अभी भी कुछ आदिवासी जनजातियों में स्त्रियाँ इसी ढंग से बुआई करती हैं। आवश्यकता पूर्ण की जा



नुकीली लाठी से बुआई करती स्त्रियाँ

सके, इतना अनाज मिलना आरंभ होने से मानव का निरंतर होने वाला भ्रमण-घूमना रुक गया। कृषि के कारण प्राप्त हुई स्थिरता के कारण उगाए हुए अनाज को दीर्घ समय तक संग्रह करना संभव हुआ। समूह में सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने पर भी बचा हुआ अनाज उसके पास होता था। परिणामतः समूह में स्त्री-पुरुषों को नई बातों की खोज कर कल्पनाशीलता के बल पर नए कौशल विकसित करने हेतु पर्याप्त समय मिलने लगा। जीवन को स्थिरता और स्थायीत्व प्राप्त होने के कारण मानव अनेक क्षेत्रों में प्रगति कर सका। कृषि के साथ-साथ मानव पशुओं को पालतू बनाना सीख गया। कुछ पशुओं को परिश्रम के कार्यों के लिए और बोझ ढोने के लिए उपयोग में लाया गया।

कृषि के विकास के साथ ही मिट्टी के बर्तन गढ़ने की कला का भी उदय हुआ। विभिन्न आकारों और रंगों के बर्तन बनाकर मानव उनपर सुंदर कलाकृतियाँ बनाने लगा। इसी समय मानव वस्त्र बुनने की कला से अवगत हुआ। लकड़ी की नावें बनाकर पानी में चलाने की तकनीक वह नवाश्म युग में सीखा।

नवाश्म युग में कृषि विकास के साथ नदियों के तटों पर उर्वर प्रदेश में मानव स्थायी रूप से बसने लगा। उसका घूमना-भटकना रुक गया। इसी कालखंड में परिवार यह संस्था आकार ग्रहण करने लगी।

२.४ ताम्रअश्म युग

मानव को ताँबा धातु की खोज हुई और ताँबे का उपयोग किया जाने लगा परंतु इस कालखंड में पत्थर के शस्त्र-औजारों का भी उपयोग किया जाता था। अतः इस कालखंड को 'ताम्रअश्म युग' कहा जाता है। ताम्रअश्म युग में पहिये की खोज हुई। पहियों के कारण परिवहन और संचार द्रुत और आसान हुआ। इस कालखंड में उपज के लिए बड़ी मात्रा में भूमि उपयोग में लाई जाने लगी।

माल-सामान का लाना-ले जाना प्रारंभ हुआ। व्यापार में वृद्धि हुई। ताम्रअश्म युग में व्यापार उद्यम बढ़ा। इसी तरह, कौशल पर आधारित लकड़ी कार्य, धातुकार्य जैसे व्यवसाय आरंभ हुए।

ताम्रअश्मयुगीन मानव गेहूँ, ज्वार, चावल, दलहन, कपास की उपज लेता था। वह शिकार

करना और मछली पकड़ने का कार्य भी कुछ मात्रा में करता था, परंतु ये बातें उसके निर्वाह के प्रमुख साधन नहीं थे। कृषि के लिए पूरक, पशु पालन भी उसके जीवन का मुख्य हिस्सा बना।

इस कालखंड में मृत व्यक्ति को घर में अथवा घर के आँगन में दफन किया जाता था। दफन के समय कभी-कभी मृत व्यक्ति के साथ उसके नित्य उपयोग की वस्तुएँ, बर्तन रखे पाए जाते हैं।

२.५ महत्त्वपूर्ण उत्खनन स्थान

महाराष्ट्र में उत्खनन के स्थान महाराष्ट्र में ताम्रअश्म संस्कृति के स्थान तापी, गोदावरी, कृष्णा, भीमा और प्रवरा आदि नदियों के तटों पर पाए गए हैं। यहाँ पत्थर के शस्त्र-औजार, मिट्टी के बर्तन, ताँबे की वस्तुएँ, अनाज का संग्रहण करने के लिए हाथों से गढ़े गए बड़े घड़े जैसे प्रमाण उत्खनन में पाए गए हैं।

महत्त्वपूर्ण उत्खनन स्थान	उत्खनन में पाए गए प्रमुख प्रमाण
दायमाबाद (जिल्हा - अहिल्यानगर) महाराष्ट्र का सबसे प्रसिद्ध और अनुसंधान दृष्टि से दायमाबाद महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस स्थान की खोज भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के बी. पी. बोपडीकर ने की है।	कांस्य धातु की चार वस्तुएँ प्राप्त हुईं। गाड़ी में जुता बैल, भैंसा, गैंडा और हाथी, ये वे चार वस्तुएँ हैं। अब वे वस्तुएँ 'दायमाबाद ब्राँजेस' के रूप में जानी जाती हैं।
इनामगाँव (जिला - पुणे) विकसित इनामगाँव ताम्रअश्म गाँव-बस्ती का उत्तम उदाहरण है। इस स्थान का उत्खनन पुरातत्त्व वैज्ञानिक डॉ. ह. धी. सांकलिया, डॉ. जेड. डी. अंसारी और डॉ. म. के. ढवळीकर ने किया है।	गेहूँ, बार्ली, चावल, दलहन, बाजरा और तिल की उपज के प्रमाण पाए गए हैं। ढोर-पशु, भेड़-बकरियाँ जैसे पालतू पशुओं की हड्डियाँ पाई गई हैं। साथ ही, वन्य पशुओं के शिकार (जैसे - हिरन, नीलगाय और सूअर) और मछली पकड़ने के प्रमाण पाए गए। लाल और काले रंगों के चाक पर बनाए गए और ज्यामितीय आकृतियों के नक्काशीवाले मिट्टी के बर्तन। विशेषतावाली बात - दो मटकों के गले एक-दूसरे से जोड़कर उसमें छोटे बच्चों को दफन करने की पद्धति पाई गई।

जोर्वे (जिला - अहिल्यानगर) जोर्वे संस्कृति महाराष्ट्र की सबसे वर्तमान और प्रसिद्ध ताम्रअश्म संस्कृति मानी जाती है। इस संस्कृति का प्रथम प्रमाण जोर्वे में पाया गया। इस स्थान का उत्खनन पुरातत्त्व वैज्ञानिक डॉ. ह. धी. सांकलिया और डॉ. शां. भा. देव के मार्गदर्शन में किया गया।	लाल और काले रंगों की मिट्टी के बर्तन, ताँबे के कड़े और मणके। घरों की गाल और आयताकृति रचना तथा अन्न संग्रहण के लिए मिट्टी के कोठार। ज्वार की उपज लेने के प्रमाण पाए गए।
सावळदा (जिला - नंदुरबार) सावळदा संस्कृति, महाराष्ट्र के आद्य किसानों की सबसे पुरानी संस्कृति। साविलदा स्थान का उत्खनन पुरातत्त्व वैज्ञानिक डॉ. ह. धी. सांकलिया ने किया।	लाल रंग की मिट्टी के बर्तन और उसपर काले रंग से नक्काशी काम किया हुआ दिखाई देता है।
नेवासा (जिला - अहिल्यानगर) महाराष्ट्र के उत्खनन स्थानों में नेवासा महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. एम. एन. देशपांडे ने इस स्थान की खोज की।	मिट्टी के रंगीन बर्तन, पत्थर की कुल्हाड़ी, ताँबे के आभूषणों के अवशेष, गाय, बकरी, भेड़, बैल आदि प्राणियों के अवशेष पाए गए हैं।



खोजो तो

उपरोक्त उत्खनन के स्थान महाराष्ट्र में किन नदियों के तटों पर हैं? वह अंतरजाल को सहायता से खोजो।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) प्र.१ अ) नाम लिखो.

- भारत में काली मिट्टी की भूमिवाला पठार -----
- भारत की कृषि के लिए सबसे अधिक अनुकूल प्रदेश -----
- वह कालखंड जब लिपियों का उद्गम अथवा विकास नहीं हुआ था -----
- दायमाबाद के उत्खनन स्थान की खोज करने वाले भारतीय पुरातत्त्वविद सर्वेक्षक -----

ब) उचित जोड़ियाँ मिलाओ

‘अ’ गुट

- पुराश्म युग
- मध्याश्म युग
- नवाश्म युग
- ताम्रअश्म युग

‘ब’ गुट

- बड़े धारदार औजार
- पहिये का आविष्कार
- कृषि तकनीक में प्रगति
- अग्नि का आविष्कार

प्र.२ अ) निम्न सारिणी पूर्ण करो

क्र.	विशेषताएँ	मध्याश्म युग	नवाश्म युग
१.	आवास	गुफा	-----
२.	व्यवसाय	-----	कृषि, पशुपालन
३.	साधन	सूक्ष्म पथरीले साधन	-----
४.	कला	-----	मिट्टी के रंगीन बर्तन
५.	जीवन शैली	घुमंतू	-----

ब) निम्न कथन सत्य अथवा असत्य, यह बताकर असत्य कथनों को सुधारकर लिखो

१. जोर्वे में कांस्य धातु की चार वस्तुएँ पाई गई।

२. नेवासा में जोर्वे संस्कृति का प्रथम प्रमाण पाया गया।

३. इनामगाँव में महाराष्ट्र की आद्य किसानों की एक प्राचीन ताम्रअश्मयुगीन संस्कृति है।

प्र.३ अ) निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखो।

१. नवाश्म युग में मानव की जीवन शैली में किस प्रकार परिवर्तन आया ?

२. ताम्रअश्म युग की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं ?

ब) निम्न युगों की प्रति दो विशेषताएँ लिखो।

१. पुराश्म युग

२. मध्याश्म युग

प्र.४ निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो।

१. यदि नवाश्मयुगीन मानव ने कृषि तकनीकी की खोज नहीं की होती तो वर्तमान मानव का जीवन कैसा होता ? कारणसहित उत्तर लिखो।

२. नवाश्म युग में कौन-सी तकनीकी विकसित होने से मानव का दैनिक जीवन बदल गया ?

प्र.५ तुम्हें नया मकान खरीदना है। उसके लिए किन-किन जीवनावश्यक घटकों का विचार करके तुम नया मकान खरीदोगे

जैसे – पानी

कृति-

▪ कुशल कारीगर चाक की सहायता से मिट्टी के बर्तन बनाते समय कौन-कौन-सी कृति करते हैं, इसे समझने के लिए उन्हें विद्यालय में आमंत्रित कर उनसे साक्षात्कार करो। कुछ वस्तुएँ तुम स्वयं बनाकर देखो।

▪ हमारे देश के विकास में भौगोलिक परिस्थिति का महत्वपूर्ण योगदान है। इस विषय में निम्न के आधार पर कॉपी में जानकारी लिखो।

१. भारत की पर्वत शृंखलाएँ।

२. भारत की नदियाँ।

३. भारत को प्राप्त समुद्री तट

उपक्रम

१. महाराष्ट्र के मानचित्र में महाराष्ट्र के उत्खनन स्थान दर्शाओ।

२. यदि मैं आदिमानव होता तो... कहाँ रहता ? क्या खाता ? इसपर आधारित नाट्य अथवा भूमिकानाट्य (रोल प्ले) प्रस्तुत करो।





हड़प्पा संस्कृति



३.१ कालखंड

३.२ स्थान और विस्तार

३.३ लोकजीवन

३.४ हड़प्पा संस्कृति के हास के कारण

भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग ४५०० वर्षों पूर्व एक नगरीय संस्कृति का विकास हुआ। उसे हम 'हड़प्पा संस्कृति' कहते हैं। आश्चर्य तो यह कि यह संस्कृति इतनी प्रगत थी कि इस संस्कृति के नगरों में स्वच्छ और चौड़ी सड़कें, सुनियोजित नगर संरचना, समृद्ध व्यापार और लेखन का उपयोग किया गया था। हड़प्पा संस्कृति के कारण हम यह समझ जाते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व भी हमारे पूर्वजों की जीवन शैली बड़ी ही अनुशासनबद्ध और उन्नत थी।



बताओ तो!

तुम्हें नगरीय संस्कृति के बारे में जानकारी है; इस विषय में कक्षा में चर्चा करो।

- हड़प्पा कालखंड में नगरों की संरचना कैसी थी?
- लोगों की जीवनशैली कैसी थी?
- व्यापार व्यवस्था और कृषि करने की तकनीकी पद्धति कैसी थी?
- इन नगरों का हास क्यों और कैसे हुआ?

चलो, इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए इतिहास के झरोखे से सीधे हड़प्पा संस्कृति के कालखंड में झाँककर देखेंगे।

‘प्राकृतिक संसाधन संपदा के आधार पर विकसित हुई जीवन प्रणाली को ‘संस्कृति’ कहते हैं।’ इस वाक्य द्वारा तुम्हें क्या बोध होता है? इसपर कक्षा में चर्चा करो।

संस्कृति एक सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था होती है। पिछले पाठ में हमने यह मालूम किया कि नदी तट पर किस प्रकार संस्कृतियों का उदय हुआ? वे धीरे-धीरे विकसित होती हुई, उनका नगरीय संस्कृति में रूपांतर हुआ। उन्हीं संस्कृतियों में एक प्राचीन और उन्नत संस्कृति हड़प्पा संस्कृति है। इस संस्कृति के अनेक स्थान सिंधु नदी की घाटी में पाए गए हैं। अतः उसे ‘सिंधु संस्कृति’ भी कहा जाता है। पुरातत्त्व शास्त्र में किसी संस्कृति का प्रमाण दर्शाने वाला प्रथम उत्खनन जिस शहर में किया जाता है, उस शहर का नाम उस संस्कृति को दिया जाता है। पंजाब में रावी नदी के किनारे हड़प्पा में १९२१ ई. में प्रथम उत्खनन प्रारंभ हुआ। अतः इस संस्कृति को ‘हड़प्पा संस्कृति’ नाम प्राप्त हुआ।

नदी तट की संस्कृति

नवाश्मयुग में मानव जीवन बड़ी मात्रा में कृषि पर निर्भर था परिणामतः स्थिर-स्थायी जीवन का प्रारंभ हुआ। मानव ने गाँव-बस्तियाँ निर्माण की।

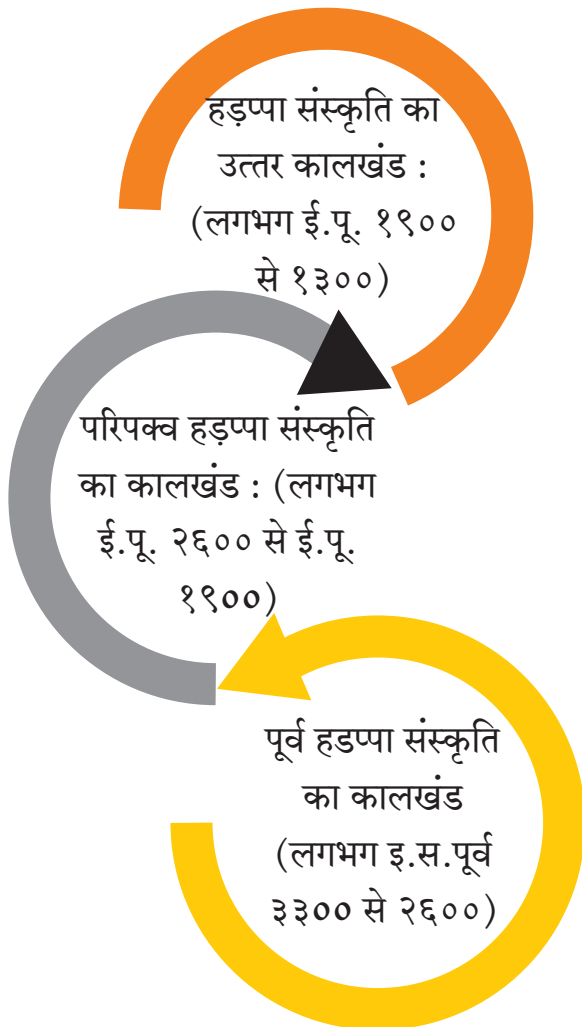
मानव ने गाँव-बस्तियाँ कहाँ निर्माण की होंगी?

जहाँ विपुल जल, उपजाऊ भूमि, परिवहन की व्यवस्था उपलब्ध होगी, ऐसे स्थान पर अर्थात् नदियों के तटों पर गाँव-बस्तियाँ बसाईं। संसार की प्राचीन संस्कृतियाँ टायग्रिस-यूफ्रेटिस (मेसोपोटामिया), नील (इजिप्त), होयांग हो (चीन), सिंधु (हड़प्पा) नदियों के तटवर्ती प्रदेशों में विकसित हुई।

३.१ कालखंड

कल्पना करो, हम हजारों वर्ष पूर्व के समय में प्रवेश कर रहे हैं। हड़प्पा संस्कृति का इतिहास केवल एक कालखंड का न होकर वह मानवी संस्कृति के इतिहास की एक यात्रा है। इस कालखंड में विभिन्न घटनाएँ घटित हुईं, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन होते रहे और यह संस्कृति क्रमशः समृद्ध होती गई परंतु कालांतर में विविध आपदाओं का उसे सामना करना पड़ा। परिणामतः इस संस्कृति का ह्रास होता गया अर्थात् इस संस्कृति के कालखंड में विभिन्न घटनाएँ घटित हुईं। परिणामस्वरूप हड़प्पा संस्कृति का विकास, उत्कर्ष और अंततः ह्रास हुआ।

हड़प्पा संस्कृति के तीन महत्वपूर्ण चरणों को देखेंगे। हड़प्पा संस्कृति के कालखंड का सामान्यतः निम्नानुसार विभाजन किया जाता है :



हड़प्पा संस्कृति का
उत्तर कालखंड :
(लगभग ई.पू. १९००
से १३००)

परिपक्व हड़प्पा संस्कृति
का कालखंड : (लगभग
ई.पू. २६०० से ई.पू.
१९००)

पूर्व हड़प्पा संस्कृति
का कालखंड
(लगभग इ.स.पूर्व
३३०० से २६००)

हड़प्पा संस्कृति की ग्रामीण बस्तियाँ : प्रारंभिक

समय हड़प्पा संस्कृति के पूर्व कालखंड (ई.पू. लगभग ३३०० से २६००) के रूप में पहचाना जाता है। इस कालखंड में गाँव से नगर की ओर क्रमशः विकास होता गया और 'नगरीकरण' की प्रक्रिया आरंभ हुई।

परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का समृद्ध कालखंड :

परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का समृद्ध कालखंड (ई.पू. २६०० से १९००) रहा है। यह कालखंड सिंधु संस्कृति का 'स्वर्ण कालखंड' माना जाता है। नगरों की संरचना, प्रबंधन, व्यापार, हस्तकला, शिल्पकला का विकास हुआ। इस कालखंड में मोहेंजोदड़ो, हड़प्पा, धोलावीरा, लोथल जैसे संस्कृति के प्रमुख केंद्र विकसित हुए।

हड़प्पा संस्कृति के ह्रास का कालखंड :

उत्तर हड़प्पा संस्कृति का कालखंड (ई.पू. लगभग १९०० से १३००) रहा। इस कालखंड में धीरे-धीरे हड़प्पा संस्कृति का ह्रास होना आरंभ हुआ। वहाँ के प्रमुख केंद्र उजड़ गए। कुछ स्थानों पर इस संस्कृति के अवशेष पाए गए हैं। इसके आधार पर इस संस्कृति के बदलते स्वरूप की जानकारी प्राप्त होती है।

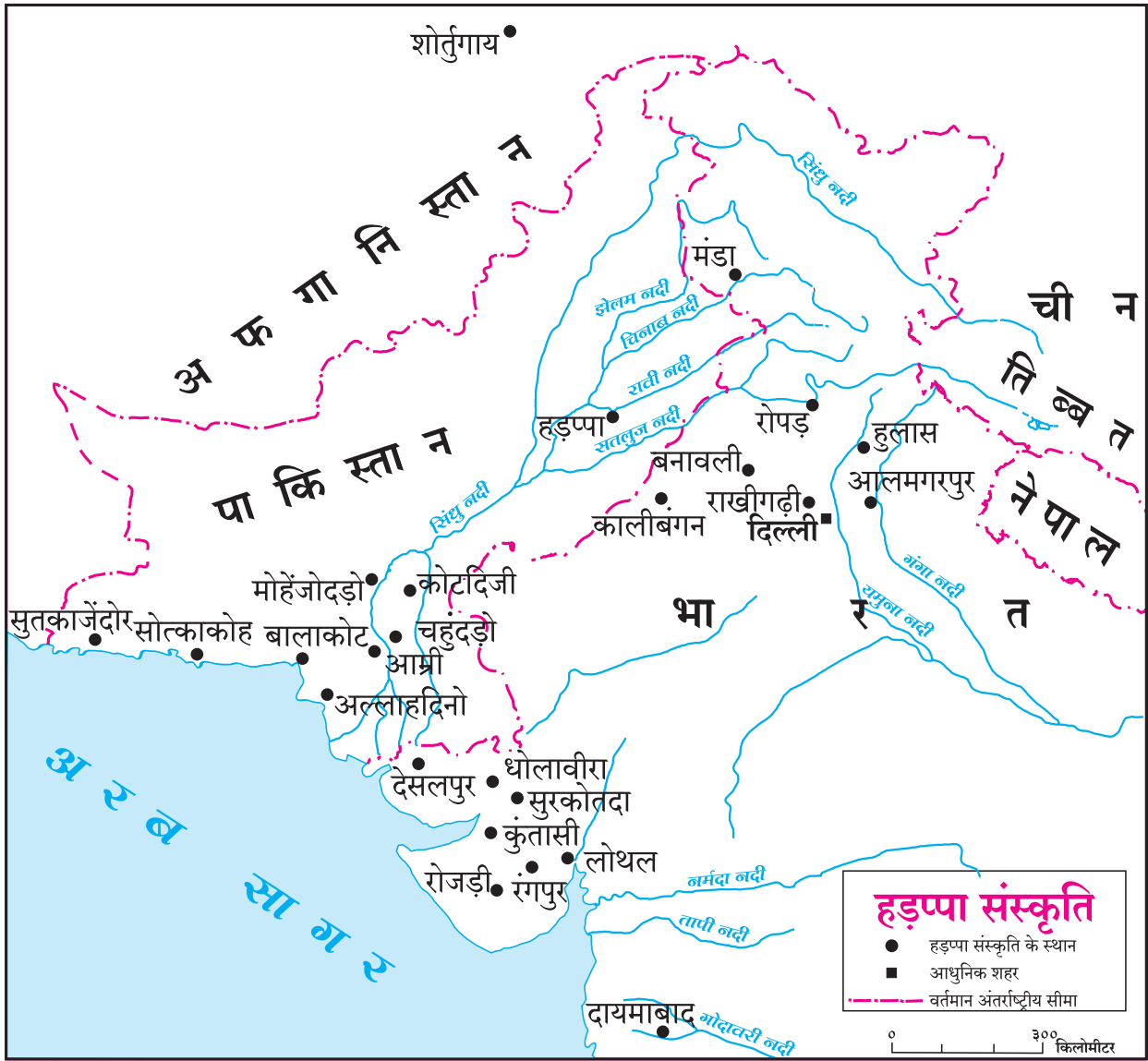


ढूँढो तो!

'हड़प्पा संस्कृति' के मानचित्र में प्राचीन भारत में हड़प्पा संस्कृति का प्रसार कहाँ हुआ था, यह बताओ? हड़प्पा, मोहेंजोदड़ो, लोथल, कालीबंगन, धोलावीरा, राखीगढ़ी नगर किन क्षेत्रों में हैं? ये स्थान वर्तमान में किन क्षेत्रों में हैं; इसका अंकन करो।

३.२ स्थान और विस्तार

हड़प्पा संस्कृति का मुख्य निवासी स्थान (बस्ती) सिंधु नदी और उसकी उपनदियों के तटों पर था। इन नदी तटों की उपजाऊ भूमि के कारण कृषि को बढ़ावा मिला। नदी तटों पर ग्रामीण बस्तियाँ बस गईं। उन बस्तियों में हड़प्पा, मोहेंजोदड़ो, कालीबंगन, लोथल, धोलावीरा,



राखीगढ़ी, बनावली और चहुंदड़ो आदि महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस संस्कृति का भौगोलिक विस्तार लगभग १५ लाख वर्ग किलोमीटर था। हड़प्पा संस्कृति का विस्तार उत्तर में जम्मू-कश्मीर के मंडा से लेकर भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात के धोलावीरा और लोथल तथा महाराष्ट्र के अहिल्यानगर के समीप दायमाबाद तक फैला हुआ था। साथ ही, पश्चिम में बलुचिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान) तक हड़प्पा संस्कृति पहुँच चुकी थी। पूर्व में हड़प्पा संस्कृति का विस्तार उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर तक फैला हुआ था। हड़प्पा संस्कृति के विस्तार के प्रमुख कारण दूरस्थ प्रदेशों के साथ उनका

चलने वाला व्यापार था।

३.३ जनजीवन

हड़प्पा संस्कृति के स्थानों के उत्खनन में प्राप्त हुए प्रमाणों के कारण वहाँ के जनजीवन की जानकारी मिलती है। जो भौतिक प्रमाण सामने आए हैं, उनके आधार पर उनकी जीवनशैली अनुशासनबद्ध थी, यह दिखाई देता है। नगररचना, सुव्यवस्थित सड़कें, मकानों का निर्माणकार्य, धोवनजल का उत्तम निपटारा, लेखवाली मुद्राएँ, मिट्टी की उत्तम श्रेणी के बर्तन, विविध प्रकारों के खिलौने हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ हैं।

रहन-सहन और मकानों की संरचना

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के मकान पक्के ईंटों के बने होते थे।



क्या तुम जानते हो?

हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने उनके मकानों के निर्माणकार्य के लिए जिस पद्धति का उपयोग किया था; उस पद्धति को 'इंग्लिश बाँड' पद्धति भी कहा जाता है। इस पद्धति में आड़ी और खड़ी ईंटें इस विशेषतापूर्ण पद्धति द्वारा रची जाती थीं, जिससे दीवारें अधिक मजबूत और टिकाऊ बनती थीं। ईंटें अनुपातबद्ध आकारों की होती थीं। सामान्यतः एक ईंट १:२:४ अनुपात में हुआ करती थी। हड़प्पा संस्कृति के लोगों द्वारा इस पद्धति को उपयोग में लाने का कारण यह था उन्हें लगता था कि अपने मकानों को बाढ़, भूकंप और कालांतर में होने वाली छिजन से संरक्षण प्राप्त हो।

घरों के बीचोंबीच आँगन, उसके चारों ओर कमरे, प्रवेश द्वार के पास कुआँ और शौचालय होता था। जलापूर्ति और धोवनजल को बहा ले जाने की उत्तम व्यवस्था थी। प्रत्येक घर से धोवनजल बाहर ले जाने के लिए मिट्टी के भुने हुए परनालों का उपयोग किया जाता था। एक विशेष बात यह थी कि सड़क की नालियाँ ईंटों से बनाई जाती थीं और वे व्यवस्थित रूप में ढँकी होती थीं। इसके आधार पर वे लोग सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति कितने जागरूक थे, यह दिखाई देता है।

तुम्हारा मत क्या है?

हड़प्पा संस्कृति से 'स्वच्छ भारत अभियान' तक का विचार करने पर स्वच्छता हमारी मौलिक आवश्यकता है, यह स्पष्ट होता है।



बताओ तो!

तुम्हारे गाँव अथवा महानगर में स्वच्छता किस प्रकार बनाए रखी जाती है; इसकी जानकारी पाँच वाक्यों में लिखो।

हड़प्पाकालीन नगरों की सड़कें ऐसी बनाई थीं कि वे समांतर और एक-दूसरे को समकोण में काटती थीं। परिणामतः बनने वाले चार कोनेवाले (वर्ग) खुले स्थान में मकानों का निर्माणकार्य किया जाता था।

नगरों के दो अथवा अधिक विभाग होते थे। प्रत्येक विभाग का स्वतंत्र परकोटा होता था। उनमें 'कोट' के रूप में जाने वाले विभाग में नगर का प्रशासक रहता होगा। उसके चारों ओर के नगर में सामान्य लोग रहते थे।



करके देखो

किसी किले का सबसे भीतर वाला और सुरक्षित हिस्सा; जिसे किले की अंतःस्थली कहा जाता है; उसे बालाई किला कहते हैं। यह सामान्यतः किले में सबसे ऊँचे स्थान पर बाँधा जाता है। परिणामस्वरूप आस-पास के परिसर पर निगरानी और ध्यान रखना आसान हो जाता है और शत्रु के आक्रमण के समय यह अंतिम रक्षाबिंदु बन जाता है। बालाई किले में रजवाड़ा, दरबार, शस्त्रागार, अनाज का भंडार और मंदिर जैसे महत्वपूर्ण भवन होते हैं। रायगढ़ और राजगढ़ जैसे किलों में बालाई किले को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इन बालाई किलों में किसी एक बालाई किले का चित्र श्यामपट्ट पर अथवा अपनी कॉपी में बनाओ।

मोहेंजोदड़ो का महास्नानगृह इस कालखंड के स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है। महास्नानगृह और उसके आसपास के परिसर में कुछ धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। महास्नानगृह एक



मोहेंजोदड़ो का महास्नानगृह

विशाल जलकुंड है। इसकी लंबाई लगभग १२ मीटर, ७ मीटर चौड़ाई और २.५ मीटर गहराई है। यह जलकुंड पक्की ईंटों से बनाया गया है। जलकुंड में पानी भरने और पानी बाहर निकालने के लिए विशेष तकनीक का उपयोग किया गया था। उसके अगल-बगल में छोटे-छोटे कमरे थे।

भोजन पद्धति

लोगों के भोजन में गेहूँ, सत्तू, मटर, तिल, रागी, मसूर और विविध प्रकार की दालें मुख्य घटक थे। कुछ स्थानों पर दूध, मांस और मछली का भी सेवन किया जाता होगा, ऐसे प्रमाण मिलते हैं। अन्न पकाने के लिए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे। कुछ बर्तनों पर सुंदर रंगकार्य और नक्काशी भी पाई गई है। यह नक्काशी लाल रंग के बर्तनों पर काले रंग से बनाई जाती होगी। नक्काशी के नमूनों में मछली के खुरंड, एक-दूसरे में फँसे वृत्त, पीपल के पत्ते आदि प्रतीकों का समावेश है।



बर्तन



चर्चा करो

गेहूँ, चना, चावल, सत्तू, मसूर, उड़द, बाजरा आदि में से कौन-सा अनाज हड़प्पा कालखंड में था और कौन-सा नहीं था और नहीं था तो क्यों नहीं था, इसपर कक्षा में चर्चा करो।

वस्त्र और आभूषण

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के वस्त्र और आभूषण

उस कालखंड की तकनीक, सौंदर्यदृष्टि और जीवन शैली की जानकारी देते हैं। हड़प्पा कालखंड के लोगों ने कपास और रेशमी धागों से वस्त्र बनाए थे।



हड़प्पा संस्कृति के आभूषण

पुरातत्त्ववीय उत्खनन में प्राप्त हुई मुद्रा और शिल्प जैसे प्रमाणों के आधार पर उनकी वेशभूषा का अनुमान लगाया जा सकता है। पुरुष और महिला, दोनों के पहनावे में घुटनों तक का वस्त्र और उत्तरीय का समावेश था। हड़प्पा संस्कृति के लोग आभूषण गढ़ने में बहुत कुशल थे। वे मिट्टी के और चकमक के रंग-बिरंगे पत्थरों के, तांबा, चांदी और स्वर्ण के मनके बनाते थे। इन्हें अन्य देशों में, विशेष रूप से मेसोपोटामिया में बड़ी माँग थी। हड़प्पा संस्कृति के लोग हार (माला), कर्ण-आभूषण, बाजूबंद, चूड़ियाँ, अंगूठियाँ और करधनी जैसे आभूषणों का उपयोग करते थे।

व्यवसाय और व्यापार

हड़प्पा संस्कृति के लोग खेती कर विविध फसलें लेते थे। उन फसलों में गेहूँ, सत्तू प्रमुख फसलें थीं। हड़प्पा संस्कृति के लोगों को कपास ज्ञात था। हड़प्पा संस्कृति के कारीगर लोहा, काँसा, मिट्टी और स्वर्ण से वस्तुएँ बनाना, वस्त्र बुनना आदि व्यवसाय करते थे। मिट्टी के उत्तम-से-उत्तम बर्तन बनाते थे। नौकायन करना उन्हें मालूम था। परिणामतः उन्हें दूरस्थ व्यापार करना संभव था।



क्या तुम जानते हो?

कालीबंगन में संसार की सबसे पुरानी जुती हुई खेती की भूमि पाई गई है। कालीबंगन वर्तमान राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर बसा हुआ था।

इससे यह ध्यान में आता है कि कालीबंगन के लोग खेती में प्रगत थे। गेहूँ, सत्तू, चना जैसे अनाज की उपज करते थे। आज भी कालीबंगन परिसर में खेतीकार्य के लिए ऊँटों का उपयोग किया जाता है और विशेष बात तो यह है कि उनकी जुताई के निशान और हड़प्पाकालीन निशान में समानता पाई जाती है।

कालीबंगन की अन्य विशेषता यह है कि यहाँ अग्निकुंड पाए गए हैं। उनका उपयोग धार्मिक विधियों के



लिए किया जाता होगा। हड़प्पा संस्कृति के अन्य नगरों की भाँति यहाँ भी सुनियोजित धोवनजल व्यवस्था, ईंटों के मकान और मुद्राओं के नमूने पाए गए हैं।

हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने मात्र गाँव के अथवा पड़ोसी नगरों के साथ ही नहीं अपितु दूरस्थ देशों के साथ भी व्यापार स्थापित किया था। उन्होंने वर्तमान 'इराक' (मेसोपोटामिया), ईरान, इजिप्त प्रदेशों के साथ वस्तुओं का लेन-देन किया। वे मनके, आभूषण, मिट्टी के बर्तन और कपास बेचते उसके बदले में वे मूल्यवान पत्थर (नग) और अन्य वस्तुएँ लाते थे। उन वस्तुओं

में लंबे मनके, फायन्स और कार्नेलियन का समावेश था। फायन्स काँच की तरह होता है और मुख्यतः नीले, हरे और गाढ़े हरे-नीले रंग में बनाए जाते थे। हड़प्पा में तैयार किए जाने वाले फायन्स की चूड़ियाँ, मनके और आभूषण दक्षिण मेसोपोटामिया के सुमेर में व्यापारी मार्गों द्वारा बड़ी मात्रा में पहुँचते थे। इसके अतिरिक्त लाल रंग का हकीक (कार्नेलियन) रत्न भी होते थे। उससे लंबे और गोल मनके तैयार किए जाते थे। ये मनके मेसोपोटामिया में बेचे जाते थे। वहाँ उन मनकों का उपयोग आभूषणों और धार्मिक सामग्रियों में किया जाता था। इस व्यापार के माध्यम से हड़प्पा संस्कृति को आर्थिक संपन्नता प्राप्त हुई।



क्या तुम जानते हो?

सुमेर संस्कृति में प्रमुख देवता इनन्ना देवी थीं। मेसोपोटामिया के महाकाव्य में उल्लिखित पौराणिक कथाओं के आधार पर हमें हड़प्पाकालीन व्यापार के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अपने वैभव के प्रतीक के रूप में इनन्ना देवी लाजवर्दी



(लेपिस लाजुली) का उपयोग करती थीं। लाजवर्दी

नीले रंग वाला एक मूल्यवान पत्थर है। प्राचीन समय में लाजवर्दी अत्यंत दुर्लभ और मूल्यवान माना जाता था। इसकी अफगानिस्तान में खदानें थीं। हड़प्पाकालीन व्यापारी लाजवर्दी का व्यापार करते थे। इसकी मेसोपोटामिया में बहुत अधिक माँग थी। इनना की कथा के आधार पर पौराणिक कथाएँ इस इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती हैं क्योंकि इन कथाओं में तत्कालीन समाज, संस्कृति, धर्म और राजनीतिक परिस्थिति का प्रतिबिंब पाया जाता है।

उस कालखंड में लोथल शहा महत्वपूर्ण बंदरगाह था। यहाँ बड़ी विशाल गोदी पाई गई है। हड़प्पा संस्कृति का व्यापार अरब सागर के तट से ईरान की खाड़ी तक चलता था। हड़प्पा लोगों की मुद्राएँ मुख्य रूप से व्यापार हेतु उपयोग में लाई जाती होंगी। इन मुद्राओं पर बैल, हाथी, भैंस, गैंडा, बाघ जैसे प्राणियों तथा कई बार मनुष्य की आकृति भी देखने को मिलती है।



बताओ तो!

चित्र में दर्शाई हड़प्पाकालीन मुद्रा देखो। उसपर एक शृंग इस कल्पित प्राणी का चित्र दिखाई देता है। क्या तुमने कुछ वस्तुओं अथवा वास्तुओं पर ऐसे काल्पनिक प्राणी देखे हैं?



कला और मनोरंजन

हड़प्पा संस्कृति के लोग कलाप्रेमी और कुशल

कारीगर थे। उन्होंने मिट्टी, धातु और मूल्यवान पत्थरों का उपयोग कर अनेक सुंदर वस्तुओं का निर्माण किया था। हड़प्पा संस्कृति की एक कांस्य मूर्ति पाई गई है। वह मूर्ति 'नर्तकी' के रूप में जानी जाती है। इसके अतिरिक्त हड़प्पा लोगों ने प्राणियों की आकृतियाँ, खिलौने और मुद्राएँ तैयार की थीं। हड़प्पा संस्कृति की एक अत्यंत प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण वस्तु वहाँ पाया गया एक विशेषतापूर्ण पुतला (प्रतिमा) है। यह पुतला मोहेंजोदड़ो स्थान पर किए गए उत्खनन में पाया गया है। इस समय वह पुतला नई दिल्ली के राष्ट्रीय



हड़प्पाकालीन कला का नमूना

संग्रहालय में रखा गया है। यह पुतला शांत, गूढ़ और आदरणीय व्यक्तित्व को दर्शाता है। वह 'राजा धर्मगुरु' के रूप में जाना जाता है।



हड़प्पाकालीन मिट्टी के खिलौने



स्वाध्याय

प्र.१ अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनो:

१. हड़प्पा संस्कृति की खोज नदी तट पर हुई।

- अ) गंगा ब) यमुना
क) सिंधु ड) गोदावरी

२. हड़प्पा संस्कृति का महास्नानगृह स्थान पर पाया गया।

- अ) धोलावीरा ब) लोथल
क) कालीबंगन ड) मोहेंजोदड़ो

३. हड़प्पा संस्कृति के नगर में गोदी पाई गई है।

- अ) लोथल ब) राखीगढ़ी
क) बनावली ड) धोलावीरा

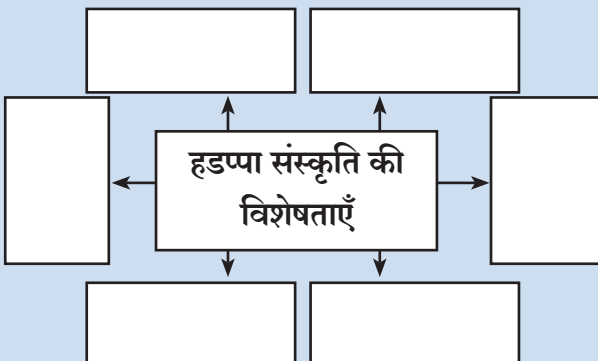
ब) सत्य अथवा असत्य लिखो :

१. हड़प्पा संस्कृति के विस्तार का प्रमुख कारण दूरस्थ प्रदेशों के साथ चलने वाला व्यापार था।

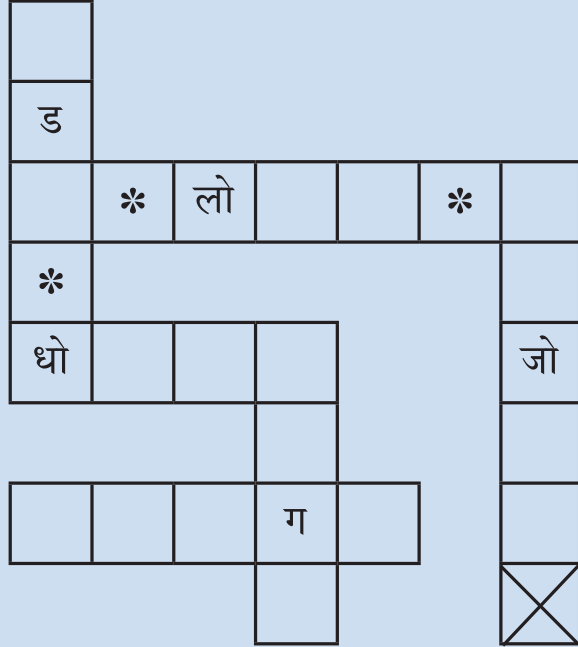
२. हड़प्पा संस्कृति के लोग सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं थे।

३. हड़प्पा संस्कृति के हास का एक कारण व्यापार का क्षीण होना था।

प्र.२ अ) संकल्पना चित्र पूर्ण करो :



ब) उत्खनन में पाए गए नगरों के नाम शब्द पहेली में पूर्ण करो :



प्र.३ टिप्पणियाँ लिखो :

- महास्नानगृह
- वस्त्र और आभूषण
- कला और मनोरंजन

प्र.४ पाठ में दिए गए मानचित्रों का निरीक्षण करो और प्रश्नों के उत्तर लिखो।

- भारत के राजस्थान राज्य में हड़प्पा संस्कृति के किसी भी एक स्थान का नाम लिखो।
- भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा के बाहर हड़प्पा संस्कृति के किसी भी एक स्थान का नाम लिखो।
- हड़प्पा संस्कृति का मंडा स्थान किस नदी के तट पर है?
- हड़प्पा संस्कृति का दायमाबाद स्थान वर्तमान समय में भारत के किस राज्य में है?

प्र.५ निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखो।

१. हड़प्पा संस्कृति की सूत्रबद्ध नगररचना वर्तमान समय में महानगरों के नियोजन हेतु किस प्रकार आदर्श सिद्ध हो सकती है? उदाहरण सहित स्पष्ट करो।
२. हड़प्पा संस्कृति की नगरीय अर्थव्यवस्था का लोप क्यों हुआ?

कृति-

- मिट्टी, कीचड़, ईंटें आदि सामग्री का उपयोग कर हड़प्पा संस्कृति के किसी उत्खनन स्थान की प्रतिकृति तैयार करो।
- हड़प्पा, मोहेंजोदड़ो, लोथल, धोलावीरा, राखीगढ़ी के विषय में जानकारी प्राप्त कर इस विषय में तुम्हारे परिसर में कौन-से परिवर्तन दिखाई देते हैं; इसपर कक्षा में विचार-विनिमय करो।

उपक्रम

१. हड़प्पाकालीन सुनियोजित नगर, मकान, सड़कें, जलप्रबंधन, धोवनजल व्यवस्था की प्रतिकृति तैयार करो।
२. महाराष्ट्र शासन के <https://water.maharashtra.gov.in/en/scheme/sant-gadgebaba-gram-swachhta-abhiyan/> संकेतस्थल से संत गाडगेबाबा ग्राम स्वच्छता अभियान की जानकारी प्राप्त कर कक्षा में प्रस्तुत करो।



वैदिक संस्कृति



४.१ वैदिक वाङ्मय

४.२ वैदिक कालीन लोकजीवन

क्या तुम कभी सुडोकू खेल खेले हो?

सुडोकू खेल तर्कशक्ति और संख्या ज्ञान का सुंदर समन्वय होता है। यह खेल पूर्णतः आधुनिक समय में निर्माण किया गया है। निम्न चौखट में १ से ९ अंक इस प्रकार लिखो कि प्रत्येक खड़ी और आड़ी रेखा में प्रत्येक अंक एक ही बार आएगा।

८		३		७		२	४	
१				२	५		७	८
		५	६			९		
२			९				६	
	९	८				५	३	
	३				८			७
		१			२	४		
९	५		७	४				१
	८	६		३		७		९

अब सोचो, हजारों वर्ष पूर्व, जब कंप्यूटर नहीं थे, कैलक्यूलेटर नहीं थे, उस समय भी प्राचीन काल से भारत में गणित की परंपरा चली आ रही थी। शंकराचार्य, श्री भारती कृष्ण तीर्थ द्वारा लिखित 'वैदिक गणित' पुस्तक में कुछ सूत्र प्रस्तुत किए गए हैं। इन सूत्रों द्वारा बड़ी-बड़ी संख्याओं के उदाहरण एक ही क्षण में हल किए जा सकते थे।

हमें ९८ x ९९ का उदाहरण हल करना है।

वैदिक गणित की पुस्तक में एक सूत्र है 'निखिलं नवतश्चरमः दशतः' इस सूत्र के अनुसार –

क्रम १

$$९८ - १०० (\text{आधार}) = -०२$$

$$९९ - १०० (\text{आधार}) = -०१$$

क्रम २

$$९८ \quad \swarrow \quad \searrow \quad -०२$$

$$९९ \quad \swarrow \quad \searrow \quad -०१$$

अतः गुणा ९७०२

(तिरछा - घटाव करो, तुम्हें समान उत्तर मिलेगा।

उत्तर ९७ है। यह उत्तर बाईं ओर लिखो और

$$(-०२) \times (-०१) = ०२ \text{ यह उत्तर ९७ लिखो})$$

$$\text{उत्तर : } ९८ \times ९९ = ९७०२$$

जिस कालखंड में, बिजली, संगणक और मोबाईल नहीं थे; उस कालखंड में ज्ञान और विज्ञान में प्रगत संस्कृति हमारे देश में थी। वैदिक संस्कृति हमारे भारत देश की प्राचीन और संपन्न संस्कृति है। उस कालखंड के लोग कैसे रहते थे, क्या पढ़ते-सीखते थे, उनकी जीवन शैली कैसी थी, इसका सुंदर वर्णन 'वेद' ग्रंथों में दिया है।

वैदिक संस्कृति के लोगों को ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ होगा ?

वेद क्या हैं?

उस कालखंड में समाज रचना कैसी थी?

क्या वैदिक परंपराएँ अभी भी जीवित हैं?

क्या उन लोगों को गणित, विज्ञान, योग, आयुर्वेद जैसे अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त था?

चलो, हम मालूम करेंगे – यह ज्ञान कहाँ से आया और हमें क्या बताया गया ?

४.१ वैदिक वाङ्मय

‘विद्’ का अर्थ ज्ञात करना/जानना है। इस शब्द से ‘वेद’ संज्ञा बनी। इसका अर्थ ‘ज्ञान’ होता है। वैदिक साहित्य भारत के प्राचीन समय के सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते हैं। ये साहित्य मुख्य रूप से वेदों में संगृहीत किए गए हैं। वेद प्राचीन समय के ज्ञान, धर्म, दर्शन और

जीवन शैली के प्रमुख स्रोत हैं। वेदों में समाहित ऋचाएँ ऋषियों द्वारा प्रस्फुटित हुईं। वेदों में समाविष्ट कुछ सूक्त स्त्रियों द्वारा भी रचे गए हैं।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार वेद हैं। वेद संस्कृत भाषा में रचे गए हैं। ये मुख्यतः मंत्र, स्तुति, यज्ञविधि, दर्शन और समाज जीवन से संबंधित हैं। ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है।

इन चार वेदों को ‘संहिता’ कहते हैं। संहिताओं की रचना के पश्चात प्रत्येक वेद के लिए ब्राह्मणग्रंथों, आरण्यकों और उपनिषदों की रचना की गई। इनका भी वेद वाङ्मय में समावेश होता है।

ब्राह्मण ग्रंथ – ब्राह्मण ग्रंथ वेदों का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। ये ग्रंथ मुख्यतः यज्ञ, पूजन और धार्मिक अनुष्ठान से संबंधित हैं। यज्ञ कैसे करें, किन मंत्रों का उच्चारण करें और उनके पीछे क्या उद्देश्य है, इसका विस्तारपूर्वक वर्णन इन ग्रंथों में किया गया है।

आरण्यक – ‘आरण्यक’ शब्द ‘अरण्य’ अर्थात् वन शब्द से बना है क्योंकि ये ग्रंथ अरण्य में रहने वाले साधकों के लिए रचे गए हैं। इन ग्रंथों में यज्ञों के गूढ़ अर्थों, ध्यान, साधना और आत्मज्ञान के संबंध में विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

नीचे दी गई सारिणी को कक्षा में एकत्रित पढ़ो। इसके द्वारा तुम इन चार वेदों के मुख्य विषय, उनकी विशेषताएँ और महत्त्व को आसानी से समझोगे।

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
मुख्य विषय – मंत्र, देवताओं का स्तवन (स्तुतिगान)	मुख्य विषय – यज्ञ, हवन, धार्मिक अनुष्ठान	मुख्य विषय – मंत्र पठन	मुख्य विषय – जीवनशैली, कृषि, औषधोपचार
विशेषताएँ – अग्नि, इंद्र, वरुण जैसे देवताओं के स्तोत्र	विशेषताएँ – यज्ञकर्म, हवन पद्धति	विशेषताएँ – मंत्रों का छंदोबद्ध गायन	विशेषताएँ – औषधोपचार, घरेलू हवन पद्धति
महत्त्व – प्राचीन वेद, देवताओं का स्तुतिगान और यज्ञ का महत्त्व सिखाते हैं।	महत्त्व – धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक आचार-विचार सिखाता है।	महत्त्व – संगीत और मंत्रों का अध्ययन।	महत्त्व – स्वास्थ्य, घरेलू जीवन-जीवनोपयोगी ज्ञान का मार्गदर्शन करता है।

उपनिषदे – ‘उपनिषद’ शब्द का अर्थ है गुरु के पास बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। इस ग्रंथ में आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म और विश्व का तात्त्विक ज्ञान बताया गया है। उपनिषदों में दैनिक जीवन के दूसरी तरफ जाकर व्यावहारिक ज्ञान पर जोर दिया गया है।



बताओ तो!

१. इस वेद में मुख्यतः देवताओं के स्तवन हैं। इनमें प्रकृति देवताओं का वर्णन है।

उत्तर -----

२. इस वेद में यज्ञ करने की विधि और पद्धति दी गई है।

उत्तर -----

३. इस वेद के स्तवन स्वरबद्ध किए जाते थे। इसके श्लोक संगीत के साथ गाए जाते थे।

उत्तर -----

४. यह वेद ‘सामान्य लोगों के जीवन से संबंधित वेद’ माना जाता है क्योंकि इसमें स्वास्थ्य और घरेलू उपायों का उल्लेख है।

उत्तर -----

४.२ वैदिककालीन जनजीवन

वैदिक कालखंड को दो भागों में बाँटा जाता है – वैदिक कालखंड (इसी को ऋग्वेद कालखंड भी कहा जाता है) और उत्तर ऋग्वेद कालखंड।

पूर्व वैदिक कालखंड लगभग ईसा पूर्व १५०० से ईसा पूर्व १००० माना जाता है। इस कालखंड की जानकारी ऋग्वेद द्वारा प्राप्त होती है। इस कालखंड का जनजीवन पशुपालन पर निर्भर था। धीरे-धीरे खेती करना आरंभ हुआ। उस कालखंड में गाय को मुख्य संपत्ति माना जाता था।

उत्तर वैदिक कालखंड ईसा पूर्व १००० से ईसा पूर्व ६०० माना जाता है। इस कालखंड में वैदिक लोगों ने गंगा नदी की घाटी में स्थलांतरण किया और वहीं पर स्थायी रूप में निवास करने लगे। कृषि,

व्यापार और हस्तकला का अधिक विकास हुआ। इसी कालखंड में नगरों का उदय होने लगा था।

वैदिक काल

पूर्व वैदिक कालखंड

ईसा.पूर्व लगभग १५००
से ई.स.पूर्व १०००

उत्तर वैदिक कालखंड

ईसा.पूर्व लगभग १०००
से ई.स.पूर्व ६००

परिवार और समाज रचना

वैदिक कालखंड में परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई थी। प्रत्येक परिवार में माता-पिता, बच्चे, दादा-दादी और अन्य रिश्तेदार इकट्ठे रहते थे। वर्तमान समय की तरह उस समय भी समाज पितृसत्तात्मक था अर्थात् परिवार के सभी निर्णय करने का अधिकार परिवार के प्रमुख को प्राप्त था। परिवार के प्रमुख व्यक्ति को ‘गृहपति’ कहा जाता था। परिवार के अन्य सदस्य परिवार के प्रमुख व्यक्ति के आदेश का पालन करते थे। **अनेक परिवार मिलकर ग्रामबस्ती (गाँव) बन जाती थी और अनेक गाँवों को मिलाकर ‘जन’ (राज्य) बनता था।** गाँव के प्रमुख को ‘ग्रामणी’ और राज्य के प्रमुख को ‘राजा’ कहते थे। समाज में सभी के लिए धर्म, सत्य और न्याय का पालन करना आवश्यक था। लोग एक-दूसरे के साथ सहयोग और प्रेमभाव से रहते थे। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को विशेष दायित्व और स्थान प्राप्त था। वैदिक समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण थे।

शिक्षा और संस्कार

वैदिक कालखंड में समाज में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। विद्यार्थियों को गुरुकुल पद्धति द्वारा शिक्षा दी जाती थी अर्थात् वे गुरु के आश्रम में रहकर पढ़ते थे। गुरु के सम्मुख बैठकर अध्ययन करते। गुरुकुल में विद्यार्थियों को अनुशासनबद्ध जीवनयापन करना सिखाया जाता था जिससे वे ज्ञान, नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा का आदर्श लेकर समाज में कार्य करेंगे। गुरु आदर्श जीवन जीने के मार्गदर्शक थे। विद्यार्थी वेद,



गुरुकुल

गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, नीतिशास्त्र और युद्धकला का अध्ययन करते थे। शिक्षा का उद्देश्य मात्र ज्ञान प्राप्ति नहीं था अपितु विनम्रता, अनुशासन, धर्म और आत्मनियंत्रण जैसे मूल्यों को आत्मसात करना था।



सोचो

यदि तुम गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते होते तो तुम्हारी दिनचर्या क्या होती? इसपर एक निबंध लिखो।



करके देखो

प्राचीन भारतीय साहित्य की कथाएँ इतिहास और संस्कृति के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालने हेतु उपयोगी होती हैं। उनके द्वारा समाज की संरचना और तत्कालीन जीवनावश्यक मूल्यों को समझने में सहायता प्राप्त होती है। तुम भी कुछ कथाएँ ढूँढ़ो और कक्षा में उनकी नाट्यपूर्ण प्रस्तुति करो।

आश्रम व्यवस्था

प्राचीन भारत की वैदिक संस्कृति में आश्रम व्यवस्था अस्तित्व में थी। इस व्यवस्था में व्यक्ति जीवन के चार चरण माने गए हैं। प्रत्येक आश्रम के विशिष्ट कर्तव्य और उद्देश्य दिए जाते थे।

चार आश्रम

ब्रह्मचर्याश्रम – ब्रह्मचर्याश्रम को जीवन का प्रथम चरण माना गया है। इस चरण में बच्चों को गुरुओं

के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक था। इस चरण में विद्यार्थी मन लगाकर अध्ययन करते थे।

गृहस्थाश्रम – शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। गृहस्थाश्रम में विवाह, पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करना जैसी बातों का महत्त्व होता था।

वानप्रस्थाश्रम – गृहस्थाश्रम में रहकर अपने सारे दायित्वों को पूर्ण करने के पश्चात आयु के निश्चित चरण में व्यक्ति द्वारा परिवार से अलग होकर तपश्चर्या और चिंतन-मनन करना अपेक्षित था।

संन्यासाश्रम – संन्यासाश्रम को जीवन का अंतिम चरण माना गया था। इस चरण में मनुष्य को सभी रिश्तों-नातों का त्याग करके मानव जीवन का अर्थ समझने के लिए जीना चाहिए, बहुत समय तक एक स्थान पर नहीं रहना चाहिए; यह संकेत था।



करके देखो

'आश्रम व्यवस्था पर आधारित जीवन पद्धति के चार चरण' विषय पर भित्तिपत्र तैयार करो। प्रत्येक चरण का चित्र, उसके कर्तव्य और महत्त्व की जानकारी लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करो।

वैदिक कालखंड के लोगों का जीवन सीधा-सादा परंतु अनुशासित था। लोगों को सत्य, संयम, उदारता जैसे मूल्यों का पालन करने का महत्त्व सिखाया जाता था। समाज में एकता, सहयोग और एक-दूसरे के प्रति आदर करने को महत्त्व दिया जाता था। लोग ऋतुओं के अनुसार आने वाले उत्सव, यज्ञ, गीत-संगीत और नृत्य के माध्यम से जीवन का आनंद उठाते थे। अन्न को बरबाद न करना, निर्धनों की सहायता करना, अनुशासनबद्ध जीवनयापन करना नैतिक मूल्यों के अंग थे। इन नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज में सकारात्मक संस्कार स्थापित होते थे और उनके आधार पर व्यक्तित्व परिपक्व हो जाता था। वैदिक जीवनशैली प्रकृति से सुसंगति स्थापित करने वाली और परिश्रम प्रधान थी।

तुम्हारा मत क्या है?

आश्रम व्यवस्था के कारण मनुष्य के जीवन में नियोजन, व्यवस्थापन, संयम और कर्तव्य का बोध निर्माण होने में सहायता प्राप्त होती थी।

दैनिक जीवन

वैदिक समय के लोगों का भोजन सादा और पौष्टिक था। उस समय में लोग कृषि और पशुपालन पर निर्भर थे। परिणामतः उनके भोजन-आहार में अनाज, दूध, दही, घी, शहद, फल और सब्जियों का समावेश था। सत्तू, गेहूँ, चावल, बाजरा आदि अनाजों का वे अपने भोजन में उपयोग करते थे। इसी प्रकार वनस्पतिजन्य अन्न का भी उपयोग किया जाता था। वे ऋतुओं के अनुसार फल खाते थे। अन्न शुद्ध और सात्विक हो तथा उचित समय पर अन्न ग्रहण करें जैसे सामान्य नियम थे। कुल मिलाकर उनकी आहार पद्धति आरोग्यदायी और नियमितता पर आधारित थी।



थोड़ा सोचो

तुम्हारी दिनचर्या में सुबह उठने का समय, भोजन, व्यायाम, अध्ययन और विश्राम में नियमितता होनी चाहिए, इस विषय में तुम्हारा क्या मत है?

वैदिक जनजीवन में स्वास्थ्य को अधिक महत्त्व दिया जाता था। प्राचीन भारत के वैद्यक शास्त्र में रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने के लिए संतुलित आहार, योग और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर बल दिया गया। परिणामतः लोग दीर्घायु थे और नीरोगी जीवन जीते थे।



करके देखो

परिवार में एक दिन का भोजन बनाने का आयोजन स्वयं करो। उसमें कौन-से खाद्य पदार्थ स्वास्थ्यप्रद हैं और क्यों? इस विषय पर परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करो।

मनोरंजन की दृष्टि से वैदिक लोग लोकसंगीत, नृत्य, गायन, वाद्यवादन, कहानीकथन, सैद्धांतिक

विचार-विमर्श करना जैसी बातों में रममाण होते थे। वे धनुर्विद्या, रथशास्त्र, मल्लयुद्ध, चौसर-चौपड़ जैसे खेल खेलते थे। उत्सव, धार्मिक मेले सामाजिक एकता और मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।

वैदिक समय में संगीत को अत्यंत महत्त्व प्राप्त था। संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं था अपितु वैदिक पठन में स्वरों को बहुत महत्त्व था। संगीत को धार्मिक, आध्यात्मिक तथा जनजीवन का अभिन्न हिस्सा माना जाता था। मंत्रोच्चारण के लिए स्वरों का ज्ञान होना आवश्यक था। उसका विचार सामवेद में किया गया है। उस समय वीणा, मृदंग, शंख और बाँसुरी जैसे वाद्य उपयोग में लाए जाते थे। इन वाद्यों का उपयोग यज्ञ, नृत्य और धार्मिक अनुष्ठानों के अवसरों पर किया जाता था। गायन और नृत्य में पुरुष और स्त्रियाँ सम्मिलित होते थे। वैदिक समय में संगीत भक्ति, आनंद और आध्यात्मिकता का प्रतीक था। इसी के आधार पर कालांतर में भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा विकसित हुई।

स्त्रियों का स्थान : वैदिक पूर्व समय में स्त्रियों को समाज में समानता का स्थान प्राप्त था। उन्हें पुरुषों के समान ही वेदों का अध्ययन करने की स्वतंत्रता थी। अनेक स्त्रियाँ विदुषी के रूप में विख्यात थीं। उस समय की लोपामुद्रा, घोषा, गार्गी, मैत्रेयी, अपाला के उदाहरण प्रसिद्ध विदुषियों के रूप में दिए जा सकते हैं। स्त्रियाँ धार्मिक विधियों, यज्ञ-याग में सक्रियता के साथ हिस्सा लेती थीं परंतु उत्तर वैदिक समय में समाज पितृसत्तात्मक बना। स्त्रियों के शिक्षा ग्रहण करने पर बंधन आ गए और उनकी स्वतंत्रता घट गई। धीरे-धीरे उनपर बंधन बढ़ते गए। परिवार और समाज में उनका स्थान अधिकाधिक गौण होता गया।

आर्थिक जीवन : इस कालखंड में लोगों का जीवन मुख्यतः कृषि और पशुपालन पर निर्भर था। वे गेहूँ, सत्तू, चावल और अन्य अनाज उगाते थे। वैदिक समय में पशुओं को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

गाय, बैल, घोड़े, भेड़-बकरियाँ प्रमुख प्राणी थे। गाय लेन-देन का साधन थी। युद्ध और यज्ञकर्म में घोड़ों का उपयोग किया जाता था। जुताई और परिवहन के लिए बैलों का उपयोग किया जाता था।

कृषि के अतिरिक्त दूसरे कई व्यवसाय प्रचलित थे। पशुपालन, धातुकार्य, कुम्हारकार्य, बुनाई, स्वर्णकार्य और रथनिर्माण जैसे कुछ महत्वपूर्ण उद्योग चलते थे। व्यापार धीरे-धीरे विकसित हो रहा था। वस्तु विनिमय पद्धति द्वारा व्यवहार किए जाते थे। कुछ स्थानों पर छोटे बाजार निर्माण हुए। नौका और नदी मार्ग द्वारा व्यापार किए जाने के उल्लेख भी पाए जाते हैं। व्यवसायी और कारीगर समाज व्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक थे। उनके स्वतंत्र संघ बने और वे 'श्रेणी' नाम से जाने जाते थे। उनके प्रमुख को 'श्रेष्ठी' कहते थे।

धार्मिक जीवन : वैदिक समय के लोगों का धर्म प्रकृति पूजा पर आधारित था। वैदिक लोगों ने प्रकृति के घटकों को देवताओं का स्थान दिया था। जैसे - अग्नि, वरुण, मरुत (वायु), सूर्य, उषा (प्रातः), पृथ्वी, सोम (चंद्र)। सबसे बलवान देवता इंद्र को माना जाता था। यज्ञ में अर्पित की गई हवि (आहुति) अग्नि के माध्यम से देवताओं तक पहुँच जाती है, ऐसा माना जाता था। यज्ञ में अन्न, घी और अनाज की हवि अर्पित की जाती थी। वैदिक मंत्रों का पठन कर देवताओं को प्रसन्न किया जाता था। धर्म की नींव सत्य, न्याय, 'ऋत' अर्थात् प्रकृतिचक्र अबाधित रखने पर आधारित थी।



क्या तुम जानते हो?

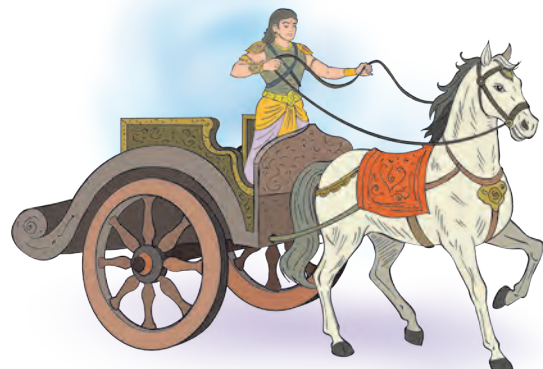
भारतीय नौसेना के बोध चिह्न पर अंकित 'शं नो वरुणः' यह घोष वाक्य उपनिषद् के श्लोक पर आधारित है। इस वाक्य का अर्थ यह है कि 'वरुण देवता हमारी रक्षा करें'। नौसेना के इस घोष वाक्य के माध्यम से जल के नियंत्रक और समुद्री मार्गदर्शक वरुण देवता का सम्मान किया गया है। भारत को

स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात नौसेना प्रमुख का बोध चिह्न निश्चित करते समय तत्कालीन गवर्नर जनरल सी. गोपालाचारी ने यह घोष वाक्य सुझाया था। भारतीय नौसेना का नया चिह्न छत्रपति शिवाजी महाराज की राजमुद्रा से प्रेरित है।



राजनीतिक व्यवस्था : वैदिक समय में समाज में राजा का स्थान महत्वपूर्ण था। राजा केवल सत्ताधारी नहीं बल्कि वह धर्म और न्याय का पालनकर्ता होना चाहिए; ऐसे आदर्श राजा की कल्पना की गई थी। राजा द्वारा निर्णय सुनाते समय उसे परामर्श देने के लिए दो संस्थाएँ कार्य करती थीं। उन्हें 'सभा' और 'समिति' नाम से संबोधित किया जाता था। सभा वरिष्ठ लोगों का मंडल था जो महत्वपूर्ण निर्णय लेने में राजा को सहयोग देता था और समिति ग्राम अथवा समुदाय के सामान्य लोगों की उपस्थिति में विचार-विनिमय करने के लिए आयोजित की गई बैठक थी। इनके अतिरिक्त 'विदथ' और 'जन' संस्था भी राजा को मार्गदर्शन करती थीं। सभा और 'विदथ' संस्थाओं के कार्यों में स्त्रियों का भी सहभाग होता था।

राज्य के प्रशासन को उत्तम ढंग से चलाने में सहायता



वेदकालीन रथ

करने हेतु राजा द्वारा अधिकारी नियुक्त किए जाते थे। उनमें **पुरोहित, सेनापति और सभापति विशेष महत्वपूर्ण अधिकारी थे।** राजस्व वसूल करने के लिए नियुक्त अधिकारी को 'भागदुघ' कहते थे। 'जन' की आय से राजा का भाग इकट्ठा करने वाले को भागदुघ कहते थे। युद्ध के समय राजा स्वयं सेना का नेतृत्व

करता था। राज्य का प्रशासन मुख्यतः धर्म, न्याय, रक्षण और समाज की सुव्यवस्था सिद्धांतों पर आधारित था।

वैदिक समय में यद्यपि राजा राज्य का प्रमुख होता था, परंतु उसे सारे अधिकार प्राप्त नहीं थे। उसे सभा और समिति के परामर्श से राज्य का प्रशासन चलाना पड़ता था।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) एक शब्द में उत्तर लिखो।

१. 'विद' अर्थात् -----
२. गुरु के निकट बैठकर ज्ञान प्राप्त करना अर्थात्
३. वरिष्ठ लोगों का मंडल अर्थात् -----

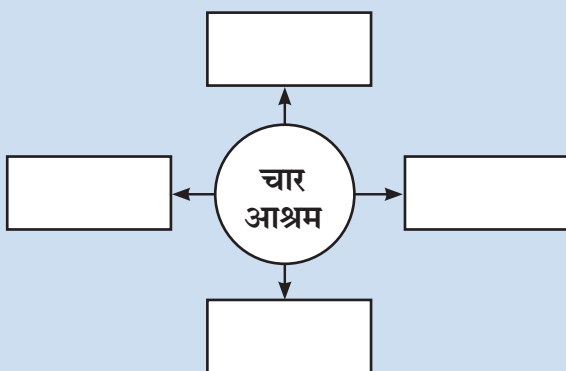
ब) जोड़ियाँ मिलाओ।

'अ' गुट

'ब' गुट

- | | |
|-------------|---|
| १) ऋग्वेद | अ) यज्ञ में किए जाने वाले मंत्रों का गायन |
| २) यजुर्वेद | ब) स्वास्थ्य और औषधोपचार |
| ३) सामवेद | क) देवताओं का स्तवन |
| ४) अथर्ववेद | ड) यज्ञ विधि का वर्णन |

प्र.२ अ) संकल्पना चित्र पूर्ण करो



ब) टिप्पणियाँ लिखो

१. वैदिक समय की शिक्षा व्यवस्था
२. वैदिक समय का आर्थिक जीवन
३. वैदिक समाज में स्त्रियों का स्थान

प्र.३ अ) निम्न कथन कारण सहित स्पष्ट करो

१. वैदिक संस्कृति में कृषि को महत्व प्राप्त था।
२. वैदिक समय के समाज में स्त्रियों का स्थान सम्मानपूर्ण था।

ब) वैदिक समय के मनोरंजन के साधन और वर्तमान समय के मनोरंजन के साधनों के बीच समानता और अंतर के मुद्दे लिखो।

प्र.४ वैदिक समय की राजनीतिक व्यवस्था को लेकर सारिणी पूर्ण करो

पद/संस्था	कार्य
सभा	-----
समिति	-----
भागदुघ	-----

प्र.५ योग साधना करने के पश्चात् हमारी जीवन शैली में कौन-से परिवर्तन आ सकते हैं?

उपक्रम

- मन-ही-मन शिक्षा प्राप्त करने की लगन जिस शिष्य में थी, उस एकलव्य की कहानी का नाट्यीकरण प्रस्तुत करो।
- अंतरजाल की सहायता से वेदों के श्लोकों का संग्रह बनाओ।
- भारतीय वायुसेना और थल सेना के बोध चिह्नों और घोष वाक्यों को प्राप्त कर उन्हें उपक्रम कॉपी में लिखो।





विविध धर्मों की सीख



५.१. वैदिक धर्म

५.२. जैन धर्म

५.३. बौद्ध धर्म

५.४. ज्यू धर्म

५.५. ईसाई धर्म

५.६. इस्लाम धर्म

५.७. पारसी धर्म

भारत धार्मिक विविधताओं से परिपूर्ण देश है। प्राचीन समय से भारत में विविध धर्मों का उद्गम और विस्तार हुआ है। भारतीय संस्कृति में वैदिक, जैन, बौद्ध, ज्यू, ईसाई, इस्लाम और पारसी धर्मों का महत्वपूर्ण स्थान है। आगे चलकर मध्ययुगीन समय में सिख धर्म की स्थापना हुई। प्रत्येक धर्म की सीख में मूलभूत जीवनमूल्य, सहिष्णुता, न्याय और नैतिकता पर बल दिया गया है।

यह धार्मिक विविधता भारतीय संस्कृति को अलग पहचान देती है। सर्वसमावेशिता भारतीय संस्कृति का अंगभूत गुण है। इसी गुण के कारण देश की विविधता में बसी एकता अभी तक बनी हुई है।

प्राचीन भारत में किन धर्मों का प्रसार हुआ?

इन विभिन्न धर्मों के दर्शन हमें क्या सिखाते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए इस पाठ में हम प्राचीन भारत के विविध धर्मों के दर्शन, सिद्धांत और सीख तथा उन धर्मों की पद्धतियों का परिचय प्राप्त करेंगे।

प्राचीन भारत में धर्म का अस्तित्व व्यक्तिगत श्रद्धा की अपेक्षा अधिक व्यापक विचार को महत्व देता था। उसमें जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति, सत्य की खोज और सहिष्णुता को अधिक महत्व प्राप्त था। प्राचीन भारत में अनेक धर्मों का प्रसार हुआ। वैदिक

धर्म श्रुति अर्थात् वेद और स्मृति अर्थात् वेदों पर आधारित वैदिक साहित्य और पुराणों के अनुसार आचरण करता है। जैन और बौद्ध धर्म प्राचीन धर्मधाराएँ हैं। ई.स. की प्रथम शताब्दी में ज्यू और ईसाई धर्म का भारत में प्रवेश हुआ। इस्लाम और पारसी धर्म के मतावलंबी ई.स. की सामान्यतः सातवीं-आठवीं शताब्दी में भारत में आए।



सोचो

हमारे परिवार में मनाए जाने वाले धार्मिक त्योहार, पूजा, प्रथा-परंपराओं के बारे में अपने दादा-दादी अथवा माता-पिता से मालूम करो। इन पर्वों-त्योहारों को मनाने, प्रथा-परंपराओं का पालन करने के पीछे कौन-से तर्कयुक्त कारण हो सकते हैं, इस विषय में उनके साथ चर्चा करो।

५.१. वैदिक धर्म

भारत में वैदिक धर्म सबसे अति प्राचीन धर्म माना जाता है। वेद वाङ्मय इस धर्म का मौलिक आधार है। वैदिक लोग यज्ञ, प्रकृतिपूजन और उसके लिए वेदों के मंत्रों द्वारा हवि अर्पण करते थे। प्राचीन भारत के सामान्य लोगों का जीवन सीधा-सादा था तथा धर्म और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। जैसे- सत्यवचन,

परिवार के बड़े-बुजुर्गों का आदर करना, रिश्तों का सम्मान करना, दूसरे को चोट अथवा दुख पहुँचे, ऐसा आचरण न करना; इन बातों पर बल दिया जाता था। कालांतर में ये नियम अधिक क्लिष्ट और उलझन भरे हो गए।

वैदिक धर्म के प्रमुख ग्रंथों में वेद, उपनिषद्, पुराण और धर्मशास्त्रों का समावेश है। वेदों में यज्ञ, मंत्र और देवताओं की जानकारी दी है। उपनिषदों के तत्त्वज्ञान में आत्मा, ब्रह्म, जीवन का उद्देश्य और मोक्ष की चर्चा की गई है। इसके अनुसार मानव जीवन, प्रकृति और विश्व एक ही 'परब्रह्म' का आविष्कार है। उसी को 'तत्' कहा जाता है। यह विचार दो प्रसिद्ध वाक्यों में प्रस्तुत किया गया है।

वे दो वाक्य इस प्रकार हैं :

अहं ब्रह्मास्मि – मैं ब्रह्म हूँ।

तत् त्वम् असि – तुम भी वही हो। (तुम तत् हो)

हिंदू धर्म वैदिक धर्म का अधिक व्यापक रूप है। हिंदू धर्म ने वेदों के ज्ञान का रक्षण किया तथा भक्ति, दर्शन और मोक्ष कल्पना का भी विचार प्रचलित किया। हिंदू धर्म में यह माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति के कर्म पर उसका भविष्य निर्भर करता है। धर्म का अर्थ केवल धार्मिक विधि नहीं है बल्कि सत्य, नैतिकता, कर्तव्य पालन और समाज सेवा मूल्यों का पालन करना व्यक्ति का प्रकृति प्रदत्त धर्म है। इन मूल्यों के अनुसार आचरण करना ही धर्म का पालन करना है। यज्ञ-होम-हवन, उपासना-पूजा पाठ करना, पर्व और उत्सव मनाना हिंदू धर्म की जीवन शैली के अंग हैं। हिंदू जीवन शैली में धर्म का पालन करने और दैनिक जीवन में किए जाने वाले व्यवहार के बीच उत्तम समन्वय स्थापित किया गया है। प्राचीन भारतीय समाज में विकसित हुए संस्कृति, कला, साहित्य और विज्ञान के बीच भी धर्मजीवन और व्यावहारिकता का रखा गया समन्वय दिखाई देता है।

हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ 'भगवद्गीता' है। फल की

आशा न करते हुए प्रत्येक को अपना-अपना कर्तव्य पूर्ण करना चाहिए, ऐसा इस ग्रंथ में कहा गया है। ई.स. की आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य हुए। उन्होंने ज्ञान और वैराग्य पर बल दिया। उन्होंने 'उपनिषद्', 'ब्रह्म सूत्र' और 'भगवद्गीता' ग्रंथों पर टीका (भाष्य) लिखकर उनका अर्थ स्पष्ट किया। उन्होंने भारत की चार दिशाओं में बदरीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथपुरी और शृंगेरी में चार मठों की स्थापना की।



आदि शंकराचार्य

सर्वे भवन्तु सुखिनः – सभी सुखी बनें।

सर्वे सन्तु निरामयाः – सभी रोगमुक्त रहें।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः – सभी को कल्याणकारी अनुभव प्राप्त हों।

मा कश्चिद्दुःखभागभवेत् – कोई भी दुखी न रहे।

इन संस्कृत श्लोकों की पंक्तियों में सभी प्राणिमात्रों का कल्याण हो, यह विचार और उनके प्रति करुणा व्यक्त की गई है।



करके देखो

‘सात दिनों में तुमने जो अच्छे कार्य किए हैं’ उन्हें तुम अपनी अंकन कॉपी में लिखकर रखो। जैसे- मित्र की सहायता की, घर की साफ-सफाई की, पेड़ों को पानी दिया आदि। सप्ताह के अंत में कक्षा में यह बताओ कि ये कार्य करते समय मुझे क्या सीखने को मिला?



क्या तुम जानते हो?

भारतीय दर्शन शास्त्र की परंपरा में विविध विचारधाराओं से छह प्रमुख विचार धाराएँ निर्माण हुई हैं। उन्हें 'षड्दर्शन' कहते हैं। भारतीय दर्शन में इन छह विचार धाराओं अर्थात् दर्शनों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 'दर्शन' शब्द का अर्थ तत्त्वज्ञान है।

षड्दर्शनों में सांख्य, योग्य, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा और वेदांत, इन छह दर्शनों का समावेश होता है। इन दर्शनों में विश्व तत्त्वज्ञान, सृष्टि, आत्मा और मोक्ष जैसे मौलिक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़े जाते हैं।

१. **सांख्य दर्शन** : विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका स्पष्टीकरण इस दर्शन में दिया गया है।
२. **योग दर्शन** : यह दर्शन निरामय शरीर के लिए साधना और ध्यान द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करने पर बल देता है।
३. **न्याय दर्शन** : यह दर्शन तर्कशास्त्र और ज्ञान पर आधारित है।
४. **वैशेषिक दर्शन** : विश्व अणुओं से बना है, यह इस दर्शन का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है।
५. **पूर्वमीमांसा दर्शन** : यह दर्शन वेदों में उल्लिखित कर्मकांड का विश्लेषण करता है।
६. **वेदांत दर्शन** : यह दर्शन उपनिषदों के तत्त्वज्ञान पर आधारित है।

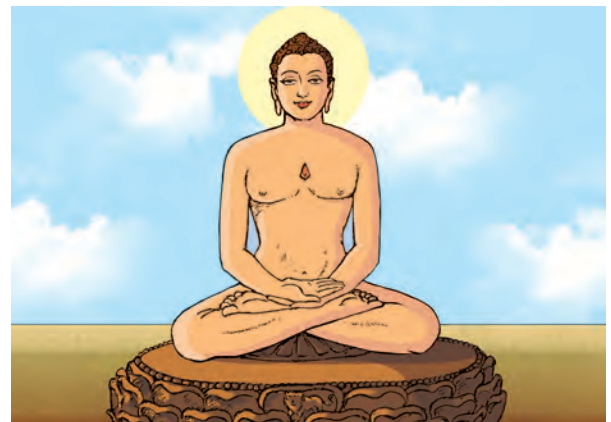
५.२. जैन धर्म

भारत के प्राचीन धर्मों में से एक जैन धर्म है। इस धर्म में 'अहिंसा' सिद्धांत को महत्त्व दिया गया है। जैन धर्म में धर्मज्ञान स्पष्ट करने वाले को 'तीर्थंकर' कहते हैं। जैन परंपरा में उल्लिखित के अनुसार कुल २४ तीर्थंकर हुए हैं। जैन धर्म की परंपरा में वर्धमान महावीर चौबीसवें तीर्थंकर हैं।

वर्धमान महावीर (ईसा पूर्व ५९९ से ईसा पूर्व ५२७)

वर्तमान समय में हम जिस राज्य को 'बिहार' कहते हैं, उस राज्य में प्राचीन समय में वृज्जी नामक एक महाजनपद था। उसकी राजधानी वैशाली थी। वैशाली नगर के एक हिस्से- कुंडग्राम में वर्धमान महावीर का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था।

वर्धमान महावीर ने ज्ञानप्राप्ति के लिए घर-द्वार का त्याग किया। साढ़े-बारह वर्ष तपस्या करने के पश्चात उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। यह ज्ञान 'केवली' अर्थात् 'विशुद्ध' स्वरूप का था। अतः उन्हें 'केवली' कहा जाता है। शरीर को सुखदायी अनुभव होने वाली बातों से प्राप्त होने वाला आनंद और दुखदायी बातों से होने वाली पीड़ा का स्वयं पर कुछ भी प्रभाव न होने देना अर्थात् विकारों पर विजय प्राप्त करना है। वर्धमान महावीर ने इस प्रकार की विजय प्राप्त की इसलिए उन्हें 'जिन' अर्थात् 'विजयी' कहा जाने लगा। 'जिन' शब्द से 'जैन' शब्द बन गया है। विकारों पर विजय पाने वाला महान वीर इसलिए वर्धमान को 'महावीर' कहा जाता है। ज्ञानप्राप्ति होने के पश्चात लोगों को धर्म समझाने के लिए उन्होंने लगभग तीस वर्ष उपदेश किया। लोग धर्म



वर्धमान महावीर

को आसानी से समझें इसलिए वर्धमान महावीर लोकभाषा 'अर्धमागधी' में लोगों से बातचीत करते थे। उनका बताया धर्म शुद्ध आचरण पर बल देता था। शुद्ध आचरण के लिए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का सार पंचमहाव्रत और त्रिरत्न में समाविष्ट है। लोगों को

उपदेश करने के लिए तीर्थकरों की जो सभाएँ होती थी; उन्हें अर्थमागधी में 'समवसरण' कहते थे। ये समवसरण समता पर आधारित थे। इन समवसरणों में सभी वर्णों के लोगों को प्रवेश था।

पंचमहाव्रत : पंचमहाव्रत का अर्थ अत्यंत कठोरता से पाँच नियमों का पालन करना है।

१. अहिंसा : किसी भी सजीव को चोट पहुँचेगी अथवा उसकी हिंसा होगी, ऐसा आचरण न करें।

२. सत्य : प्रत्येक वचन और कृति सत्य पर आधारित हो।

३. अस्तेय : 'स्तेय' से तात्पर्य चोरी करना है। दूसरे के स्वामित्व अथवा अधिकार की वस्तु उसके स्वामी की अनुमति के बिना लेना अर्थात् चोरी करना है। चोरी न करना ही 'अस्तेय' कहलाता है।

४. अपरिग्रह : मन में लोभ अथवा लालच रखकर संपत्ति का संग्रह करने की ओर मनुष्य का झुकाव होता है। इस प्रकार संग्रह न करने को 'अपरिग्रह' कहते हैं।

५. ब्रह्मचर्य : शरीर को सुखदायी अनुभव होने वाली बातों का त्याग करके व्रतों का पालन करने का अर्थ ब्रह्मचर्य है।

त्रिरत्ने : त्रिरत्न से तात्पर्य १. 'सम्यक् दर्शन', २. 'सम्यक् ज्ञान' और ३. 'सम्यक् चरित्र' ये तीन तत्त्व हैं। सम्यक् का अर्थ 'संतुलित' है।

१. सम्यक् दर्शन : तीर्थकरों के उपदेश के सत्य को समझकर उसके प्रति श्रद्धा रखना।

२. सम्यक् ज्ञान : तीर्थकरों के उपदेश और सिद्धांतों का नित्य अध्ययन कर उसका गहन अर्थ समझना।

३. सम्यक् चरित्र : पंचमहाव्रतों का कठोरता से पालन करना।

उपदेश का सार : महावीर के उपदेश का 'अनेकांतवाद' कहलाया जाने वाला सिद्धांत सत्य की खोज की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अनेकांत शब्द में 'अंत' शब्द का अर्थ 'पहलू' है। सत्य की खोज करते समय यदि विषय के केवल एकाध-दूसरे पहलू पर ध्यान देकर निष्कर्ष स्थापित करते हैं, तो

सत्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। अतः उस विषय के सभी पहलुओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है; ऐसा इस सिद्धांत में माना गया है। इस सिद्धांत के कारण समाज में स्वयं के मतों अथवा विचारों के प्रति दुराग्रह रखने की प्रवृत्ति नहीं रहती है और दूसरों के मतों/विचारों के प्रति सहिष्णुता निर्माण होती है।

वर्धमान महावीर की सीख थी कि मनुष्य की महानता उसके वर्ण पर निर्भर नहीं होती है अपितु उसके उत्तम चरित्र पर निर्भर करती है। वैदिक परंपरा में स्त्रियों को ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग धीरे-धीरे अवरुद्ध हो गया था, परंतु वर्धमान महावीर ने स्त्रियों को भी संन्यास धारण करने का अधिकार प्रदान किया था। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम रखो, दूसरों के प्रति हम अपने मन में दया और करुणा को स्थान दें, 'जीयो और जीने दो', यह उपदेश उन्होंने किया।



सोचो

वर्तमान समय में सत्य बोलो' तत्त्व को आचरण में उतारने का उपयोग कैसे होगा ?

आधुनिक समाज में 'प्रेम और दया' तत्त्वज्ञान का उपयोग किस प्रकार होगा ?

वर्तमान समय में 'अहिंसा' सिद्धांत का क्या महत्त्व है ?

नागरिक के रूप में हम इन सिद्धांतों को आचरण में कैसे उतार सकते हैं ?

५.३. बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म का प्रसार भारत में और भारत के बाहर अनेक देशों में हुआ। गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे।

गौतम बुद्ध (ईसा पूर्व ५६३ से ईसा पूर्व ४८३)

गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी वन में हुआ। उनके पिता का नाम शुद्धोधन और माता का नाम महामाया (मायादेवी) था। गौतम बुद्ध का मूल



गौतम बुद्ध

नाम सिद्धार्थ था। उन्हें मानव जीवन का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ था; अतः उन्हें 'बुद्ध' कहा गया है। वे सोचते थे कि मनुष्य के जीवन में दुख क्यों है? इस प्रश्न के उत्तर की खोज में उन्होंने घर-बार का त्याग किया। वैशाख माह की पूर्णिमा के दिन बिहार के गया नगर के समीप ऊरुवेला नामक स्थान पर वे एक पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान लगाकर बैठे थे। उस समय उन्हें 'ज्ञान' प्राप्त हुआ। अब उस पीपल के पेड़ को 'बोधिवृक्ष' कहते हैं तथा 'ऊरुवेला' स्थान को 'बोधगया' कहते हैं। उन्होंने अपना प्रथम प्रवचन वाराणसी के समीप सारनाथ नामक स्थान पर दिया। इस प्रवचन में उन्होंने जो उपदेश दिया, उसे 'धम्म' कहते हैं। इस प्रवचन द्वारा उन्होंने धम्म के चक्र को गति दी इसलिए इस घटना को पाली भाषा में 'धम्मचक्र-पवर्तन' कहते हैं। इसे संस्कृत में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहते हैं। कालांतर में उन्होंने धम्म का



बोधिवृक्ष

उपदेश करने हेतु पैंतालीस वर्ष चारिका की। चारिका से तात्पर्य पैदल घूमना है। उन्होंने अपना उपदेश लोकभाषा पाली में दिया। बौद्ध धम्म में बुद्ध, धम्म और संघ की शरण में जाने की संकल्पना महत्त्वपूर्ण है। इस संकल्पना को 'त्रिशरण' कहते हैं। उन्होंने धम्म का सार इस प्रकार बताया है।

आर्यसत्ये : मानव जीवन के सभी व्यवहारों/आचरण के मूल में चार सत्य हैं, उन्हें आर्यसत्य कहा गया है।

१. दुख मानव जीवन में दुख है।
२. दुख का कारण : दुख का कारण होता है।
३. दुख निवारण : दुख को दूर किया जा सकता है।
४. प्रतिपद : प्रतिपद का अर्थ मार्ग है। इस दुख को अंत करने का मार्ग है। यह मार्ग शुद्ध आचरण का है। इस मार्ग को 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं।

पंचशील : गौतम बुद्ध ने पाँच नियमों का पालन करने के लिए कहा है। इन्हीं नियमों को 'पंचशील' कहते हैं।

१. प्राणियों की हत्या न करना।
२. चोरी करने से दूर रहना।
३. अनैतिक आचरण से दूर रहना।
४. असत्य बोलने से दूर रहना।
५. नशीले पदार्थों का सेवन करने से दूर रहना।

बौद्ध संघ : अपने धम्म का उपदेश करने के लिए गौतम बुद्ध ने भिक्षुओं का संघ स्थापित किया। उनके जो अनुयायी गृहस्थ जीवन का त्याग करके संघ में प्रवेश करते थे, उन्हें 'भिक्षु' कहते थे। बुद्ध की तरह भिक्षु भी चारिका कर लोगों को धम्म का उपदेश करते थे। स्त्रियों का स्वतंत्र संघ था। उन्हें 'भिक्षुनियाँ' कहते थे। बौद्ध धर्म में सभी वर्णों और जातियों के लोगों को प्रवेश था।



क्या तुम जानते हो?

अष्टांगिक मार्ग

१. **सम्यक् दृष्टि** : चार आर्यसत्त्यों का ज्ञान होना।
२. **सम्यक् संकल्प** : हिंसा आदि तत्त्वों का त्याग करना।
३. **सम्यक् वाचा** : असत्य, चुगलखोरी, कठोरता और निरर्थक बातें न करना।
४. **सम्यक् कर्मात्** : प्राणियों की हत्या करना, चोरी करना और अनाचार से दूर रहना।
५. **सम्यक् आजीव** : अनुचित/अवैध मार्ग से आजीविका न चलाकर उचित मार्ग को स्वीकार करना।
६. **सम्यक् व्यायाम** : व्यायाम करने से तात्पर्य प्रयत्न/प्रयास करना है। दुष्कर्म न हों और यदि उत्पन्न होते हैं तो उनका त्याग करें। उत्तम कर्म उत्पन्न हों और वे उत्पन्न होते हैं तो वे नष्ट न हों; इसके लिए प्रयास करें।
७. **सम्यक् स्मृति** : मन को एकाग्र करके लोभ आदि विकारों को दूर करना और अपने चित्त आदि को उचित ढंग से समझना।
८. **सम्यक् समाधि** : चित्त को एकाग्र कर ध्यान का अनुभव करना।

उपदेश का सार : गौतम बुद्ध ने मानव बुद्धि की स्वतंत्रता की घोषणा की। वर्ण आदि के आधार पर मान्यता प्राप्त विषमता को नकार दिया। जन्म के आधार पर कोई श्रेष्ठ अथवा कनिष्ठ सिद्ध नहीं होता है बल्कि आचरण के आधार पर श्रेष्ठता अथवा कनिष्ठता सिद्ध होती है। 'छोटी-सी गौरैया भी अपने घोंसले में स्वतंत्रता के साथ चहचहाती है' यह उनका वचन प्रसिद्ध है। यह वचन स्वतंत्रता और समता मूल्यों के विषय में उनके चिंतन को दर्शाता है। पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी स्वयं की उन्नति करने का अधिकार है; यह उपदेश उन्होंने किया। यज्ञ जैसे कर्मकांड का विरोध किया। प्रज्ञा, शील, करुणा आदि मूल्यों के विषय में किया हुआ उनका उपदेश मानव का कल्याण सिद्ध करता है। समस्त प्राणियों के प्रति 'करुणा' उनके व्यक्तित्व की असाधारण विशेषता थी।



बताओ तो!

गौतम बुद्ध ने सहिष्णुता का जो उपदेश दिया है; वह केवल भारतीय समाज के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए आज भी मार्गदर्शक क्यों बना हुआ है?



करके देखो।

जातक कथाओं के कारण बौद्ध धर्म की मूलभूत सीख सहजता से समझ में आती है। इस सीख के माध्यम से हमें नैतिक मूल्यों और जीवन के पाठ पढ़ने को मिलते हैं। तुम्हारे वाचनालय में उपलब्ध पुस्तकों में अथवा अंतरजाल की सहायता से एक जातक कथा चुनो और उसका कक्षा में प्रस्तुतीकरण करो।

लोकायत : लोकायत अर्थात् चार्वाक नाम से परिचित प्राचीन समय की विचार धारा भी महत्त्वपूर्ण है। यह विचार धारा स्वतंत्र विचारों पर बल देती थी। इसने वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार किया।

प्राचीन समय में भारत भूमि में नव-नवीन धार्मिक विचारों के स्रोत निर्माण होते रहे। कालांतर में ज्यू, ईसाई और पारसी धर्म भारतीय समाज में घुल-मिल गए।

५.४. ज्यू धर्म

ज्यू धर्म के लोग लगभग ई.स पहली से तीसरी शताब्दी में केरल के कोची में आए होंगे। ज्यू धर्म को 'यहूदी धर्म' भी कहा जाता है। ईश्वर एक ही है ऐसा ज्यू धर्म के लोग मानते हैं।



सिनेगॉग

ज्यू धर्म का प्रमुख ग्रंथ 'तोरह' है। इसमें धार्मिक और नैतिक नियम बताए गए हैं। उनके प्रार्थना स्थान को 'सिनेगॉग' कहते हैं।

५.५. ईसाई धर्म (क्रिश्चियन धर्म)

ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे। यह धर्म संपूर्ण विश्व में फैला हुआ है। ईसा मसीह के १२ शिष्यों में से एक शिष्य सेंट थॉमस ई.स. की प्रथम शताब्दी में केरल में आए। उन्होंने त्रिचूर जिले के पल्लयूर में ई.स. ५२ में चर्च की स्थापना की। ईसाई धर्म की सीख के अनुसार ईश्वर एक ही है। वह सब का प्रेममयी पिता और सर्वशक्तिमान हैं। ईसा मसीह ईश्वर के पुत्र हैं और मानव जाति का उद्धार करने धरती पर उतर आए हैं; ऐसा माना जाता है। हम सभी एक-दूसरे के भाई-बहन हैं। हमें सबसे प्रेम करना चाहिए, अपने शत्रु के साथ भी। जिन्होंने गलती की, उन्हें भी क्षमा करनी चाहिए। ईसाई धर्म का पवित्र धर्मग्रंथ 'बाइबिल' है। ईसाई लोगों के प्रार्थना स्थान को 'चर्च' (गिरजाघर) कहते हैं।



गिरजाघर (चर्च)



करके देखो।

एक कागज पर सभी धर्मों के सकारात्मक संदेश लिखो और एक-दूसरे को साझा करो। सभी इकट्ठे आकर उन सकारात्मक संदेशों की एक शृंखला बनाओ और कक्षा में उसका वाचन करो।

५.६. इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास करता है। अल्लाह एक ही है और मुहम्मद पैगंबर उसके संदेशवाहक हैं। ईश्वर का संदेश पैगंबर के माध्यम से पवित्र 'कुरआन' धर्मग्रंथ में प्रकट हुआ है। इस्लाम शब्द का अर्थ 'शांति' है। इस शब्द का अर्थ 'अल्लाह की शरण में जाना' भी होता है। इस्लाम में बताया गया है कि सर्व समय में और सर्वत्र अल्लाह है। वह सर्वशक्तिमान और परम दयालु है। मानव के अस्तित्व का उद्देश्य अल्लाह की उपासना करना ही है, ऐसा माना गया है। मनुष्य को जीवन में कैसा आचरण करना चाहिए, इसका मार्गदर्शन पवित्र 'कुरआन' धर्मग्रंथ में किया गया है। भारत और अरबस्तान के बीच प्राचीन समय से व्यापारी संबंध थे। अरबस्तान के व्यापारी केरल के तटीय बंदरगाहों पर आते थे। ईस्वी सन की सातवीं शताब्दी में अरबस्तान में इस्लाम का प्रसार हुआ। उसी शताब्दी में अरब व्यापारियों द्वारा भारत में इस्लाम का आगमन हुआ। इस्लाम धर्म के प्रार्थना स्थान को 'मस्जिद' कहते हैं।



मस्जिद

५.७. पारसी धर्म

पारसी लोग और वैदिक संस्कृति के लोगों के बीच प्राचीन समय से संबंध थे। पारसी धर्म के पवित्र ग्रंथ का नाम 'अवेस्ता' है। पारसी लोग ईरान के 'पार्स' अथवा 'फार्स' नाम के प्रांत से भारत में आए। अतः उन्हें 'पारसी' नाम से जाना जाता है। सबसे पहले वे गुजरात

में आए। कुछ के मतानुसार वे ईस्वी सन की आठवीं शताब्दी में आए होंगे। पारसी धर्म के संस्थापक जरदुश्त थे। उनके ईश्वर का उल्लेख 'अहुर मज्द' के नाम से किया जाता है। पारसी धर्म में अग्नि और जल इन दो तत्वों को अत्यंत महत्त्व प्राप्त है। उनके मंदिरों में पवित्र अग्नि सदैव प्रज्ज्वलित रहती है। उनके मंदिरों को 'अग्यारी' कहते हैं। पारसी विचार धारा के केंद्र में उत्तम विचार, उत्तम वाणी और उत्तम कृति ये तीन प्रमुख आचरण तत्व हैं।



अग्यारी

पारसी धर्म का दर्शन कहता है :

“संसार में भलाई और बुराई का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मनुष्य को सदैव भलाई का मार्ग चुनना चाहिए!!”



करके देखो।

‘धार्मिक एकता और समरसता’ विषय पर पोस्टर अथवा चार्ट बनाओ। उसमें विविध धर्मों के सिद्धांतों का समावेश करो। कक्षा में उसकी प्रदर्शनी लगाओ।

भारत में प्राचीन समय से धार्मिक सहिष्णुता चली आ रही है। भारतीय संस्कृति में ‘एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति’ सूत्र प्रचलित है। इसका अर्थ अंतिम सत्य एक ही है, उसे अनेक नाम दिए जाते हैं; ऐसा होता है। परिणामस्वरूप भारतीय समाज ने सदैव सभी को अपने में समा लिया है। इन सभी धर्मों का भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन धर्मों के अनुयायियों ने सांस्कृतिक संपन्नता, सामाजिक सौहार्द और धार्मिक सहिष्णुता जैसे विचारों को प्रोत्साहन दिया। धार्मिक विविधतावाला भारत देश आज भी सर्वधर्म समन्वय के कारण संपन्न है और दूसरे धर्मों के साथ सहिष्णुता से रहना उसकी विशेषता है।



क्या तुम जानते हो?

प्रत्येक धर्म का दर्शन जीवन की नैतिकता, शांति और सामाजिक न्याय पर आधारित है।



स्वाध्याय

प्र.१ एक शब्द में उत्तर लिखो।

- भारतीय संस्कृति का अभिन्न गुण -----
- जैन धर्म में धर्मज्ञान की व्याख्या करने वाला --
- गौतम बुद्ध ने प्रथम प्रवचन वाराणसी के समीप ----- में दिया।
- ज्यू धर्मियों का प्रमुख धर्मग्रंथ -----
- इस्लाम धर्मियों के प्रार्थना स्थान को -----

प्र.२ अ) सारिणी पूर्ण करो।

धर्म	धर्मग्रंथ	प्रार्थना स्थान
-----	-----	सिनेगाँव
-----	बाइबिल	-----
-----	-----	मस्जिद
-----	अवेस्ता	-----

ब)

दर्शन	स्पष्टीकरण
-----	विश्व की उत्पत्ति किस प्रकार होती है, इसका विवेचन
योग दर्शन	-----
-----	तर्कशास्त्र और ज्ञान पर आधारित
वैशेषिक दर्शन	-----
-----	वेदों में कर्मकांड का विश्लेषण
वेदांत दर्शन	-----

क) घटनाओं को उचित कालक्रम के अनुसार रखो।

१. गौतम बुद्ध ने भ्रमण कर लोगों को उपदेश दिया।
२. गौतम बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ।
३. बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए उन्हें ज्ञानप्राप्ति हुई।

प्र.३ टिप्पणियाँ लिखो।

१. आर्यसत्य
२. भगवद्गीता
३. पंचशील सिद्धांत
४. त्रिरत्न

प्र.४ निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखो।

१. विविध धर्मों में निहित अहिंसा, करुणा और सत्य जैसे मूल्यों का समाज पर क्या परिणाम होता है?
२. किन्हीं दो भिन्न धर्मों की सीख में पाई जाने वाली समानता को उदाहरण सहित बताओ।

प्र.५ प्रार्थना / ध्यान-धारणा, विपश्यना के कारण मानव समूह को क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

कृति

- विभिन्न धर्मों के त्योहारों की जानकारी इकट्ठा करो।
- ‘सर्वधर्मसमभाव’ मुद्दे पर समूह में चर्चा करो।
- पाठ में आए महत्त्वपूर्ण स्थानों को मानचित्र में दर्शाओ। जैसे- धार्मिक स्थान, स्तूप, जन्मस्थान आदि।

उपक्रम

१. निम्न रिक्त स्थान में तुम्हारे पसंद के त्योहार और प्रकृति के बीच का रिश्ता दर्शाने वाला चित्र बनाओ।





जनपद और महाजनपद



६.१ जनपद

६.२ महाजनपद

६.३ गणराज्य

६.४ मगध राज्य का उदय



करके देखो।

गाँव अथवा महानगर का प्रशासन किसके द्वारा और किस प्रकार चलाया जाता है, इस विषय में जानकारी प्राप्त करो।

प्राचीन भारत में अनेक छोटी-छोटी गाँव-बस्तियाँ थीं। वहाँ लोग खेती करते, व्यापार करते और इकट्ठे होकर रहते थे। धीरे-धीरे गाँव-बस्ती का प्रशासन चलाने के लिए गाँव-बस्तियों के समूह बन गए। ऐसे समूह को 'जनपद' नाम प्राप्त हुआ।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे कुछ जनपद शक्तिशाली बनते गए। उनके पास सेना, उपजाऊ भूमि, उत्तम प्रशासन और समृद्ध व्यापार था। जनपदों का विस्तार होता हुआ उनका रूपांतर कालांतर में महाजनपदों में हुआ।



चर्चा करो

इतने विशाल राज्यों में कौन सबमें शक्तिशाली सिद्ध हुआ होगा?

जनपद, महाजनपद और राज्यों में क्या अंतर होगा?

कुछ जनपदों का विस्तार हुआ, वह किस प्रकार हुआ होगा?

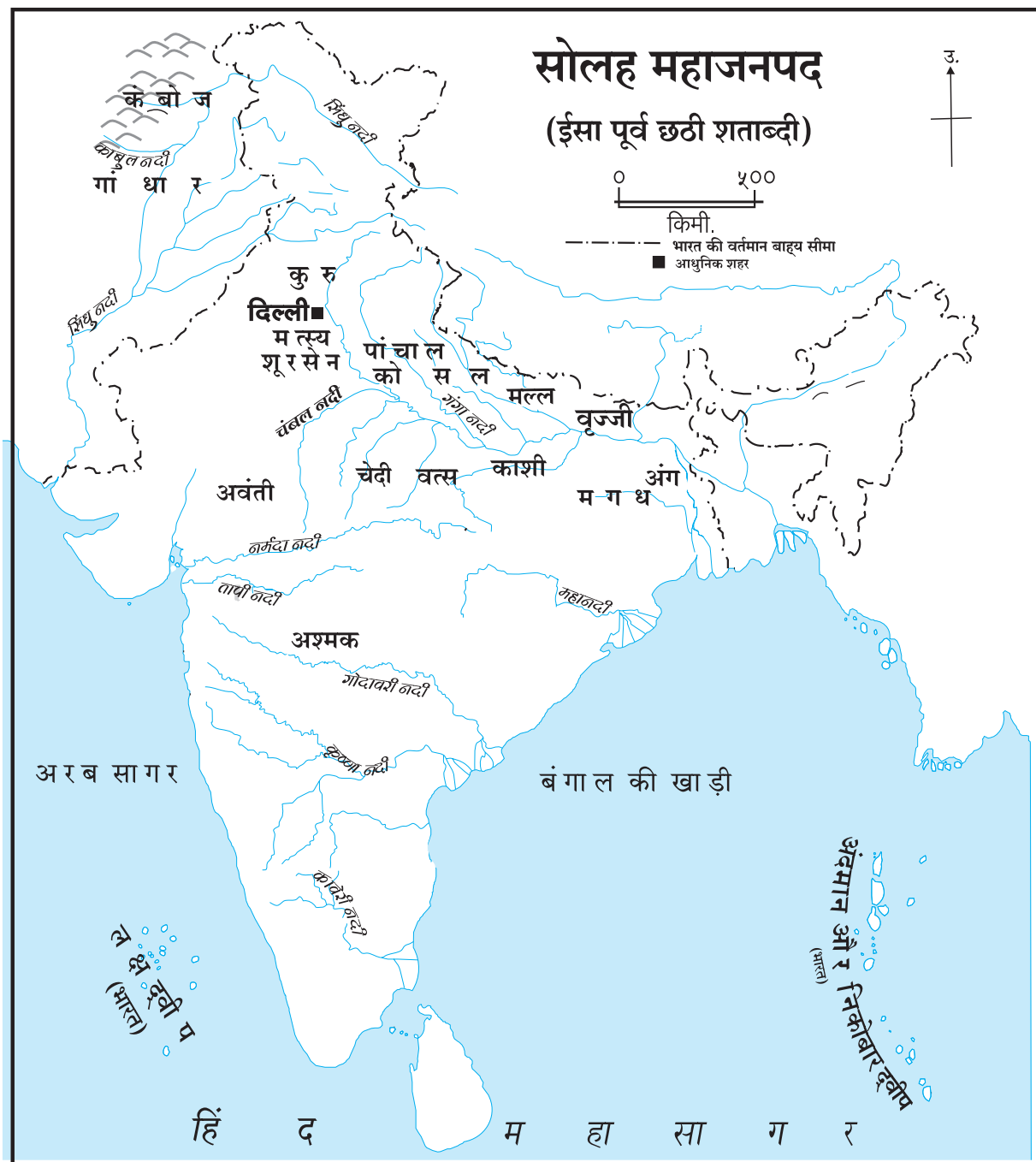
अब हम तत्कालीन समाज जीवन और शासन व्यवस्था को समझेंगे।

६.१ जनपद

लगभग ईसा पूर्व १००० से ईसा पूर्व ६०० के कालखंड को उत्तर वैदिक कालखंड माना जाता है। इस कालखंड में लोग धीरे-धीरे स्थिर और स्थायी हो गए। कुछ स्थानों पर उनके स्थायी उपनिवेश (बस्ती) निर्माण हुए। ये उपनिवेश आगे चलकर 'जनपद' के रूप में पहचाने जाने लगे। किसी विशिष्ट प्रदेश में रहने वाले लोगों के समूह को 'जनपद' कहते हैं। यहाँ लोग एकत्रित रहकर कृषि, पशुपालन और थोड़ी मात्रा में व्यापार करते थे। यह जनसमूह एक ही समाज / वर्ग होता था। अतः उस जनपद को उस समाज/वर्ग का नाम दिया जाता था। जनपद का एक प्रमुख होता था परंतु सभी महत्वपूर्ण निर्णय समाज के वरिष्ठ, बड़े-बुजुर्ग की सलाह के अनुसार लिए जाते थे। जनपद की जनजीवन पद्धति परस्पर सहयोग पर आधारित थी। जनपद को प्राचीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का प्रथम चरण माना जाता है। जनपद में लोगों का सहभाग, सामूहिक निर्णय और सामाजिक संगठन पर बल दिया गया।

६.२ महाजनपद

ईसा पूर्व लगभग छठी शताब्दी में कुछ जनपद आर्थिक व्यवहार, सैन्य व्यवस्था और प्रशासन की दृष्टि से अधिक सामर्थ्यशाली बनने लगे। ऐसे बड़े राज्यों को 'महाजनपद' के रूप में पहचान मिली। महाजनपद में अनेक गाँवों, नगरों, व्यापारी मार्गों और सशस्त्र सेना का समावेश था। महाजनपदों में



राजा अथवा सलाहकार मंडल नेतृत्व करता था। यहाँ की प्रशासन व्यवस्था सुचारू रूप से चलती थी। महाजनपदों में कृषि, व्यापार, बाजार और कलाओं का विकास हुआ। कुछ जनपदों ने अपने पड़ोसी जनपदों को पराजित कर उनका प्रदेश अपने राज्य में समाविष्ट कर लिया। ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक महाजनपदों में सोलह महाजनपदों को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ था। उनके नाम निम्नानुसार हैं-

महाजनपद और उनकी राजधानियों के नगर :

१. काशी-वाराणसी
२. कोसल-श्रावस्ती
३. अंग-चंपा
४. मगध - गिरिव्रज / राजगृह
५. वृज्जी / वज्जी - वैशाली
६. मल्ल / मालव - कुशीनार / कुशीनगर
७. चेदि-शुक्तिमती/सोस्थिवती

८. वंश/वत्स-कौशांबी
९. कुरु-इंद्रप्रस्थ/इंद्रपट्टण
१०. उत्तर पांचाल-अहिच्छत्र, दक्षिण पांचाल-कांपिल्य
११. मत्स्य-विराटनगर
१२. शूरसेन-मथुरा
१३. अश्मक/अस्सक-पोटली/पोतन/पोदन
१४. अवन्ती-उज्जयिनी और महिष्मती
१५. गांधार-तक्षशिला
१६. कंबोज-राजपुर

महाजनपदों का विकास प्राचीन भारत में साम्राज्यों का उदय होने के पूर्व का चरण था। सोलह महाजनपदों में मगध, कोसल, वत्स, अवन्ती ये चार महाजनपद अधिक सामर्थ्यवान होते गए। जनपद की तुलना में महाजनपद जनसंख्या, भूभाग और संसाधन संपदा की दृष्टि से बड़े थे।

६.३ गणराज्य

कुछ महाजनपदों की प्रशासन पद्धति में जनपद के सामान्य लोगों का सहभाग होता था। उसे 'गणराज्य' कहते हैं। गणराज्यों में सारे निर्णय राजा के हाथ में नहीं होते थे बल्कि जन प्रतिनिधियों अथवा सलाहकार मंडल की सहायता से लिए जाते थे। इस मंडल में वयोवृद्ध व्यक्तियों, योद्धाओं अथवा चुनकर आए हुए लोगों का समावेश रहता था। जनपदों में वरिष्ठ व्यक्तियों की 'गणपरिषद' होती थी। गणपरिषद के सदस्य एकत्रित रूप में विचार-विनिमय कर राज्य प्रशासन से संबंधित निर्णय लेते थे। इसके संबंध में किया जाने वाला विचार-विनिमय जिस सभागृह में होता था, उसे 'संथागार' कहते थे। जैसे

- वृज्जी संघ गणराज्य था। इस गणराज्य की विचार प्रक्रिया में सामान्य लोगों का सहभाग होता था। वैसे ही, मल्ल गणराज्य में भी सामूहिक नेतृत्व की पद्धति प्रचलित थी। अतः कह सकते हैं कि इन गणराज्यों के कारण प्राचीन भारत में लोकतंत्र का प्रारंभ हुआ। प्राचीन भारत में राजसत्ता और गणराज्य पद्धति ये दोनों पद्धतियाँ कार्यरत थीं।



करके देखो

गणपरिषद की मतदान पद्धति - सदस्यों के बहुमत के आधार पर सभागृह में विधेयक पारित होते थे। मतदान का स्वरूप खुला मतदान, ध्वनि मतदान अथवा गोपनीय मतदान जैसे विविध प्रकार का था। सभासद के मत (वोट) को 'छंद' कहते थे। मतपत्रिका के रूप में विभिन्न रंगों की 'दंडिका' उपयोग में लाई जाती थी। उन्हें 'शलाका' कहा जाता था। मतदान अधिकारी को 'शलाका ग्राहक' कहते थे। अनुपस्थित सभासदों को भी मतदान का अधिकार दिया गया था परंतु यथासंभव उपस्थित मतदान के आधार पर ही निर्णय लिए जाते थे।



सोचो

गणराज्य में प्रचलित मतदान पद्धति और वर्तमान मतदान पद्धति की तुलना करो।

६.४ मगध राज्य का उदय

ईसा पूर्व लगभग छठी शताब्दी में महाजनपदों में सबसे अधिक सामर्थ्यशाली और प्रभावी महाजनपद के रूप में मगध का उदय हुआ। प्राचीन भारत में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मगध महत्त्वपूर्ण महाजनपद था। मगध राज्य का उदय होने के पीछे कुछ प्रमुख कारण थे-

भौगोलिक स्थान का कानून	- गंगा नदी की तटीय उपजाऊ भूमि। - जलमार्ग द्वारा व्यापार।
खनिज संपत्ति	- विशेष रूप से लौह के विपुल प्राकृतिक भंडार। - कृषि की उन्नत तकनीकी अवगत। - प्रगत शस्त्रों का उपयोग किया जाने लगा।
राज्य से साम्राज्य	- बिंबिसार और अजातशत्रु जैसे राजाओं ने राज्य का विस्तार किया। - पाटलिपुत्र में राजधानी की स्थापना की क्योंकि यह सैनिकी, राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्र था। पाटलिपुत्र से संपूर्ण मगध प्रदेश पर नियंत्रण रखना आसान था। - प्रशासनिक सुधार होने के कारण राज्य अधिक सुसंगठित हुआ।
सक्षम अर्थव्यवस्था	- व्यापार और बाजारों का विकास हुआ। - महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। यहाँ से अन्य देशों में वस्त्र, मसाले, धातु जैसे मूल्यवान वस्तुओं का निर्यात होता था।
राजनीतिक गठबंधन	- अन्य महाजनपदों को समाविष्ट किया। - राज्य के विस्तार हेतु वैवाहिक संबंध प्रस्थापित किए।

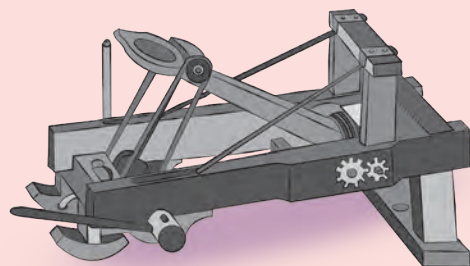
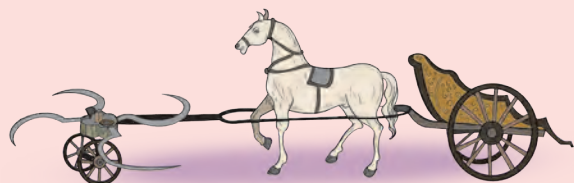
मगध को प्राचीन भारत में साम्राज्य स्थापना का प्रथम उदाहरण कहना चाहिए।

बिंबिसार राजा ने मगध साम्राज्य की नींव रखी। उसके शासनकाल में मगध के व्यापार में वृद्धि हुई। कृषि व्यवस्था में सुधार हुआ और आर्थिक स्थिति में समृद्धि आई। उसने राजगृह में मगध की राजधानी स्थापित की। बिंबिसार के पश्चात उसका पुत्र अजातशत्रु सत्तासीन हुआ। उसने भी मगध का विस्तार करने की नीति अपनाई। अजातशत्रु ने वृज्जी गणराज्य और कोसल राज्य पर विजय प्राप्त की।



क्या तुम जानते हो?

अजातशत्रु ने कुछ नए शस्त्र तैयार करवा लिए थे। उसने 'महाशिलाकंटक' नामक बड़े पत्थर बरसाने



वाला यंत्र बनवाया। इससे शत्रुओं के किलों के परकोटे आसानी से ढह जाते थे। साथ ही, 'रथमुसल' नाम का काँटेदार लोहे के डंडेवाला विशेष रथ बनवाया। यह रथ शत्रु की पैदल सेना में घुसकर बहुत बड़ी क्षति पहुँचाता था। इन नये शस्त्रास्त्रों के बल पर अजातशत्रु को वृज्जी जैसे बलशाली गणराज्यों के विरुद्ध लड़े गए युद्ध में निर्णायक विजय प्राप्त करने में सहायता प्राप्त हुई और मगध की सामर्थ्य में अधिकाधिक वृद्धि हुई।

अजातशत्रु ने बिहार के पाटलिपुत्र (वर्तमान समय में पटना) में नई राजधानी की स्थापना की।



बताओ तो!

राजधानी क्यों महत्वपूर्ण होती है? राजधानी कहाँ होनी चाहिए? उसके क्या निकष होते हैं? इन प्रश्नों पर शिक्षक की सहायता से कक्षा में चर्चा करो।

अजातशत्रु गौतम बुद्ध का अनुयायी बना। गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अजातशत्रु के कार्यकाल में राजगृह नामक स्थान पर बौद्ध धर्म की प्रथम संगिति (परिषद) हुई।

अजातशत्रु के पश्चात हुए मगध के राजाओं में शिशुनाग महत्वपूर्ण शासक था। उसने अवंती, वत्स और कोसल राज्यों पर विजय प्राप्त की। परिणामतः मगध की सामर्थ्य में अधिक वृद्धि हुई।

शिशुनाग के पश्चात नंद वंश का उदय हुआ। नंद वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा महापद्मनंद था। उसने मगध साम्राज्य का प्रचंड विस्तार किया। उत्तर भारत के अनेक छोटे राज्यों को वह अपने अधीन ले आया। नंद

राजा अपनी विशाल सेना, संपत्ति और कर पद्धति के लिए प्रसिद्ध थे। नंद वंश के शासनकाल में मगध भारत का सबसे सामर्थ्यशाली राज्य बना परंतु अंतिम शासक धनानंद अत्यंत अहंकारी था। उसने अनेक कर प्रजा पर लगा दिए। परिणामतः उसके विरुद्ध लोगों में असंतोष बढ़ गया। प्रशासन व्यवस्था भ्रष्ट हो गई। परिणामस्वरूप उसके शासनकाल में मगध साम्राज्य दुर्बल बनने लगा। अंततः आचार्य चाणक्य और चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद शासन का अंत किया और मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

जनपदों से लेकर साम्राज्य तक की यात्रा प्राचीन भारत की राजनीतिक विकास का महत्वपूर्ण चरण है। गाँव-उपनिवेश से प्रारंभ होकर विशाल राज्यों तक उसका रूपांतर कैसे हुआ और गणराज्य किस प्रकार विकसित हुए, यह समझ में आता है।



अजातशत्रु-शिल्प



स्वाध्याय

प्र.१ अ) उचित विकल्प के सामने ☒ चिह्न लगाओ।

१. गाँव उपनिवेश का प्रशासन चलाने के लिए गाँव उपनिवेश के समूह तैयार हुए। उस समूह को क्या कहते हैं?

अ) जनपद ☐

ब) महाजनपद ☐

क) राज्य ☐

२. मगध साम्राज्य की नींव किसने रखी?

अ) शिशुनाग ☐

ब) अजातशत्रु ☐

क) बिंबिसार ☐

३. चंद्रगुप्त मौर्य ने किस वंश का अंत किया?

अ) मगध ☐

ब) नंद ☐

क) मौर्य ☐

ब) जोड़ियाँ मिलाओ।

‘अ’ गुट

१. मतदान अधिकारी

२. वृज्जी

३. अजातशत्रु

‘ब’ गुट

अ) बौद्ध धर्म का स्वीकार

ब) शलाका ग्राहक

क) महाजनपद

ड) जनपद

प्र.२ एक शब्द में उत्तर लिखो।

१. नंद वंश का अंतिम शासक -

२. बड़े पत्थर बरसाने वाला यंत्र -

३. पाटलिपुत्र में राजधानी प्रस्थापित करने वाला -

प्र.३ अ) संक्षेप में उत्तर लिखो।

१. गाँव-बस्तियों का निर्माण किस प्रकार हुआ?

२. जनपदों का निर्माण किस कारण हुआ?

३. महाजनपदों का विकास होने के कारण बताओ।

ब) अपने शब्दों में लिखो।

१. अजातशत्रु ने मगध साम्राज्य को अधिक सामर्थ्यशाली बनाने के लिए कौन-से सुधार किए?

२. गणपरिषद की मतदान पद्धति और वर्तमान में प्रचलित मतदान पद्धति में समानता और अंतर बताओ।

प्र.४ पाठ में दिए मानचित्र का निरीक्षण करो और निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखो।

१. भारत की वर्तमान अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा के बाहर जो महाजनपद अस्तित्व में हैं, उनके नाम लिखो।

२. ‘अश्मक’ महाजनपद वर्तमान में किस राज्य में है?

३. किस नदी की घाटी में महाजनपद अधिक संख्या में हैं?

उपक्रम

पाठ में उल्लिखित महाजनपद वर्तमान भारत के किन राज्यों में आते हैं? अंतरजाल की सहायता से उनकी खोज करो और महाजनपद और राज्य की अलग-अलग सूची बनाओ।

जैसे - अवन्ती - गुजरात



७ मौर्यकालीन भारत



७.१ मौर्य साम्राज्य की स्थापना

७.२ सम्राट अशोक

७.३ मौर्य साम्राज्य की राज्य व्यवस्था

७.४ कला, स्थापत्य और जनजीवन

‘युग प्रवर्तन’ का अर्थ समय में परिवर्तन होना है। समाज में विचारों और मूल्यों की नवीन धारा का निर्माण होना है। जब किसी व्यक्ति के कार्यों अथवा विचारों के कारण समाज को नई दिशा प्राप्त होती है तो उस व्यक्ति को ‘युग प्रवर्तक’ कहते हैं।

ऐसे ही एक युग प्रवर्तक कालखंड का आरंभ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में मौर्य साम्राज्य की स्थापना से हुआ। उस कालखंड में भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। विदेशी आक्रमण बढ़ते जा रहे थे और इसी समय मगध साम्राज्य दुर्बल हो गया था। उस समय चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यह एक नए युग की शुरुआत थी। इस कार्य में राजा चंद्रगुप्त को आर्य चाणक्य की सहायता मिली।



सोचो

- भारत में पहला विशाल और संगठित साम्राज्य किस प्रकार निर्माण हुआ?
- सम्राट अशोक ने उसके साम्राज्य में स्थान-स्थान पर स्तंभलेख क्यों निर्माण करवाए होंगे?

चलो, हम इन सभी प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास करेंगे।

७.१ मौर्य साम्राज्य की स्थापना

पिछले पाठ में हमने देखा है कि मगध साम्राज्य में नंद वंश का राजा धनानंद राज्य करता था। यद्यपि वह अत्यंत धनवान था परंतु जनता के मन में उसके प्रति असंतोष था। चंद्रगुप्त ने धनानंद को पराजित किया।

ईसा पूर्व ३२१ के लगभग चंद्रगुप्त ने मगध को जीत लिया। कालांतर में उसने अवंती और सौराष्ट्र पर विजय पाकर मौर्य साम्राज्य का विस्तार किया।



क्या तुम जानते हो?

आचार्य चाणक्य को ‘कौटिल्य’ अथवा ‘विष्णुगुप्त’ भी कहा जाता है। वे महान राजनीतिज्ञ और विद्वान थे। उन्होंने ‘अर्थशास्त्र’ नामक ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में शासन व्यवस्था, कर प्रणाली, संरक्षण, गुप्तचर और राजनीति के विषय में महत्वपूर्ण सिद्धांत बताए हैं।

चंद्रगुप्त बचपन में अपने मित्रों के साथ खेला करता था। उस खेल में चंद्रगुप्त राजा की भूमिका निभाता था। वह किसी पेड़ के नीचे अपना ‘दरबार’ लगाते थे।



एक दिन आर्य चाणक्य वहाँ से गुजर रहे थे। उन्होंने चंद्रगुप्त को राजा की भूमिका निभाते देखा। चंद्रगुप्त का स्वाभाविक नेतृत्वगुण और न्याय करने की पद्धति देखकर चाणक्य ने उसके भीतर की क्षमता

को पहचाना। उन्हें विश्वास हुआ कि यही लड़का धनानंद की अन्यायी सत्ता का अंत कर सकता है।

उसके पश्चात चाणक्य चंद्रगुप्त को अपने साथ ले गए। उसे प्रशिक्षण दिया और युद्धकला तथा प्रशासन में पारंगत बनाया। आगे चलकर चंद्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। विशाखदत्त द्वारा लिखित 'मुद्राराक्षस' नाटक में दर्शाया गया है कि धनानंद को पराजित कर चंद्रगुप्त मौर्य ने सत्ता स्थापित की।



करके देखो

ग्रंथालय की पुस्तकों के आधार पर अथवा अंतरजाल के संकेतस्थल से चंद्रगुप्त मौर्य के चरित्र के बारे में जानकारी प्राप्त करो। उसके आधार पर कक्षा में कथा को नाट्यरूप में प्रस्तुत करो।

ग्रीक सम्राट अलेक्जेंडर अर्थात् सिकंदर ने ईसा पूर्व ३२६ में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश पर आक्रमण किया। वह भारत के पंजाब प्रांत तक चला आया। उसके पश्चात उसने अपनी मातृभूमि को लौटने का निर्णय किया परंतु लौटते समय बीच मार्ग में ही सिकंदर की मृत्यु हुई। भारत में जीते हुए प्रदेशों में व्यवस्था बनाए रखने के लिए उसने अधिकारियों की नियुक्तियाँ की थीं। उन अधिकारियों को 'सत्रप' (क्षत्रप) कहा गया। सिकंदर की मृत्यु के बाद सत्रपों में सत्ता के लिए युद्ध प्रारंभ हुए। उसी समय ग्रीक सेनापति सेल्यूकस निकेटर भारत पर पुनः आक्रमण करने के प्रयास में लगा था परंतु चंद्रगुप्त मौर्य ने उसे पराजित किया। परिणामतः मौर्य साम्राज्य की सामर्थ्य में वृद्धि हुई और भारत में ग्रीक सत्ता का प्रभाव बढ़ा नहीं। अफगानिस्तान का काबुल, कंधार, हेरात प्रदेशों का चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में समावेश हुआ। सेल्यूकस निकेटर का राजदूत मेगैस्थेनिस चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा था। उसके द्वारा लिखित 'इंडिका' ग्रंथ में उल्लिखित वर्णन मौर्यकालीन भारत के अध्ययन का महत्वपूर्ण साधन है।



क्या तुम जानते हो?

चंद्रगुप्त मौर्य के समय में वर्तमान गुजरात राज्य के जूनागढ़ में 'सुदर्शन' नाम का तालाब बनवाया गया था। इस तालाब के जल का उपयोग कृषि, सिंचाई और पेयजल की आपूर्ति हेतु किया जाता था। जलप्रबंधन को चलाने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए जाते थे। चाणक्य द्वारा लिखित 'अर्थशास्त्र' ग्रंथ में जलाशय को हानि पहुँचाने पर उस व्यक्ति को क्या दंड दिया जाएगा; इसे विस्तार से दिया है। सुनियोजित कर प्रणाली और जलाशयों की देखभाल के कारण मौर्य कालखंड में कार्य सक्षम जलप्रबंधन निर्माण हुआ। कालांतर में अनेक राजाओं ने इस तालाब की देखभाल और मरम्मत की ओर ध्यान दिया। सुदर्शन सरोवर की मरम्मत सम्राट अशोक, शक राजा रुद्रदामन और बाद के समय के राजाओं ने भी किया; इसका उल्लेख जूनागढ़ के शिलालेख में मिलता है।

सुदर्शन सरोवर प्राचीन भारतीय जलप्रबंधन और अभियांत्रिकी कौशल का प्रतीक माना जाता है।

तुम्हारा मत क्या है?

प्राचीन समय के जलप्रबंधन की जानकारी का उपयोग क्या आधुनिक समय में भी हो सकता है?

चंद्रगुप्त ने अपने कार्यकाल के अंत में राजपद का त्याग कर जैन धर्म को स्वीकार किया। इसके बाद वह कर्नाटक के श्रवणबेलगोल में रहा। चंद्रगुप्त के पश्चात उसका पुत्र बिंदुसार सत्ता में आया। उसने साम्राज्य का विस्तार करना जारी रखा। उसने इंडो-ग्रीक राजाओं के साथ मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित किए। उसके शासन काल में मौर्य साम्राज्य का राजनीतिक और आर्थिक आधार अधिक सुदृढ़ हुआ। बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र अशोक सत्तासीन हुआ।



७.२ सम्राट अशोक



सम्राट अशोक

बिंदुसार ने उसके शासनकाल में उज्जयिनी और तक्षशिला में अशोक को राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया था। अशोक अपनी वीरता, साहस और बुद्धिचतुराई के गुणों के बल पर सत्ता में आया। पश्चिमोत्तर में अफगानिस्तान और उत्तर में नेपाल से दक्षिण में कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश तक और पूर्व में बंगाल से पश्चिम में सौराष्ट्र तक सम्राट अशोक का साम्राज्य फैला हुआ था।

सम्राट अशोक का कलिंग पर आक्रमण

सम्राट अशोक के चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण घटना उसके द्वारा किया गया कलिंग युद्ध है। प्राचीन कलिंग राज्य का समावेश वर्तमान ओडिशा राज्य में था। कलिंग मौर्य साम्राज्य का हिस्सा नहीं था। अतः अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। इस युद्ध में वह विजयी हुआ। इस युद्ध में लाखों सैनिक हताहत हुए, अनेक सैनिक बंदी बनाए गए। ऐसी प्रचंड जीवित हानि देखकर अशोक को दुख हुआ। इस युद्ध के कारण अशोक का जीवन पूर्णतः बदल गया।



सोचो

कल्पना करो- तुम एक पत्रकार हो। कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक के जीवन में किस प्रकार परिवर्तन आया, इस विषय में तुम उसका साक्षात्कार लेते समय कौन-से प्रश्न पूछोगे ?

सम्राट अशोक का धर्मप्रसार कार्य

अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। उसने दैनिक जीवन में अहिंसा का आचरण, माता-पिता की सेवा करना, गुरुजन और बड़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मान का भाव रखना जैसे सिद्धांतों पर बल दिया।

सम्राट अशोक ने अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए स्थान-स्थान पर शिलालेख और स्तंभालेख खुदवाए। ये लेख ब्राह्मी लिपि में हैं। इन लेखों में उसने स्वयं का उल्लेख 'देवाना प्रिय पियदसी' अर्थात् 'ईश्वर का प्रिय प्रियदर्शी' किया है। ये लेख अशोककालीन इतिहास के मूल्यवान साधन हैं। इन शिलालेखों द्वारा उसने प्रजा से अहिंसा, प्राणिमात्र के प्रति दया, परोपकार, धर्मसहिष्णुता, उत्तम चरित्र आदि सद्गुणों का आचरण प्रजा करे; इस प्रकार का आवाहन किया। इसके लिए उसने संपूर्ण राज्य में **धम्म अधिकारी** नियुक्त किए, उन्हें '**धम्ममहामात**' कहा जाता था। ये अधिकारी लोगों में नैतिकता का संदेश पहुँचाते थे। इन सिद्धांतों का प्रसार विदेशों में करने हेतु अशोक ने धर्मप्रसारक भेजे। उसने अपने बेटे महेंद्र और कन्या संघमित्रा को धर्मप्रसार करने के लिए श्रीलंका भेजा; ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त पश्चिम में सीरिया, इजिप्त, ग्रीक तथा पूर्व में म्यांमार आदि अनेक देशों में अशोक ने धर्मप्रसारक भेजे थे। अशोक ने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्मपरिषद का आयोजन कराया था।

सम्राट अशोक के लोककल्याणकारी कार्य

अशोक ने अपनी प्रजा के लिए अनेक लोककल्याणकारी कार्य किए। उसने अस्पताल, औषधालय और धर्मशालाएँ बनवाईं। नगरों और यात्रियों के मार्गों पर दोनों ओर वृक्ष लगवाए। कुओं और प्याऊ की सुविधा करवाई। उसने पशुओं के लिए भी अस्पतालों का निर्माण करवाया। अशोक के शिलालेखों में प्रजा के प्रति उसका दायित्वबोध, प्रेम और सेवाभाव स्पष्टतः दिखाई देता है।



सोचो

लोककल्याणकारी प्रशासक में कौन-से गुण होने चाहिए और उसने किन कामों को प्राथमिकता देनी चाहिए; इस विषय में कक्षा में चर्चा करो।

७.३ मौर्य साम्राज्य की राज्यव्यवस्था

मौर्यकालीन राज्यव्यवस्था में राजा के हाथ में सर्वोच्च अधिकार होते थे। राजा की सहायता करने के लिए एक मंत्री परिषद थी। इस परिषद में विविध

विभागों के प्रमुख थे। उन्हें 'अध्यक्ष' कहा जाता था। उनमें कुछ उदाहरण जैसे 'पण्याध्यक्ष' (व्यापार का प्रमुख अधिकारी) और 'सीताध्यक्ष' (कृषि का प्रमुख अधिकारी) थे।

मौर्य प्रशासन समय में गुप्तचर विभाग अत्यंत सशक्त और सक्षम था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गुप्तचर व्यवस्था का विस्तार में वर्णन है। अर्थ-व्यवस्था और कर व्यवस्था का स्वरूप भी निश्चित किया गया था। जनकल्याण, रक्षा और धार्मिक कार्यों के लिए राजकोष से खर्च किया जाता था।

राज्य प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से राज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया गया था।

विभाग	राजधानी
पूर्व	तोशाली
पश्चिम	उज्जैनी
उत्तर	तक्षशिला
दक्षिण	सुवर्णगिरी

प्रशासन तीन प्रमुख स्तरों पर विभाजित था।

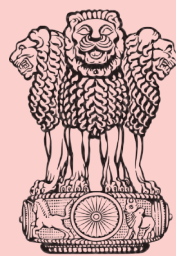
केंद्र शासन – साम्राज्य के सभी निर्णय राजधानी पाटलिपुत्र में लिए जाते थे। राजा, मंत्रीपरिषद और विभागीय अधिकारियों की सहायता से संपूर्ण साम्राज्य का प्रशासन प्रभावशाली ढंग से चलाया जाता था।

प्रांतीय प्रशासन – साम्राज्य अलग-अलग प्रांतों में विभाजित था। प्रत्येक प्रांत पर कुमार (राजपुत्र) और महामात्य (प्रशासनिक अधिकारी) की सहायता से नियंत्रण रखा जाता था।

स्थानीय प्रशासन – गाँवों और नगरों के स्तर पर ग्रामणी (गाँव का प्रमुख), नगर और स्थानीय समितियों द्वारा दैनिक प्रशासन, कर, न्याय और सुव्यवस्था का प्रबंधन किया जाता था।



क्या तुम जानते हो?



सत्यमेव जयते

क्या तुमने भारतीय राजमुद्रा और राष्ट्रीय ध्वज पर अशोक चक्र देखा है? इन प्रतीकों के बारे में तुम्हें क्या जानकारी है? इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो और उसपर चर्चा करो।

६.४ कला, स्थापत्य और जनजीवन

मौर्यकाल में शिल्पकला विकसित हुई थी। सम्राट अशोक के आदेश पर स्थापित किए स्तंभ और स्तूप इसके उत्तम उदाहरण हैं। मौर्यकाल के शिल्प में सिंह, हाथी, बैल जैसे प्राणियों के हू-बहू चित्रण दिखाई देता है।



अशोक स्तंभ

अनेक विदेशी आप्रवासियों द्वारा लिखित वृत्तांतों में राजधानी पाटलिपुत्र के भव्य रजवाड़ों के वर्णन पाए जाते हैं। इस कालखंड में खुदवाई गई बिहार की बाराबर गुफा अति प्राचीन गुफा है। सांची का स्तूप, सारनाथ का स्तूप इस कालखंड के स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने हैं।



बाराबर गुफा

मौर्य शासन के कालखंड में पत्थरों को विशेष तकनीक से इतना मुलायम और चमकदार बनाया जाता था कि उसमें आईने की तरह प्रतिबिंब दिखाई देता था। रथों और घोड़ों की दौड़, मल्लयुद्ध, नृत्य संगीत प्रतियोगिता जैसे मनोरंजन के लोकप्रिय प्रकार प्रचलित थे। चौसर के खेल और शतरंज जैसे खेल बड़ी रुचि के साथ खेले जाते थे।



करके देखो

मौर्यकालीन स्तंभ, शिलालेख और शिल्प के चित्र इकट्ठे करो और कॉपी में चिपकाओ।

मौर्य कालखंड में जनजीवन संपन्न और सुखी था। कृषि उपज को महत्त्व प्राप्त था। भोजन में दूध, दही, घी, विविध फल, चावल, बाली आदि घटकों का समावेश था।



क्या तुम जानते हो?

मौर्यकालीन जनजीवन के बारे में मेगैस्थनीस के 'इंडिका' ग्रंथ द्वारा पर्याप्त जानकारी मिलती है। मेगैस्थनीस कहता है - 'यहाँ के लोग परिश्रमी और किफायती हैं। वे कई कलाओं में कुशल हैं। किसान पूरे वर्ष में दो बार उपज लेता है। यद्यपि युद्ध चलता हो फिर भी किसानों को कोई भी कष्ट नहीं पहुँचाता। शत्रु फसलें नष्ट नहीं करते। लोग सुखी

और ईमानदार हैं। चोरी शायद ही होती हो। लोगों को न्यायालय में शायद ही जाना पड़ता हो। दासता की प्रथा अस्तित्व में नहीं थी।

सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य की शक्ति-सामर्थ्य धीरे-धीरे घटती गई। स्थानीय शासक स्वतंत्र बनने लगे और साम्राज्य विभाजित हुआ। मौर्य साम्राज्य का अंतिम शासक बृहद्रथ को समाप्त कर पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना की।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) उचित विकल्प के सामने ☒ ऐसा चिह्न लगाओ।

१. 'मुद्राराक्षस' नाटक का विषय-

अ) गुप्तचर व्यवस्था का वर्णन ☐

ब) नंद वंश का अंत और चंद्रगुप्त के कार्य ☐

क) मौर्यकालीन जनजीवन ☐

२. आचार्य चाणक्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र ग्रंथ में निम्न बातें प्राप्त थीं-

अ) सदाचरण का समर्थन ☐

ब) कलिंग युद्ध का वर्णन ☐

क) शासन व्यवस्था, कर प्रणाली, रक्षा, गुप्तचर और राजनीति। ☐

३. मेगैस्थनीस की 'इंडिका' पुस्तक द्वारा निम्न बातों का वर्णन प्राप्त होता है।-

अ) जलाशयों को हानि पहुँचाने पर उस व्यक्ति को कौन-सा दंड दें, इसका मार्गदर्शन ☐

ब) अहिंसा, प्राणिमात्र के प्रति दया, परोपकार, धर्मसहिष्णुता, उत्तम चरित्र आदि सद्गुणों का आचरण करें प्रजा करे। ☐

क) यहाँ के लोग परिश्रमी और किफायती हैं। वे कई कलाओं में कुशल हैं। भारतीयों की परंपरा महान है। ☐

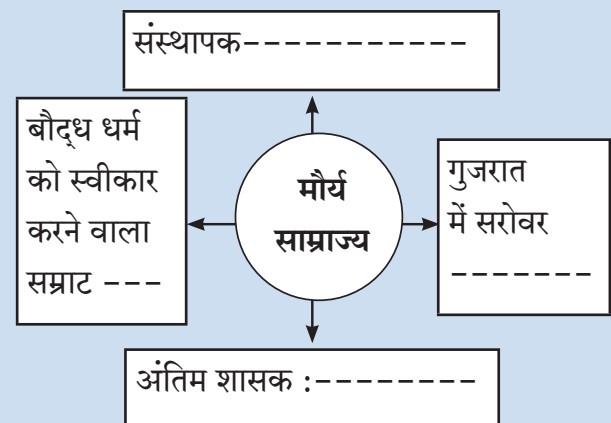
ब) नाम लिखो।

१. नंद वंश का अंतिम राजा

२. 'देवानं पियो पियदसी'

३. मेगैस्थनीस द्वारा लिखित ग्रंथ

प्र.२ अ) संकल्पना चित्र पूर्ण करो।



ब) घटनाओं को कालक्रमानुसार लगाओ।

१. सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।
२. कलिंग युद्ध में सम्राट अशोक की विजय हुई।
३. उज्जयिनी और तक्षशिला में अशोक को शासक के रूप में नियुक्त किया।
४. बेटा महेन्द्र और कन्या संघमित्रा को धर्मप्रसार के लिए श्रीलंका में भेजा।

प्र.३ अ) संक्षेप में जानकारी लिखो।

१. सम्राट अशोक का धर्मप्रसार का कार्य।
२. मौर्यकालीन शिल्पकला।

ब) निम्न घटनाएँ क्यों घटीं? कारण ढूँढो।

१. सम्राट अशोक ने हिंसा का मार्ग छोड़कर बौद्ध धर्म को स्वीकार किया।
२. चंद्रगुप्त मौर्य ने धनानंद को पराजित किया।

प्र.४ निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखो।

१. सम्राट अशोक ने उसके शिलालेखों द्वारा लोगों को कौन-सी सूचनाएँ दीं?
२. सुदर्शन सरोवर प्राचीन भारतीय जलप्रबंधन और अभियांत्रिकी कौशल का प्रतीक क्यों माना जाता है?
३. सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकारने के बाद स्वयं में क्या परिवर्तन किया?

उपक्रम

१. “मैं चाणक्य बोल रहा हूँ...” इस विषय पर एकल पात्र एकांकी द्वारा मौर्य साम्राज्य की जानकारी परिपाठ में प्रस्तुत करो।
२. तुम अपने परिसर के जलप्रबंधन, रेन वॉटर हारवैस्टिंग और हर घर जल की जानकारी प्राप्त करो और इस विषय में चर्चा का आयोजन कराओ।





प्राचीन भारत और महाराष्ट्र में राज्य और राजवंश



८.१. शुंग वंश

८.२. कण्व वंश

८.३. इंडो – ग्रीक (यवन) शासक

८.४. शक शासक

८.५. सातवाहन वंश

८.६. कुषाण वंश

८.७. गुप्त वंश

८.८. वर्धन वंश

‘यदि भारत का मानचित्र बोलना शुरू कर दे तो?’

कल्पना करो कि भारत का मानचित्र तुमसे बात कर रहा है!

मानचित्र कहता है :

“प्राचीन समय में मेरे भीतर की सीमाओं ने कई साम्राज्यों के उतार-चढ़ाव देखे हैं। कुछ शासक सात समंदर पार से आए, तो कुछ शासक यहीं के स्थानीय थे।”

सम्राट अशोक के पश्चात् मौर्य साम्राज्य का पतन आरंभ हुआ और अंततः वह लुप्त हुआ। इसके बाद भारत वर्ष में कई छोटी-बड़ी राज सत्ताओं का उदय हुआ। मौर्य के पश्चात् शुंग वंश ने अपनी सत्ता स्थापित की। इसी समय हमारे देश पर ग्रीक (यवन), शक और कुषाण इन विदेशियों के आक्रमण हुए। यहाँ उनके राज्य स्थापित हुए। इसी समय दक्षिण में सातवाहन वंश का उदय हुआ। उसके बाद वाकाटक और उत्तर में गुप्त वंश का राज्य स्थापित हुआ। गुप्त राज्य का अस्त होने के पश्चात् वर्धन वंश विशेष रूप से प्रभावी रहा।”

मानचित्र तुमसे पूछता है :

- मानचित्र का निरीक्षण करने के बाद तुम्हें कौन-कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है?
- इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए तुम्हें मेरी सहायता किस प्रकार होती है?

• **गुप्त साम्राज्य** एक विशाल और महत्त्वपूर्ण साम्राज्य था। क्या महाराष्ट्र इस साम्राज्य का हिस्सा था? यह बताओ।

विद्यार्थियों, भारत के मानचित्र के साथ ही इतिहास का पता लगाने के लिए क्या तुम्हें एक अद्भुत यात्रा पर जाना अच्छा लगेगा? तो चलो फिर...

८.१. शुंग वंश

सम्राट अशोक के पश्चात् मौर्य साम्राज्य में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने लगी। ऐसी अस्थिर परिस्थिति में मौर्य सेना के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने सत्ता अपने अधिकार में कर ली। पुष्यमित्र वैदिक धर्म का समर्थक था। उसने अश्वमेध यज्ञ किया। उसका राज्य विस्तार पंजाब में जालंधर और सियालकोट (शाकल) तक था, ऐसा दिखाई देता है।

८.२. कण्व वंश

शुंग वंश का अंतिम शासक देवभूति था। उसके पश्चात् कण्व वंश की स्थापना हुई। कण्व वंश का संस्थापक वसुदेव कण्व था। उन्होंने कला, संस्कृति और शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

८.३. इंडो-ग्रीक (यवन) शासक

सिकंदर द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के बाद उसकी सेना के अनेक सेना अधिकारी और प्रशासक पश्चिमोत्तर भारत में स्थायी रूप में बस गए। कालांतर में उन्होंने स्वतंत्र राज्यों का निर्माण किया। उन्हें 'इंडो-ग्रीक' (यवन) के रूप में जाना जाता है।



क्या तुम जानते हो?

प्राचीन भारत में 'यवन' शब्द ग्रीक लोगों के लिए प्रयुक्त होता था। इस शब्द की व्युत्पत्ति 'आयोनियन' इस मूल ग्रीक शब्द से हुई। इन इंडो-ग्रीकों को भारतीय साहित्य, शिलालेख में 'यवन' संबोधित किया जाने लगा। कालांतर में विदेश से आने वाले सभी को 'यवन' कहा जाने लगा।

इंडो-ग्रीकों का अफगानिस्तान, पंजाब और गांधार प्रदेशों में विशेष प्रभाव था। इंडो-ग्रीक राजाओं में प्रसिद्ध शासक मिनेंडर अर्थात् 'मिलिंद' था। मिनेंडर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच प्रश्नोत्तर के रूप में हुआ संवाद प्रसिद्ध 'मिलिंदपन्ह' ग्रंथ में देखने को मिलता है। उसमें बौद्ध दर्शन का विवरण समाविष्ट है।

इंडो-ग्रीक राजाओं के सिक्कों पर सामनेवाले हिस्से पर ग्रीक और पिछले हिस्से पर खरोष्ठी लिपियों में लेख पाए जाते हैं। सिक्कों के एक ओर राजा अथवा शासक का चेहरा, उसका विशेष शिरस्त्राण और दूसरी ओर किसी देवता की प्रतिमा उकेरी जाती। इसके द्वारा उन सिक्कों पर ग्रीक शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस काल में पश्चिम एशिया के साथ समुद्री और सड़क मार्ग से चलने वाले व्यापार में बड़ी मात्रा में वृद्धि हुई।



इंडो-ग्रीक सिक्के: सामनेवाला भाग और पिछला भाग



क्या तुम जानते हो?

भारत की उत्तम शैलियों में 'गांधार शैली' एक उत्तम शैली मानी जाती है। इस शैली पर ग्रीक शैली का प्रभाव दिखाई देता है। इस कला शैली का विकास प्रमुखतः कुषाणों के समय में हुआ। इस कला शैली के मुख्य केंद्र आधुनिक पाकिस्तान, अफगानिस्तान और



पश्चिमोत्तर भारत थे। गांधार शैली में मानव आकृति एकदम यथार्थवादी होती है। गांधार शैली में गौतम बुद्ध की अनेक प्रतिमाएँ साकार की गई हैं।

८.४. शक शासक

मौर्योत्तर समय में भारत के पश्चिमोत्तर सीमा से कई विदेशियों ने भारत में प्रवेश किया। उनमें एक था शक। उन्हें 'स्किथियन' भी कहा जाता है। शकों का मुख्य प्रदेश शकस्तान अथवा शिस्तान था। शकस्तान (स्किथिया) वर्तमान ईरान, अफगानिस्तान और पश्चिमोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में फैला हुआ था। वे पश्चिम भारत के गुजरात, महाराष्ट्र और मालवा में स्थायी रूप में बस गए। भारत के शक शासकों में

रुद्रदामन प्रथम सबसे प्रसिद्ध और सामर्थ्यशाली शासक था। उसके शासनकाल में व्यापार में वृद्धि हुई।



जूनागढ़ में शिलालेख

रुद्रदामन का जूनागढ़ में उत्कीर्ण शिलालेख प्रसिद्ध है। इस शिलालेख के विषय में तुमने पिछले पाठ में जानकारी प्राप्त की है। इस शिलालेख में उसकी शासन व्यवस्था, प्रजा के कल्याण हेतु किए कार्यों और युद्ध में दर्शाई वीरता की विस्तार में जानकारी प्राप्त होती है।

शकों के कालखंड में समुद्री व्यापार बड़ी मात्रा में बढ़ गया था। शकों ने बंदरगाहों का विकास किया। व्यापारियों को संरक्षण प्रदान किया। शकों के सिक्के मुख्य रूप से चाँदी के होते थे और उनपर ब्राह्मी लिपि में लेख पाए जाते हैं। परिणामतः भारतीय मुद्रा विज्ञान का अध्ययन करते समय शकों के सिक्के विशेष महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन सिक्कों पर शक संवत्सर का उल्लेख पाया जाता है। ये सिक्के प्राचीन भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण साधन हैं।



क्या तुम जानते हो?

भारतीय कालगणना में 'शक संवत' एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। आज भी यह प्रणाली हमारी पंचांग में प्रयुक्त की जाती है। वर्ष को 'संवत्सर' कहते हैं और प्रत्येक संवत्सर को विशेष नाम दिया जाता है। शक संवत का प्रारंभ ई.स. ७८ में हुआ।

आज चल रहा वर्ष शक कालगणना में कौन-सा वर्ष है, यह जानना होगा तो निम्नानुसार गणित करो:

ई.स. का वर्तमान वर्ष घटा ७८ किया तो वर्तमान वर्ष कौन-सा है, यह समझ में आ सकता है।

जैसे ई.स. वर्ष २०२६ - ७८ = वर्तमान शक वर्ष १९४८.

हमारी पाठ्यपुस्तक के आरंभ में भी तुम्हें ऐसी तिथि दिखाई देगी। देखो तो।



करके देखो

ऊपरी उदाहरण के आधार पर तुम अपने परिवार के सदस्यों अथवा मित्र-सहेलियों के जन्मवर्ष का शक संवत्सर को ज्ञात करो।

८.५. सातवाहन वंश

सातवाहन वंश महाराष्ट्र के इतिहास में प्रथम सामर्थ्यशाली साम्राज्य के रूप में जाना जाता है। मौर्यों के पश्चात देश में अनेक स्थानों पर राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई थी। व्यापार ठंडा पड़ गया था। विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण बढ़ते जा रहे थे। इस स्थिति में **सिमुक नामक राजा ने सातवाहन वंश की स्थापना की**। सातवाहनों ने महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और मध्य प्रदेश पर अपना साम्राज्य स्थापित किया। सातवाहनों में **सामर्थ्यशाली शासक 'गौतमीपुत्र सातकर्णी'** था। उसने शक और यवन जैसे विदेशी सत्ताधीशों को पराजित कर मध्य प्रदेश से महाराष्ट्र तक स्थिर और संगठित साम्राज्य निर्माण किया। उसके पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन उसकी माता गौतमी बलश्री के नाशिक में 'त्रिरश्मि' गुफा के शिलालेख में देखने को मिलता है। इस शिलालेख में उसे 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' के रूप में संबोधित किया गया है। इस संबोधन का अर्थ- जिसके घोड़े तीन समुद्रों का पानी पी चुके हैं, यह होता है। तीन समुद्र अर्थात् अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर हैं। उसके शासन काल में सातवाहनों का साम्राज्य उत्तर में नर्मदा नदी से लेकर दक्षिण में तुंगभद्रा नदी तक फैला हुआ था।

सातवाहनों के शासनकाल में व्यापार का विस्तार हुआ। उनके राज्य से होकर रेशम मार्ग और समुद्री मार्ग जाते थे। परिणामतः भारतीय व्यापारियों का रोम, ग्रीक जैसे दूरस्थ देशों के साथ व्यापार होने लगा।

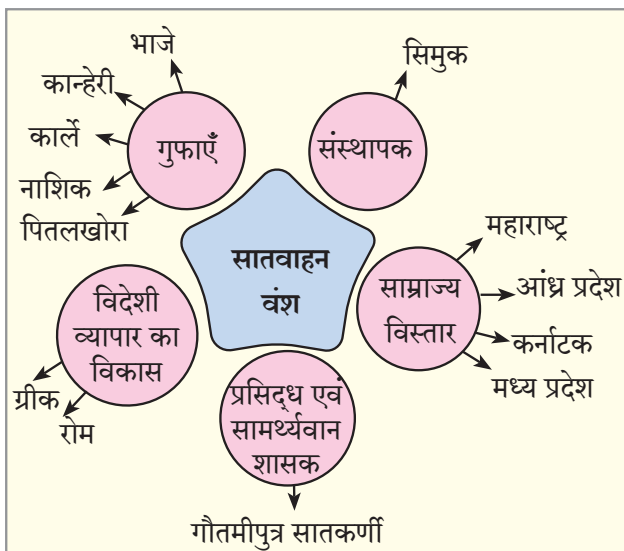


क्या तुम जानते हो ?

ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के कालखंड का सातवाहन राजा पुलुमावी के सिक्के पर जहाज का यह चित्र है। यह चित्र सातवाहनों के समय में समुद्री मार्ग से चलने वाले व्यापार का निर्देशक है।



सातवाहनों के सिक्कों पर ब्राह्मी और प्राकृत लिपि में प्राकृत लेख पाए जाते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से सातवाहन का कालखंड अत्यंत समृद्धि और संपन्नता का माना जाता है। इस कालखंड में बौद्ध धर्म का महत्त्व बढ़ गया और अनेक बौद्ध गुफाएँ खुदवाई गईं। सातवाहन शासनकाल की नाशिक, कार्ला, कान्हेरी, भाजे, पितलखोरा प्रसिद्ध गुफाएँ हैं।



८.६. कुषाण शासक

कुषाण टोलियाँ मूल रूप से मध्य एशिया में थीं। उन्होंने अफगानिस्तान, पाकिस्तान और आगे उत्तर भारत में प्रवेश किया और भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी सत्ता स्थापित की। **कुषाण शासकों में सबसे महान और प्रभावशाली शासक सम्राट कनिष्क** था। कनिष्क के कालखंड में कुषाण साम्राज्य मथुरा प्रदेश से पंजाब, अफगानिस्तान और कश्मीर तक फैला हुआ था।

कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर (वर्तमान में पेशावर) में स्थापित की। उसने बौद्ध धर्म के प्रचारकार्य को बहुत प्रोत्साहन दिया। उसके शासनकाल में बौद्ध परिषद का आयोजन किया गया था।

कुषाण शासनकाल में व्यापार अर्थव्यवस्था में प्रचंड वृद्धि हुई। भारत, चीन, रोम और मध्य एशिया को जोड़ने वाला प्रसिद्ध रेशम मार्ग कुषाणों के नियंत्रण में था। इस मार्ग द्वारा मसालों के पदार्थ, वस्त्र, धातु, रेशम आदि का बड़ी मात्रा में व्यापार चलता था। कुषाणों ने स्वर्ण और चाँदी के उत्कृष्ट सिक्के ढलवाए। इन सिक्कों पर विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ पाई जाती हैं। जैसे- हेरैक्लियस (ग्रीक देवता), अर्दोक्शो (ईरानी देवता), शिव (भारतीय देवता)। इसके आधार पर कुषाणों पर विविध सांस्कृतिक धाराओं का प्रभाव दिखाई देता है।



क्या तुम जानते हो ?

कनिष्क के शासनकाल में चौथी बौद्ध परिषद कुंडलवन (कश्मीर) में आयोजित की गई। इस परिषद में बौद्ध धर्म की सीख को नए से प्रस्तुत किया गया और बौद्ध दर्शन को अधिक व्यापक रूप में विश्लेषित किया गया। इस परिषद में 'हीनयान' और 'महायान' इन दो संप्रदायों की स्थापना हुई। महायान संप्रदाय ने मूर्तिपूजा को स्वीकार किया। परिणामतः इस कालखंड में मथुरा और गांधार कला शैलियों में गौतम बुद्ध की प्रतिमाएँ निर्माण की गईं।



सोचो

मुद्राविज्ञान के अध्ययनकर्ता सिक्कों का सूक्ष्मता से अध्ययन करते हैं और उसके आधार पर संबंधित समय के इतिहास को प्रस्तुत करने में आसानी होती है। ऐसा प्रयास तुम भी करके देखो! चित्र में दिए गए

कनिष्क के सिक्कों का ध्यान से निरीक्षण करो। सिक्के के दोनों पहलुओं को देखकर अंकित चित्र और लेख के आधार पर तुम्हारे ध्यान में क्या आता है; अपनी कॉपी में अंकन करो।



द.७. गुप्त वंश

गुप्त साम्राज्य का कालखंड प्राचीन भारत का 'स्वर्णकाल' माना जाता है। **श्रीगुप्त गुप्त साम्राज्य का संस्थापक था।** गुप्त साम्राज्य के विस्तार का आरंभ प्रथम चंद्रगुप्त के समय में हुआ। उसके पश्चात सत्ता में आए समुद्रगुप्त के पराक्रम का वर्णन उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा लिखित प्रशस्ति में अंकित है। यह प्रशस्ति प्रयागराज के अशोक स्तंभ पर अशोक लेख के नीचे उकेरी गई है। समुद्रगुप्त ने भारत में कश्मीर से नर्मदा तक और ओड़िशा के किनारे से दक्षिण में कांची तक अपना साम्राज्य स्थापित किया। आगे चलकर द्वितीय चंद्रगुप्त अर्थात् विक्रमादित्य के समय में गुप्त साम्राज्य समृद्ध और संपन्न बना। उसने शकों पर पाई विजय उसके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। उसके समय में फाहियान नाम का चीनी यात्री भारत में आया था। उसने गुप्त साम्राज्य की संपन्नता और शांतिमय जीवन की प्रशंसा की है। उसके समय में कालिदास, धन्वंतरि, वराहमिहिर जैसे महान विद्वान हुए थे।



समुद्रगुप्त का सिक्का

गुप्त शासकों के शासनकाल में कला, साहित्य, गणित, खगोल विज्ञान, धातुकार्य, शिक्षा और धर्म का विकास हुआ। **स्कंदगुप्त गुप्त वंश का अंतिम सामर्थ्यशाली शासक था।**

तुम्हारा मत क्या है?

गुप्त कालखंड को 'स्वर्णकाल' क्यों कहते हैं।

द.८. वर्धन वंश

गुप्त साम्राज्य का हास होने के पश्चात उत्तर भारत में पुनः अस्थिरता उत्पन्न हुई। विभिन्न प्रादेशिक शासक सत्ता प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे के साथ संघर्ष करने लगे। ऐसी अस्थिर स्थिति में वर्धन वंश का उदय हुआ। दिल्ली के पास थानेसर नामक स्थान पर प्रभाकर वर्धन नाम का शासक शासन चलाता था। उसके समय में वर्धन वंश प्रभावी बना परंतु उसके पुत्र हर्षवर्धन के कारण इस वंश को ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त हुआ। उसने संपूर्ण उत्तर भारत को संगठित कर एक बलशाली साम्राज्य का निर्माण किया। हर्षवर्धन ने कनौज में अपनी राजधानी प्रस्थापित की। उसका साम्राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल तक फैला हुआ था।

हर्षवर्धन धार्मिक, दयालु, लोकाभिमुख और दानशूर शासक के रूप में विख्यात था। उसने धार्मिक उत्सवों को प्रोत्साहन दिया।

ई.स. चौथी शताब्दी से छठी शताब्दी का भारत





क्या तुम जानते हो?

एक बार हर्षवर्धन ने देखा कि उसकी राजधानी में एक निर्धन परिवार की भोजन-पानी के बिना दुर्दशा हुई है। यह पता चलते ही हर्षवर्धन स्वयं राजभवन से बाहर आया और उसने उस परिवार को दान दिया। उसे यह भी लगा कि केवल अन्न देना पर्याप्त नहीं है बल्कि लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ भी देना आवश्यक है। उसने आदेश दिया कि गाँव में विद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए, अस्पताल खोलने चाहिए और भिक्षुओं के लिए भोजन और आवास उपलब्ध कराने चाहिए। हर्षवर्धन के दयालु स्वभाव के कारण राज्य के प्रजाजनों के मन में उसके प्रति आदर और प्रेम का भाव था।

एक बार हर्षवर्धन ने अपने दरबार में सभा आयोजित की और कहा कि 'राज्य की वास्तविक समृद्धि लोगों की खुशी और कल्याण में है। जो दान करता है, वही सच्चा बलशाली राजा होता है।' चीनी आप्रवासी युआन श्वांग यान ने अपने यात्रा वर्णन में भी हर्षवर्धन

की दानशूरता के विषय में लिखा है। वह कहता है कि सम्राट हर्षवर्धन प्रत्येक पाँच वर्ष में प्रयागराज में दान का भव्य उत्सव आयोजित करता था। इस उत्सव में वह अपनी सारी संपत्ति दान करता था।

हर्षवर्धन का यह दान धर्म इतना प्रसिद्ध हुआ कि आज भी उसे 'दानशूर' सम्राट के रूप में जाना जाता है।

हर्षवर्धन का दक्षिण भारत के चालुक्य के साथ संघर्ष हुआ। चालुक्यों का राजा पुलकेशी द्वितीय ने हर्षवर्धन को पराजित कर दक्षिण भारत में उसका प्रवेश होने से रोका। अतः हर्षवर्धन का साम्राज्य गंगा की घाटी तक सीमित रहा। उसकी मृत्यु के पश्चात वर्धन साम्राज्य का हास हुआ।



करके देखो

एक मानचित्र कॉपी बनाओ। प्रत्येक वंश को दर्शाने के लिए स्टेन्सिल के सहारे भारत का स्वतंत्र मानचित्र बनाओ। प्रत्येक वंश के प्रदेश को स्वतंत्र रंग से रँगो और उनकी राजधानी, उल्लेखनीय स्थान और व्यापार मार्गों के लिए कुछ चिह्नों का उपयोग करो।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) एक शब्द में उत्तर लिखो।

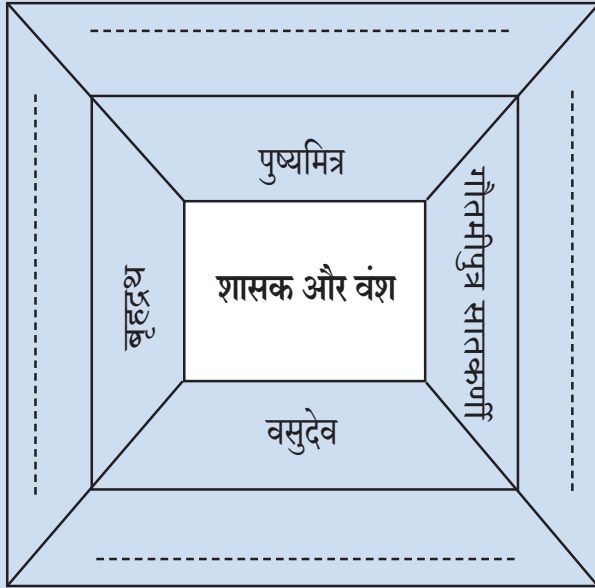
१. मौर्य सेना का सेनापति।
२. कण्व वंश का संस्थापक।
३. बौद्ध भिक्षु नागसेन और मिनेंडर के बीच हुए संवाद पर आधारित ग्रंथ।
४. भारतीय कालगणना की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति।

ब) कौन, वह लिखो।

१. उसे 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' संबोधित किया जाता है।

२. इसके शासनकाल में बौद्ध धर्म की चौथी परिषद आयोजित की गई।
३. इसे गुप्त वंश का संस्थापक कहा जाता है।
४. प्रत्येक पाँच वर्ष में यह अपने पास की सारी संपत्ति दान करता था।
५. इसने हर्षवर्धन को पराजित कर वर्धन साम्राज्य का दक्षिण में विस्तार होने से रोका।

प्र.२ अ) संकल्पना चित्र पूर्ण करो।



ब) निम्न घटनाएँ कालक्रमानुसार लिखो।

- सम्राट अशोक के पश्चात मौर्य साम्राज्य में अस्थिरता बढ़ने लगी।
- कण्व वंश का संस्थापक वासुदेव कण्व था।
- मौर्य सेना का सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने सत्ता अपने अधिकार में कर ली।
- शुंग वंश का अंतिम शासक देवभूति था।

प्र.३ अ) संक्षेप में जानकारी लिखो।

- इंडो-ग्रीक शासकों के सिक्के।
- कुषाण शासकों पर विविध सांस्कृतिक धाराओं का प्रभाव।

ब) कारणसहित लिखो।

१. प्राचीन समय में भारत में आए विदेशी यात्रियों द्वारा लिखित यात्रा वर्णन इतिहास के साधन के रूप में महत्वपूर्ण होते हैं।

२. गुप्त कालखंड को 'स्वर्णकाल' माना जाता है।

कृति

तुम अपने अभिभावकों के साथ सैर करने अथवा पर्यटन करने जाने पर उसके बारे में लिखो।

जैसे :

- वहाँ किस वाहन से गए?
- वहाँ क्या-क्या देखा?
- वहाँ भौगोलिक विशेषताएँ।
- उस स्थान की कला, भाषा, भोजन।

उपक्रम

- मानचित्र में सातवाहनकालीन ऐतिहासिक स्थान दर्शाओ।
- मुद्रा संबंधित देश की विशेषताओं, नीतियों-उद्देश्यों को प्रतिबिंबित करती है। भारतीय मुद्रा-नोटों का निरीक्षण करो और उनपर अंकित विशेषतापूर्ण बातों को लिखो।



प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत



९.१ प्राचीन भारत का सांस्कृतिक जीवन

९.२ प्राचीन भारत का व्यापार व्यवसाय और आर्थिक व्यापार

९.३ प्राचीन भारत का वैद्यक शास्त्र

९.४. महाराष्ट्र की मिली-जुली संस्कृति

९.५. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति

विद्यार्थी मित्रो... कल्पना करो कि हमारे पास परंपरा से चला आ रहा एक खजाना है जिसमें स्वर्ण, रत्न और मुद्राओं में से किसी का भी समावेश नहीं है। फिर भी वह अनमोल है! आज हम इस अनमोल खजाने का रहस्य खोलने जा रहे हैं। यह खजाना अर्थात् 'भारत की सांस्कृतिक विरासत' है।

तो फिर चलो, इस खजाने की संदूक को धीरे-से खोलकर देखेंगे और हमारे देश द्वारा संरक्षित कला, परंपरा, नृत्य, संगीत और प्राचीन वस्तुओं की अनूठी दुनिया को ढूँढ़ेंगे।



सोचो

- हमारे देश में विविधता है और विविधता में भी एकता है, ऐसा क्यों कहा जाता है?
- भारत में विभिन्न भाषाएँ, नृत्य, वेशभूषा, रूढ़ि और परंपरा क्यों हैं?
- अजंता की गुफाओं में सुंदर चित्रों का निरीक्षण करते समय तुम्हें क्या लगता है?
- नालंदा विश्वविद्यालय में हजारों विद्यार्थी अध्ययन करते थे; क्या तुम यह जानते हो?
- महाराष्ट्र की भूमि में मिली-जुली संस्कृति विकसित हुई। उसके कुछ कारण हो सकते हैं, ऐसा तुम्हें क्यों लगता है?

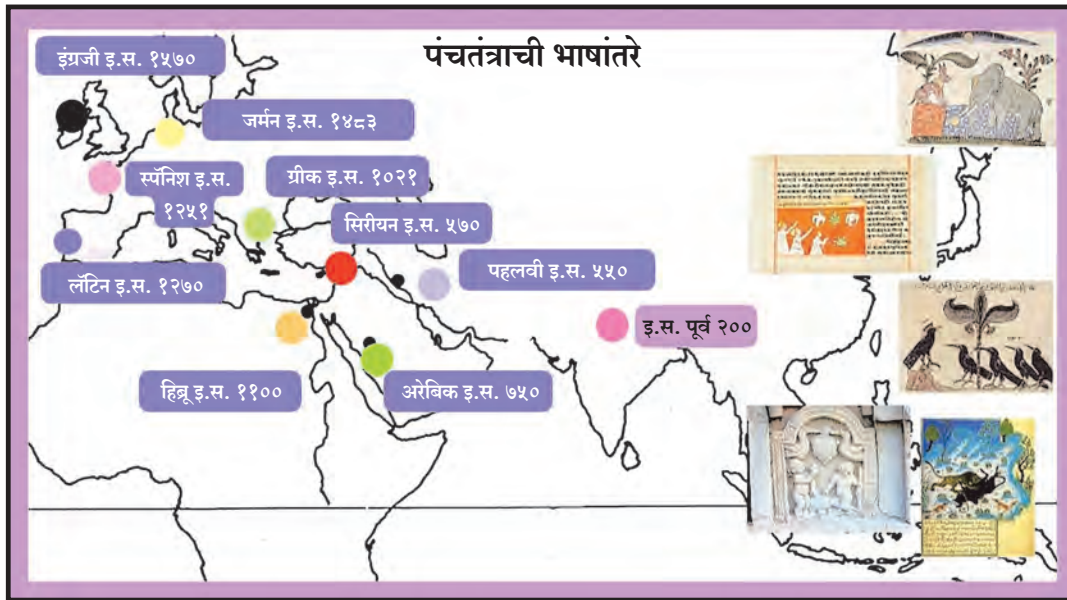
इसके बारे में अधिक जानने के लिए तैयार रहो।

९.१. प्राचीन भारत का सांस्कृतिक जीवन

प्राचीन भारत का सांस्कृतिक जीवन बहुत ही संपन्न और विविधतापूर्ण था। इस संस्कृति के विविध आयाम थे। उन आयामों के माध्यम से हमें भारत के धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, पर्व-उत्सव, सामाजिक जीवन और दैनिक व्यवहार के दर्शन होते हैं। विविध भौगोलिक प्रदेशों की परिस्थिति का अनुसरण कर भाषा, वेशभूषा, खाद्य संस्कृति और वास्तुकला के विभिन्न पहलू निर्माण हुए। इतनी विविधता होते हुए भी हमारी संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसे मूल्य दृढ़ता से जड़ जमाए हुए हैं। इसी के परिणामस्वरूप भारतीय समाज की विविधता में भी एकता दिखाई देती है।

■ वाङ्मय आणि साहित्य

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक परंपरा द्वारा दिया ज्ञान 'वाङ्मय' और लिखित रूप में जो हम तक पहुँचा है, उसे 'साहित्य' कहते हैं। वाङ्मय में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों का समावेश होता है तो साहित्य में पुराण, बौद्ध ग्रंथ, जैन ग्रंथ, काव्य, नाटक, नीति-शास्त्र, दर्शन और अन्य धार्मिक ग्रंथों का समावेश होता है।



ज्ञान, दर्शन, नैतिक मूल्य, धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को पढ़ाने का माध्यम साहित्य था। पाणिनी व्याकरणकार ने 'अष्टाध्यायी' नामक व्याकरण ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ का भाष्य करने वाला 'महाभाष्य' ग्रंथ पतंजलि ने लिखा। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों का उपयोग सामाजिक आदर्श और नीतिमूल्य दृढ़ करने के लिए किया गया। कवि कल्हण रचित कश्मीर का इतिहास बतानेवाला 'राजतरंगिणी' ग्रंथ बाणभट्ट का 'हर्षचरित' ऐसे इतिहासविषयक साहित्य की निर्मिति प्राचीन काल में हुई।



क्या तुम जानते हो ?

'प्राचीन भारत में नैतिक मूल्यों पर आधारित 'पंचतंत्र' एक प्रसिद्ध कथासंग्रह है। माना जाता है कि इसे विष्णु शर्मा ने रचा है। पंचतंत्र की कहानियों में पात्र सिंह, बाघ, हंस, कछुआ, खरगोश जैसे प्राणियों के रूप में आते हैं परंतु इन कथाओं का उद्देश्य प्रमुखतः मनुष्य का नैतिक आचरण कैसा होना चाहिए, इस विषय में मार्गदर्शन करना है।

पंचतंत्र की कहानियाँ किस उद्देश्य से लिखी गईं; इसकी यह एक कहानी है।

प्राचीन भारत में अमरशक्ति नाम का एक राजा था। उसके तीन बेटे थे। वे तीनों भी पढ़ाई में रुचि नहीं रखते थे। राजा उनके भविष्य के प्रति चिंतित रहता था। अतः उसने विद्वान शिक्षक विष्णु शर्मा को बुलाया और प्रार्थना की कि वे राजकुमारों को व्यवहार कुशलता की शिक्षा प्रदान करें। विष्णु शर्मा ने इस चुनौती को स्वीकार किया। विष्णु शर्मा ने उन्हें शिक्षा ग्रंथों द्वारा नहीं बल्कि कहानियों द्वारा पढ़ाने की अलग पद्धति अपनाई। उन्होंने प्राणियों पर आधारित छोटी-छोटी कहानियाँ बनाईं। इन कहानियों के उद्देश्यों द्वारा मित्रता, धैर्य, नीति, संकट से राह निकालना, विश्वास और व्यवहार कुशलता के विषय में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इन कहानियों में तीनों राजकुमार ऐसे रममाण हो गए कि उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण पाठ बड़ी आसानी से मिलते गए और कुछ ही महीनों में वे बुद्धिमान, समझदार और राज्य प्रशासन के लिए योग्य और पात्र बने।

इन सभी कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' नाम से जाना जाने लगा। ये कहानियाँ विगत कई शताब्दियों और अनेक देशों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी बड़ी रुचि के साथ पढ़ी

गई, बताई गई। पंचतंत्र का पचास से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। इसी तरह, जातक कथाएँ भी सीधी-सादी भाषा में योग्य-अयोग्य की अनुभूति करा देती हैं।



करके देखो

क्या तुम्हें पंचतंत्र की कोई कहानी अथवा जातक कथा मालूम है? वे कथाएँ प्राप्त करके पढ़ो और कक्षा में उसका प्रस्तुतीकरण करो।

प्राचीन भारत की नाट्यकला	प्राचीन भारत की संगीत कला	प्राचीन भारत की नृत्यकला
* प्राचीन भारत की नाट्यकला अत्यंत उन्नत थी। भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में नृत्य, नाटक, अभिनय, संगीत, रंगमंच, नवरस, भाव, वेशभूषा, सजावट और दर्शकों से संवाद जैसे नाट्यकला के सभी अंगों का अत्यंत विस्तार से विचार-विमर्श किया गया है। आज भी नाटक, नृत्य और अभिनय सीखते समय इन ग्रंथों का अध्ययन किया जाता है। * इस समय के कुछ विख्यात नाटक : - महाकवि भास ने तेरह नाटक लिखे हैं। उनमें 'स्वप्नवासवदत्त' प्रसिद्ध नाटक है। - मौर्योत्तर समय में अश्वघोष ने 'सारीपुत्त प्रकरण' नाटक लिखा। - कालिदास श्रेष्ठ कवि और नाटककार हुए। उसने 'शाकुंतल', 'मालविकाग्निमित्र' और 'विक्रमोर्वशीय' ये तीन विश्वविख्यात नाटक लिखे। - शूद्रक ने 'मृच्छकटिक' और विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' नाटक रचे। - सम्राट हर्षवर्धन ने 'रत्नावली', 'प्रियदर्शिका' और 'नागानंद' ये तीन नाटक स्वयं रचे हैं।	* भारतीय संगीत परंपरा का उद्गम सामवेद में है। * आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र ये चार उपवेद माने गए हैं। उनमें गांधर्ववेद भारतीय संगीत, नृत्य और वादन का स्रोत माना जाता है। * संगीत रत्नाकर' संगीत विषयक प्रसिद्ध ग्रंथ है। यह ग्रंथ शारंगदेव नाम के संगीतज्ञ द्वारा लिखित है।	* वैदिक समय से भारतीय साहित्य में नृत्य विषय के संदर्भ पाए जाते हैं। * भारत के अनेक प्रदेश में विविध नृत्य प्रकार स्वतंत्र रूप में विकसित होते गए। * ऐसा माना जाता है कि भारतीय नृत्यकला में कथक, कथकली, भरतनाट्यम, मणिपुरी, ओड़िशी, कुचिपुड़ी और मोहिनीअट्टम, ये सात अभिजात्य नृत्य परंपराएँ हैं। * प्राचीन भारत में विविध प्रदेशों में लोकनृत्य प्रस्तुत किए जाते थे। पर्व-उत्सव जैसे अवसरों पर आनंद व्यक्त करने के लिए नृत्य करते थे। लोकनृत्य उत्स्फूर्त होता है।

■ कला आणि स्थापत्य

प्राचीन भारत में अजंता की गुफाओं में बनाए गए भित्तिचित्र विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। इन चित्रों के लिए विविध वनस्पतियों, मिट्टी, पत्थरों से बनाए रंग प्रयुक्त किए गए हैं। चित्र में अंकित व्यक्ति के आभूषण, केश विन्यास का सूक्ष्म विवरण दर्शाया गया है। उन चित्रों द्वारा उस समय की जीवन शैली, नृत्य, वाद्य, प्रकृति आदि का सुंदर चित्रण दिखाई देता है। एलोरा (वेरुल) की गुफाओं में हिंदू, बौद्ध और जैन गुफाएँ देखने को मिलती हैं। एलोरा में कैलाश गुफा संसार का एक अद्भुत मंदिर है। एक विशाल शिलाखंड में उकेरी गई इस गुफा का प्रारंभ कलश से होकर नींव तक समाप्त होता है। मंदिर में सुंदर शिल्प, उत्कीर्ण स्तंभ, नंदी मंडप जैसी अप्रतिम उत्कीर्ण कलाकारिता देखने को मिलती है। साथ ही, इन शिल्पों में विविध देवी-देवता और पौराणिक कथाओं के दृश्य भी उकेरे गए हैं।

बौद्ध गुफाओं में स्तंभ, स्तूप, चैत्यगृह और विहार



एलोरा-कैलाश मंदिर

तत्कालीन स्थापत्य के प्रमुख घटक हैं। स्वतंत्र ढंग से खड़े किए गए स्तूप भारतीय स्थापत्य कला की एक और विशेषता है। सम्राट अशोक के समय में सांची में स्तूप का निर्माण करवाया गया। उनके कालांतर में सातवाहन के समय में स्तूप के चारों ओर चार भव्य द्वार (तोरण) बनवाए गए। उनपर सिंह, हाथी आदि आकृतियाँ उकेरी गईं। साथ ही, गौतम बुद्ध के चरित्र के प्रसंग भी उकेरे गए हैं। अन्य प्राचीन स्तूपों पर भी



सांची स्तूप

ऐसी आकृतियाँ उकेरी दिखाई देती हैं। कुछ स्तूप के आस-पास धर्मचर्चा करने अथवा उपासना करने हेतु सभागृह बनाए होते थे, उन्हें चैत्यगृह कहते हैं। कार्ले गुफा का 'चैत्यगृह' इस स्थापत्यकला का उत्तम नमूना है।

चैत्यगृह के समीप ही बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए गुफाएँ खोदी जाती थीं। उन्हें 'विहार' कहते थे। महाराष्ट्र के भाजे में पाया जाने वाला विहार सबसे प्राचीन माना जाता है। नाशिक, बेड़से, अजंता आदि स्थानों पर पाए जाने वाले विहार भी प्रसिद्ध हैं। ओड़िशा में खंडगिरि और उदयगिरि की जैन गुफाएँ भी प्रसिद्ध हैं।



क्या तुम जानते हो?

दिल्ली के महरौली में लौहस्तंभ है। यह लौहस्तंभ भारत के प्राचीन प्रगत धातुशास्त्र का उदाहरण है। यह स्तंभ गुप्त सम्राट द्वितीय चंद्रगुप्त अर्थात विक्रमादित्य के शासनकाल में बनवाया गया। इस स्तंभ के विषय में सबसे विशेष बात यह है कि यह लौहस्तंभ १६०० वर्ष से अधिक समय से खड़ा है। फिर भी उसमें अब तक जंग नहीं लगा है।



लौहस्तंभ

१.२. प्राचीन भारत में व्यापार, व्यवसाय और आर्थिक जीवन

इस कालखंड में कृषि प्रमुख व्यवसाय था। लोगों के अनाज, वस्त्र और प्रतिदिन की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए खेती एक महत्वपूर्ण व्यवसाय था। गंगा, यमुना, गोदावरी और कृष्णा जैसी नदियों की घाटियों का प्रदेश उपजाऊ था। देशांतरगत और अंतर्देशीय व्यापार समुद्री मार्ग व सड़क मार्ग द्वारा विकसित हुआ। प्राचीन भारत में अनाज के साथ-साथ वस्त्र, मसालों के पदार्थ, धातु, हस्तिदंत, बहुमूल्य रत्न जैसी वस्तुओं का बड़ी मात्रा में व्यापार चलता था। विशेष रूप से सातवाहन के समय में रोमन साम्राज्य के साथ भी व्यापारिक संबंध थे। मसालों के पदार्थ, रेशमी वस्त्र, बहुमूल्य मणि, आभूषण जैसी वस्तुओं का बड़ी मात्रा में आयात-निर्यात होता था। नए बाजार निर्माण हुए। मुद्रा व्यवस्था नियोजित थी तथा कर प्रणाली भी सुचारू रूप से कार्यान्वित थी। परिणामतः राज्य की अर्थव्यवस्था दृढ़ और स्थिर बनी रही। खेती के अतिरिक्त वस्त्रोद्योग और धातु कार्य जैसे उद्योग भी आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण थे। व्यापारी मार्गों पर स्थित बंदरगाह, बाजार और नगर विकसित हो रहे थे। इस समय में व्यापार के कारण समृद्धि आई और उसका परिणाम सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन पर भी दिखाई देते हैं।



क्या तुम जानते हो?

सातवाहनों के समय से दक्षिण में व्यापार और उद्योगों की संपन्नता और समृद्धि में वृद्धि हो रही थी। दक्षिण में अनेक नगरों का उदय होता दिखाई देता है। जैसे- प्रतिष्ठान (पैठण), तगर (तेर), नासिक (नाशिक), करहाटक (क-हाड) आदि। ये नगर परकोटे प्राप्त थे। इन नगरों के उत्खनन में पाए गए रोमन सिक्कों के आधार पर उस कालखंड के प्रगत व्यापार का पता चलता है। इस कालखंड में सोपारा, कल्याण, भड़ोच (भरुच) मुख्य बंदरगाह थे। जुन्नर और नाशिक

स्थानों पर उकेरे गए शिलालेखों में कुलारिक (मिट्टी के बरतन बनाने वाला), तीलपिषक (तेल के कोल्हू पर काम करने वाला), कोलिक (बुनकर/जुलाहा) जैसे अनेक व्यवसायियों का उल्लेख पाया जाता है।



क्या करोगे ?

यदि उस कालखंड में तुम व्यापारी होते तो तुम्हें कौन-सा व्यवसाय अथवा व्यापार करना अच्छा लगता? क्यों?

१.३. प्राचीन भारत में वैद्यक शास्त्र

भारतीय वैद्यक शास्त्र का उद्गम अथर्ववेद में है। जीवक, सुश्रुत, चरक जैसे महत्वपूर्ण वैद्यों ने शरीर संरचना, शल्यक्रिया, औषधि निर्माण, रोगनिवारण और आहार के नियम के विषय में अमूल्य ग्रंथ रचे।

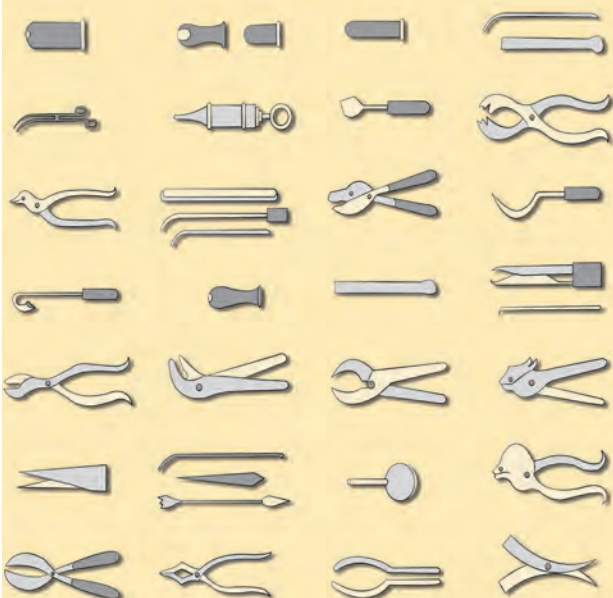
इन ग्रंथों ने भारतीय वैद्यक शास्त्र की नींव रखी।

- प्राचीन भारत में जीवक विख्यात वैद्य थे। उन्होंने भगवान बुद्ध का उपचार किया था, यह बौद्ध ग्रंथों के आधार पर दिखाई देता है। उन्होंने तक्षशिला में वैद्यक शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने शल्यक्रिया, औषधोपचार और रोगनिदान क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया।
- सुश्रुत ने 'सुश्रुतसंहिता' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में वैद्यक शिक्षा, औषधीय चिकित्सा, शल्यक्रिया और आरोग्य विज्ञान आदि का शास्त्रीय विवेचन किया गया है।
- चरक ने 'चरक संहिता' ग्रंथ में रोग प्रतिकारक शक्ति, औषधियों का उचित उपयोग, आहार-विहार और जीवन शैली के नियमों का विस्तार में उल्लेख प्राप्त है। यह ग्रंथ अरबस्तान, तिब्बत, चीन आदि देशों में भी प्रसिद्ध था।



क्या तुम जानते हो?

‘सुश्रुतसंहिता’ ग्रंथ में सुश्रुत ने अनेक शल्यक्रियाओं और उनके लिए आवश्यक उपकरणों की चित्रसहित जानकारी दी है। पेट की शल्यक्रिया करना, कृत्रिम नासिकारोपण करना, त्वचा रोपण करना आदि शल्यक्रियाओं का सुश्रुतसंहिता में उल्लेख मिलता है। साथ ही, कुल ११२० रोगों की लक्षण सहित सूची दी है। सुश्रुत को शल्यक्रियाओं का ‘आद्यजनक’ माना जाता है। उसने नाक की शल्यक्रिया के लिए जो पद्धति खोजी, वह अत्यंत नवीनतापूर्ण थी। नाक टूट जाने से आने वाली अपंगता को समाप्त करने के लिए नाक की शल्यक्रिया में सुश्रुत ने आरंभ में गाल की त्वचा का उपयोग किया। सुश्रुत ने जिस तकनीक का विकास किया; उसी तकनीक का अध्ययन आगे चलकर १८वीं शताब्दी में यूरोपियन लोगों ने किया। इस शल्यक्रिया में त्वचा के जिस हिस्से का उपयोग किया जाता है; उसके लिए आज भी ‘इंडियन फ्लैप’ संज्ञा उपयोग में लाई जाती है। इससे सुश्रुत की महानता रेखांकित हो जाती है।



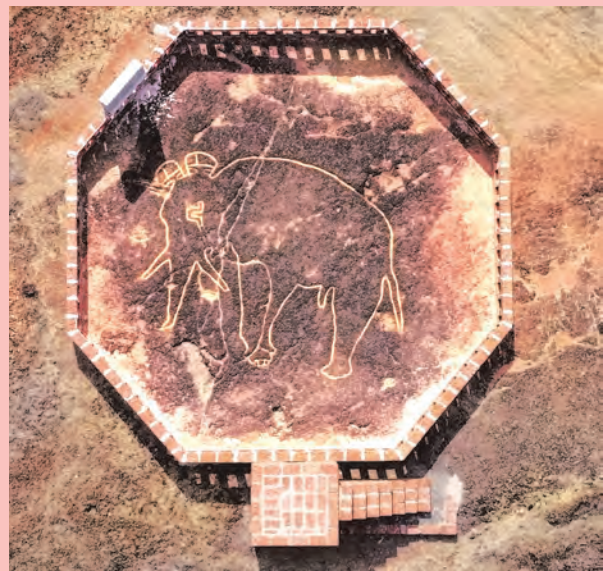
सुश्रुत के ग्रंथ में दिए गए शल्यक्रिया के उपकरण

१.४. महाराष्ट्र की मिली जुली संस्कृति

महाराष्ट्र में धर्म, कला, भाषा, शिक्षा और परंपरा का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। अंग्रेजी में महाराष्ट्र प्रदेश प्राचीन भारत के ‘मेलिंग पॉट’ के रूप में जाना जाता था। विस्तृत समुद्री तट के कारण इस प्रदेश में व्यापार, विदेश संपर्क और विभिन्न संस्कृतियों के बीच आसानी से आदान-प्रदान हुआ। सातवाहन के शासनकाल में रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार बढ़ा। अजंता-एलोरा और कान्हेरी गुफाओं में बौद्ध और जैन परंपराएँ दिखाई देती हैं। स्थापत्यकला, शिल्पकला और शिलालेखों के कारण तत्कालीन इतिहास की खोज की जा सकती है। भाषा और साहित्य में विविधता दिखाई देती है। महाराष्ट्र में कुछ प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र थे। महाराष्ट्र की प्राचीन शिक्षा मुख्य रूप से गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी। इसके अतिरिक्त विभिन्न बौद्ध विहार भी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे। पैठण, अजंता, एलोरा और कान्हेरी शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र थे। यहाँ विद्यार्थी धर्म, दर्शन, भाषा, वैद्यक शास्त्र, शिल्प कला जैसे विषयों का ज्ञान अर्जित करते थे।



क्या तुम जानते हो?



विद्यार्थी मित्रो, दिए गए चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण करो। क्या तुम जानते हो कि यह चित्र किसका है।

पथरीले मैदान पर यह शिल्प हजारों वर्ष पूर्व खनन कर रखे हैं। सूर्य, प्राणी, नृत्य करते लोग, शिकारी विविध चिह्नोंवाले चित्र हैं। उन्हें शिलाखंड शिल्प कहते हैं। महाराष्ट्र के कोकण प्रांत में विशेष रूप से रत्नागिरि राजापुर में अनेक स्थानों पर ऐसे रहस्यमय उत्कीर्ण शिल्प आज भी अस्तित्व में हैं।

ये पाषाण शिल्प महाराष्ट्र की अनूठी और प्राचीन सांस्कृतिक विरासत हैं।

१.५. प्राचीन भारत में शिक्षा पद्धति

शिक्षा का आरंभ घरेलू शिक्षा से होता था। आगे चलकर विद्यार्थी गुरुकुल में पढ़ाई आरंभ होती थी। नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में विशेष विषयों का अध्ययन करते थे। विद्यार्थियों को विज्ञान, गणित, ज्योतिष, संगीत, शिल्पकला, अस्त्रविद्या, आयुर्वेद, वास्तुकला के विषय में गहन शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों को आचरण, संस्कार, नैतिक मूल्य और जीवनशैली के नियम पढ़ाए जाते थे। प्राचीन भारत में स्त्रियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी जैसी महिला शिष्यों का उल्लेख कुछ ग्रंथों में पाया जाता है।

■ तक्षशिला विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत में तक्षशिला अति प्राचीन और प्रतिष्ठित शिक्षा केंद्रों में से एक था। यह वर्तमान पाकिस्तान की रावलपिंडी के पास था। तक्षशिला विश्वविद्यालय में विविध विषयों का गहन ज्ञान प्रदान किया जाता था। इस विश्वविद्यालय में दूर-दूर से विद्यार्थी आते थे। मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी। व्याकरणकार पाणिनि, वैद्य चरक और वैद्य जीवक भी इसी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे।

■ नालंदा विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत में नालंदा विश्वविद्यालय विख्यात था। नालंदा विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वीय स्थल को यूनेस्को ने विश्व विरासत धरोहर के रूप में घोषित किया है। ई.स. की ५ वी शताब्दी में गुप्त शासनकाल में नालंदा की स्थापना हुई। नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध दर्शन, वेद, गणित, ज्योतिष, साहित्य, संगीत और कला के विषय पढ़ाए जाते थे। यहाँ १०,००० से अधिक विद्यार्थियों के रहने की सुविधा थी। यहाँ विभिन्न स्थानों से अध्यापक आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में एक भव्य ग्रंथालय (पुस्तकालय) था। नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए अत्यंत कठिन प्रवेश परीक्षा देनी पड़ती थी और उसमें उत्तीर्ण होना बहुत मुश्किल था।



नालंदा विद्यापीठ

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

ई.स. की आठवीं शताब्दी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। यह विश्वविद्यालय वर्तमान बिहार के भागलपुर के समीप स्थित था। इस विश्वविद्यालय में भी विद्वानों द्वारा प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। यहाँ मुख्यतः बौद्ध दर्शन, धर्मशास्त्र, संप्रदाय, आयुर्वेद और साहित्य का अध्ययन किया जाता था।

अन्य महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र

प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त वाराणसी,

वल्लभी और कौशांबी शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केंद्र थे। यहाँ कला, स्थापत्य और साहित्य का गहन अध्यापन किया जाता था। महाराष्ट्र में अर्थात् वर्तमान में पैठण सातवाहन काल में शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। देखा न! भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत कितनी अद्भुत है! भारत ने ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की

थी। सचमुच, यह एक अमूल्य सांस्कृतिक कोष है।



करके देखो।

अब तुम इन सांस्कृतिक बिंदुओं से संबंधित चित्र खोजो। उन चित्रों की रंगीन सारिणियाँ, तैयार करो। तुम्हारी कक्षा / विद्यालय में एक प्रदर्शनी आयोजित करो।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द लिखकर करो।

- पतंजलि का व्याकरण विषयक ग्रंथ है।
- भरतमुनि ने ग्रंथ लिखा।

ब) एक वाक्य में उत्तर लिखो।

- विष्णु शर्मा द्वारा लिखित कथा संग्रह का नाम क्या है?
- गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित कहानियों को क्या कहते हैं?
- कश्मीर का इतिहास बताने वाले कवि कल्हण के ग्रंथ का नाम लिखो।
- सातवाहन समय में शिक्षा के प्रमुख केंद्र कौन-से थे?

प्र.२ अ) जोड़ियाँ मिलाओ।

‘अ’ गुट

- शारंगदेव
- भास
- कालिदास
- विशाखदत्त

‘ब’ गुट

- शाकुंतल
- संगीत रत्नाकर
- मुद्राराक्षस
- स्वप्नवासवदत्त

ब) सारिणी पूर्ण करो।

प्राचीन विश्वविद्यालय

वर्तमान स्थान

.....

रावलपिंडी

नालंदा

.....

.....

भागलपुर

प्र.३ अ) टिप्पणी लिखो।

- नालंदा विश्वविद्यालय
- सुश्रुत संहिता

ब) संक्षेप में उत्तर लिखो।

- भारत के सात आभिजात्य नृत्य प्रकार मुख्य रूप से किन राज्यों में हैं; उनके नाम लिखो।
- दिल्ली के महरौली में स्थित लौहस्तंभ की जानकारी लिखो।

प्र.४ विस्तार में उत्तर लिखो।

- सांची में स्थित स्तूप का चित्र देखो और उसका वर्णन लिखो।
- महाराष्ट्र की मिली-जुली संस्कृति के बारे में संक्षेप में जानकारी लिखो।

प्र.५ प्राचीन समय की शिक्षा पद्धति और आधुनिक समय की शिक्षा प्रणाली के बीच तुलना करो।

प्र.६ पहेली पूर्ण करो।

१)

१) म			२)
३)			

खड़े शब्द:

१) एक प्राचीन महाकाव्य

२) एक प्राचीन विश्वविद्यालय

आड़े शब्द:

३) एक प्राचीन विश्वविद्यालय

उपक्रम

- तुम्हारे परिसर में आयुर्वेदिक डॉक्टर से मिलकर आयुर्वेद उपचार पद्धति की जानकारी लिखो।
- अंतरजाल की सहायता से शिलाखंड पर उकेरे गए चित्र खोजो।
- पंचतंत्र और जातक कथा पढ़ो। उनमें से किसी एक कथा का नाट्यीकरण परिपाठ में प्रस्तुत करो।



१० प्राचीन भारत और संसार



१०.१. पर्शियन संस्कृति से संपर्क

१०.३. भारत और पड़ोसी देश

१०.२. ग्रीक-रोमन संस्कृति का भारत पर परिणाम



सोचो



भारत में पाया गया यह एक रोमन सिक्का है। यह सिक्का भारत में कैसे आया होगा?



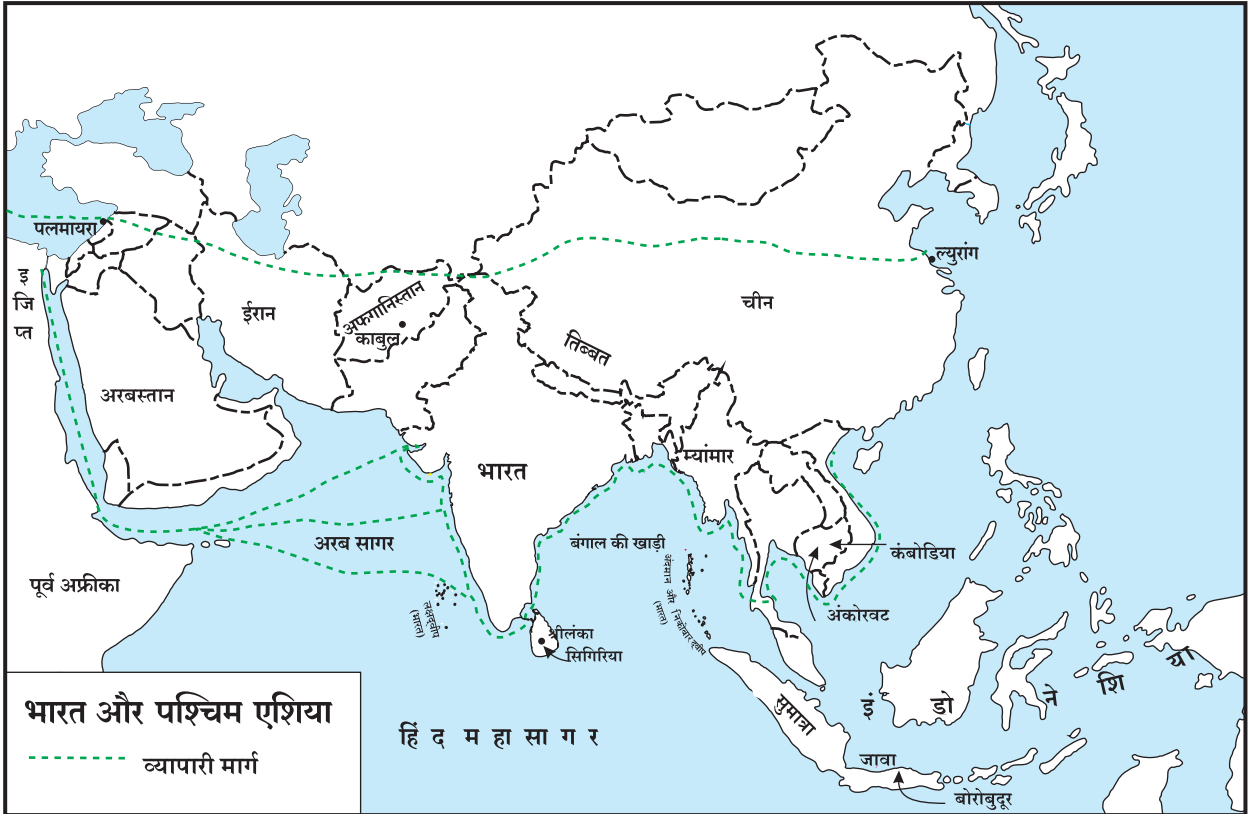
बाईं ओर के चित्र में ईरानी साम्राज्य की राजधानी पर्सिपोलीस में स्थित स्तंभ दिखाई देता है और दाईं ओर चित्र में अशोकस्तंभ दिखाई देता है। क्या दोनों में कुछ समानता दिखाई देती है?



तुमने पाठ क्र. ८ में यह चित्र देखा है। गौतम बुद्ध की इस प्रतिमा पर ग्रीक कला का प्रभाव दिखाई देता है। ऐसा क्यों हुआ होगा?



इन दो चित्रों में एक चित्र भारत का और एक श्रीलंका का है। इन दोनों चित्रों में क्या तुम्हें कुछ समानता दिखाई देती है?



यह मानचित्र भारत और एशिया के बीच चलने वाला व्यापारी मार्ग का है। इस मार्ग द्वारा किन वस्तुओं का व्यापार हुआ होगा ?

इन सभी चित्रों से तुम्हारे ध्यान में आया कि प्राचीन भारत का बाहरी देशों के साथ व्यापारिक संबंध था अर्थात् उनमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता था। प्राचीन समय में भारत अनेक देशों के साथ सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारी संबंधों से जोड़ा गया एक महत्वपूर्ण केंद्रबिंदु था। मध्य एशिया के देश ईरान (पर्शिया), चीन, तिब्बत, म्यांमार, श्रीलंका, कंबोडिया और इंडोनेशिया के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध थे। इन देशों में भारत के धर्मों का प्रसार हुआ। सांस्कृतिक संबंधों के कारण उन देशों में भिन्न-भिन्न कला शैलियों का उदय हुआ।



करके देखो

पाठ्यपुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर दी गई ऐतिहासिक बोधपरक कथामाला का भाग-४ प्राप्त करो और

उसकी कथाएँ पढ़कर भारत और अन्य देशों के बीच के सांस्कृतिक संबंध समझ लो।

१०.१. पर्शियन संस्कृति से संपर्क

प्राचीन भारत और पर्शिया (वर्तमान में ईरान) के बीच सांस्कृतिक, व्यापारिक और राजनीतिक संबंध थे। विश्व की विकसित प्राचीन संस्कृतियों में से एक ईरानी संस्कृति मानी जाती है। पर्शिया का साम्राज्य रोम तक फैला हुआ था। इस साम्राज्य का प्रशासन अनुशासन-बद्ध था। प्राचीन पर्शिया की शिल्पकला की परंपरा विकसित थी। पर्शियन शिल्पकला का प्रभाव भारतीय शिल्पकला पर भी दिखाई देता है। भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर प्रदेश (गांधार सिंध) पर्शियन साम्राज्य का एक हिस्सा था। पर्शियन साम्राज्य को 'अखामोनीय साम्राज्य' के रूप में जाना जाता था। पर्शियन साम्राज्य की प्रांत अनुसार विभाजन किया गया था। विभागीकरण,

उसके अनुसार कर प्रणाली, गुप्तचर व्यवस्था और अधिकारियों की श्रेणी की संरचना की थी। इन बातों का प्रभाव मौर्य साम्राज्य की शासन व्यवस्था पर दिखाई देता है।

सम्राट अशोक के लेख में दिखाई देने वाली लिपियों में से खरोष्ठी और अरेमाइक लिपियों का उद्गम पर्शियन लिपि से हुआ है। भारत पर्शिया को वस्त्र, मोती, हाथी, मसाले के पदार्थ निर्यात करता था। पर्शिया से भारत में मूल्यवान धातुएँ आयात होती थी।

मौर्य साम्राज्य की शिल्पकला और स्थापत्य पर पर्शियन कला और स्थापत्य का प्रभाव दिखाई देता है। अशोक स्तंभ पर सिंह, अश्व अथवा वृषभ के शिल्प उकेरे गए हैं। उसपर पर्शियन शिल्प शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

१०.२. ग्रीक – रोमन संस्कृति का भारत पर परिणाम



सम्राट सिकंदर

ईसा पूर्व ३२६ में मैसिडोनिया का शासक सिकंदर ने पर्शिया को जीतकर भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश की ओर कूच किया। सिकंदर द्वारा भारत पर आक्रमण

किए जाने से भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों को ग्रीक संस्कृति का परिचय हुआ। सिंधु प्रदेश के अनेक छोटे राज्य वह अपने आधिपत्य में ले आया। सिकंदर की मृत्यु के पश्चात उसका साम्राज्य खंड-खंड हो गया और इंडो-ग्रीक राजवंश उदित हुए। उनके समय में ग्रीक संस्कृति से संपर्क हुआ। मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त, बिंदुसार और सम्राट अशोक के इंडो-ग्रीक राजाओं के साथ राजनीतिक संबंध स्थापित हो गए थे। मेगैस्थनीस चंद्रगुप्त के दरबार में राजदूत के रूप में था। मेगैस्थनीज के लिखे 'इंडिका' ग्रंथ में मौर्यकालीन समाज संरचना, प्रशासन, कृषि और व्यापार आदि की जानकारी प्राप्त होती है। ग्रीक मूर्तिकला के प्रभाव के फलस्वरूप कुषाण के समय में भारत में एक नई कला शैली का उदय हुआ। उसे 'गांधार शैली' कहते हैं। गांधार कलाशैली में मुख्यतः गौतम बुद्ध की मूर्तियाँ गढ़ी गई हैं। इस शैली की मूर्ति का चेहरा-मोहरा ग्रीक चेहरा-मोहरा से मिलता-जुलता है। बैक्ट्रिया में ग्रीक राजाओं के सिक्के इस कला के उत्तम उदाहरण हैं। उन सिक्कों को ग्रीक-इंडो सिक्के कहा जाता है। उन सिक्कों पर ग्रीक प्रभाव पाया जाता है।



बनाओ तो!

मैं सम्राट नहीं हूँ, सैनिक नहीं हूँ।
लेकिन राजदरबार में स्थान मेरा।
विदेशियों की नजर से भारत देखा,
जो देखा, उसे बताने 'इंडिका' ग्रंथ लिखा।
मैं कौन हूँ?

ई.स. की प्रथम-दूसरी शताब्दियों के समय में भारत और रोम के बीच चलने वाला व्यापार समृद्ध हुआ। इस व्यापार में दक्षिण भारत के बंदरगाहों को बहुत महत्त्व प्राप्त हुआ। महाराष्ट्र के कोल्हापुर में किए गए उत्खनन में कांस्य धातु की कुछ वस्तुएँ पाई गईं। ये

वस्तुएँ रोमन बनावट की हैं। तमिलनाडु के अरिकामेडू में किए गए उत्खनन में भी रोमन बनावट की अनेक वस्तुएँ पाई गई हैं।



क्या तुम जानते हो?

महाराष्ट्र के धाराशिव जिले का तेर नामक स्थान सातवाहन समय में एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। यहाँ किए गए उत्खनन में रोमन सिक्के, एंफोरा (एक प्रकार का कुंभ), काँच के मनके और हस्तिदंत के उकेरे गए कोमल शिल्प पाए गए हैं। तेर के वस्त्र, मोती, आभूषण और हस्तकला की वस्तुएँ रोमन के बाजार में बहुत लोकप्रिय थीं। इन वस्तुओं में हस्तिदंत की १२ सेंमी ऊँची उत्कीर्ण स्त्रीमूर्ति विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है। ऐसी ही हस्तिदंत की स्त्री मूर्तियाँ इटली के प्राचीन शहर पॉपेई के उत्खनन में पाई गई हैं। यह शहर ई.स. ७९ में हुए ज्वालामुखी के उद्रेक में नष्ट हो गया था। इसके आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि तेर एक व्यापारी केंद्र था और उसका रोमन नगर के साथ व्यापारी संपर्क था।

ऐसे तत्कालीन साहित्य में अनेक व्यापारी केंद्रों का उल्लेख प्राप्त है। इस व्यापार में इजिप्त का अलेक्जेंड्रिया महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था। अरब व्यापारी

भारतीय माल अलेक्जेंड्रिया तक ले जाते। वहाँ से वह माल यूरोप के देशों में भेजा जाता। दक्षिण भारत के बंदरगाहों से रोमन व्यापारी सीधे भारत में आते थे और वस्त्र, मसाले, मूल्यवान रत्न, औषधीय वनस्पतियाँ बड़ी मात्रा में खरीदते थे। आज भी भारत में अनेक रोमन सिक्के पाए जाते हैं। इसके आधार पर इस व्यापार की मात्रा और महत्त्व दिखाई देता है।



क्या तुम जानते हो?

प्राचीन समय में भारत से यूरोप में काली मिर्च का निर्यात होता था। यूरोप में काली मिर्च बहुत मूल्यवान मानी जाती थी। रोम में काली मिर्च इतनी महँगी थी कि उसे 'काला सोना' कहकर संबोधित किया जाता था। रोमन लोगों के भोजन पदार्थों में मसालों का अभाव था। उन लोगों के लिए काली मिर्च स्वाद और स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण थी। दक्षिण भारत के बंदरगाहों से यूरोप साम्राज्य में बड़ी मात्रा में काली मिर्च का निर्यात किया जाता था। रोमन व्यापारी भारतीय व्यापारियों को सोने के सिक्के देकर काली मिर्च खरीदते थे। रोमन लेखक प्लिनी अपने ग्रंथ में लिखता है 'भारत से रोम में मसाले लाने के लिए प्रतिवर्ष बहुत बड़ी मात्रा में सोना रोम से बाहर भेजा जाता था।'



बोरोबुदूर स्तूप

१०.३. भारत और पड़ोसी देश

प्राचीन भारत के पड़ोसी देशों के साथ विशेष रूप से दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ अत्यंत घनिष्ठ संबंध थे। समुद्री व्यापार, बौद्ध और हिंदू धर्मों का प्रसार, भाषाओं तथा कलाओं के आदान-प्रदान द्वारा भारत का प्रभाव श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, विएतनाम, इंडोनेशिया और मलेशिया तक हुआ। भारतीय व्यापारी मसाले, वस्त्र, मूल्यवान रत्न और धातुओं को समुद्री मार्ग से इन देशों में ले गए। उनमें से कुछ वहीं पर बस गए और उनमें से कुछ ने उन प्रदेशों में राज्य स्थापित किए। बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्ध दर्शन का प्रचार किया। दक्षिण-पूर्वी एशिया के मंदिर, नृत्यकला, कला, स्थापत्य और राजनीतिक परंपरा में भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से अनुभव होता है। अंकोरवट जैसे भव्य मंदिर, बोरोबुदूर स्तूप, भारतीय महाकाव्यों से ली गई प्रेरित कला ये उसके



सिगिरिया गुफाओं में भित्तिचित्र

स्पष्ट उदाहरण हैं। प्राचीन भारत और दक्षिण-पूर्वी एशिया के बीच के संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं थे अपितु ये संबंध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदान-प्रदान के प्रतीक थे।

■ श्रीलंका

बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और बेटी संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। उन दोनों के नामों का उल्लेख श्रीलंका के बौद्ध ग्रंथ 'महावंश' में प्राप्त है। संघमित्रा अपने साथ बोधिवृक्ष की टहनी ले गई थी। श्रीलंका के अनुराधापुर में बोधिवृक्ष इसी टहनी से वृद्धिगत हुआ है, ऐसा वहाँ की परंपरानुसार माना जाता है।

श्रीलंका के मोती और अन्य मूल्यवान वस्तुओं की भारत में बड़ी मांग थी। वहाँ सिगिरिया नामक स्थान पर ई.स. की पाँचवीं शताब्दी में कश्यप नाम के राजा ने गुफा खुदवाई थी। उस गुफा में चित्रित भित्तिचित्रों की शैली अजंता की चित्र शैली के साथ समानता दर्शाती है। श्रीलंका की पाली भाषा में लिखे 'महावंस' और 'दीपवंस' ग्रंथ भारत और श्रीलंका के बीच के पारस्परिक संबंधों की जानकारी देते हैं।

■ चीन

प्राचीन समय से भारत और चीन के बीच व्यापारी और सांस्कृतिक संबंध प्रस्थापित हुए थे। सम्राट हर्षवर्धन ने चीन के दरबार में राजदूत भेजा था। चीन में बनने वाले रेशमी वस्त्र भारत में 'चीनाशुक' नाम से प्रसिद्ध थे। भारत में चीनाशुक को बड़ी माँग थी। प्राचीन भारत के व्यापारी चीनाशुक पश्चिमी देशों में भेजते थे। यह व्यापार सड़क मार्ग से चलता था। यह

मार्ग अफगानिस्तान और मध्य एशिया के प्रदेशों से होकर जाता था। इसे 'रेशमी मार्ग' कहते थे। भारत के कुछ प्राचीन स्थान इस रेशमी मार्ग से जुड़े हुए थे। उन स्थानों में महाराष्ट्र के मुंबई के समीप पालघर जिले का नालासोपारा एक स्थान था। चीन से बौद्ध भिक्षु फाहियान और युआन श्वांग रेशमी मार्ग से ही भारत में आए थे। युआन श्वांग का उल्लेख 'ह्यूएनत्संग' भी

किया जाता है। ई.स. की प्रथम शताब्दी में चीनी सम्राट 'मिंग' के आमंत्रण पर बौद्ध भिक्षु 'धर्मरक्षित' और 'कश्यप मातंग' चीन में गए। उन्होंने अनेक भारतीय बौद्ध धर्मग्रंथों का चीनी भाषा में रूपांतर किया। इसके बाद चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार कार्य को प्रोत्साहन मिला। बौद्ध धर्म जापान, कोरिया, विएतनाम देशों में भी पहुँचा।



क्या तुम जानते हो?

ई.स. की सातवीं शताब्दी में चीन का युआन श्वांग भारत में बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आया। उसने नालंदा विश्वविद्यालय में अनेक वर्ष ज्ञान साधना की। यहाँ के विद्वान भिक्षुओं ने उसे बौद्ध दर्शन, व्याकरण, वैद्यक और ध्यानविद्या जैसे अनेक विषयों के मूल्यवान ग्रंथ दिए। भारत से लौटते हुए अपने साथ ले जाने के लिए उसने ६०० से अधिक पांडुलिपियाँ, ग्रंथ एकत्रित किए थे। ये ग्रंथ चीन में ले जाकर वहाँ के लोगों को बौद्ध धर्म की जानकारी देनी चाहिए, यह उसका दृढ़ निश्चय था। भारत से मध्य एशिया जाने के लिए युआन श्वांग मरुभूमि के रास्ते से आगे बढ़ा। दिन भर चिलचिलाती धूप में चलना और रात को ठिठुरा देने वाली ठंड जैसी कठिन परिस्थितियों का उसे सामना करना पड़ा। मरुभूमि उसके धैर्य की परीक्षा ले रही थी। फिर भी वह रुका नहीं क्योंकि उसके पास जो ग्रंथ थे, वे ज्ञान का खजाना थे। एक दिन वह ताक्लमकान मरुभूमि से गुजर रहा था। अचानक आकाश में अंधेरा छा गया। कुछ ही क्षणों में उसके चारों ओर बवंडर (रेती की आँधी) उठा। ऊँट अपना नियंत्रण खोने लगा और ग्रंथ नष्ट होंगे, यह भय उसे सताने लगा। युआन श्वांग ने प्राणपण से वे ग्रंथ उस बवंडर से बचाए। धीरे-धीरे बवंडर शांत होता गया। आकाश में पुनः उजाला दिखाई देने लगा। थका-माँदा, धूल से सना युआन श्वांग खड़ा हुआ और सबसे पहले उसने ग्रंथों का थैला खोलकर देखा। भाग्य से सारे ग्रंथ सुरक्षित थे।

अनेक महीनों की यात्रा के बाद अंततः वह चीन पहुँचा। वहाँ उसका स्वागत हुआ। वहाँ कुछ विद्वानों ने उसके द्वारा लाये गए ग्रंथों का अध्ययन आरंभ किया। उनका अनुवाद किया। परिणामतः पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म की जानकारी व्यापक स्तर पर फैली। चीन के सम्राट ने भी उसका स्वागत किया और उसके संग्रह में संकलित ग्रंथों का अनुवाद करने हेतु विशेष केंद्र स्थापित किए। युआन श्वांग ने आगामी कुछ वर्षों में ७५ से अधिक बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।





अंकोरवट में मंदिर

■ दक्षिण-पूर्व एशिया

ई.स. की प्रथम शताब्दी में कंबोडिया देश के प्राचीन राज्य 'फुनान' की स्थापना हुई। चीनी परंपरा के अनुसार कौंडिण्य नाम के भारतीय ने इस राज्य की स्थापना की, ऐसी जानकारी प्राप्त होती है। फुनान के लोगों को संस्कृत भाषा का ज्ञान था। उस समय का एक उत्कीर्ण शिलालेख उपलब्ध है। यह संस्कृत में है।



क्या तुम जानते हो?

चीनी यात्रियों द्वारा अंकित जानकारी के अनुसार इंडोनेशिया का 'श्रीविजय' साम्राज्य बौद्ध धर्मग्रंथों के अध्ययन और संस्कृत सीखने का महत्वपूर्ण स्थान था। इस विषय में उल्लेखनीय अंकन उपलब्ध है। वह इस प्रकार है- ई.स. ६७१ में इत्सिंग नाम का चीनी यात्री चीन से लौटने वाले पर्शियन जहाज द्वारा इंडोनेशिया में आया था। उस समय वह संस्कृत भाषा सीखने के लिए श्रीविजय राज्य में छह महीने रहा था। इसके पश्चात वह समुद्री मार्ग से भारत में

प्रविष्ट हुआ। संस्कृत सीखने के लिए श्रीविजय राज्य में एक-दो वर्ष रहना चाहिए, उसके बाद ही भारत में जाना चाहिए, यह सलाह इत्सिंग ने अपने लेखन द्वारा बौद्ध भिक्षुओं को दी थी। उसके अंकित लेख के अनुसार उस समय श्रीविजय राज्य के विहारों में एक हजार भिक्षु रहते थे। इसके अनुसार चीन से भारत में आने वाले चीनी भिक्षु संस्कृत सीखने के लिए इंडोनेशिया में कुछ महीने रुकते थे, उसके पश्चात ही भारत में आते थे।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के दूसरे देशों में भी भारत से गए हुए कुछ लोगों ने अपने राज्य स्थापित किए। उनमें से कुछ राज्य साम्राज्य में बदल गए। इन राज्यों के कारण भारतीय संस्कृति का प्रसार दक्षिण-पूर्वी एशिया में होता रहा। दक्षिण-पूर्वी एशिया के कला और सांस्कृतिक जीवन पर भारतीय संस्कृति की छाप दिखाई देती है। इंडोनेशिया में आज भी रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित नृत्य-नाट्य लोकप्रिय हैं।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के राज्यों में भारतीय संस्कृति का प्रभाव क्रमशः बढ़ता गया। प्राचीन समय में बौद्ध धर्म म्यांमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों में पहुँच गया। कालांतर में शिव और विष्णु के मंदिरों का भी निर्माण हुआ।



ढूँढो तो।

कंबोडिया, इंडोनेशिया, विएतनाम, थाईलैंड, म्यांमार देशों में भारतीय संस्कृति से प्रभावित कुछ

वास्तुओं/भवनों को यूनेस्को द्वारा विश्व श्रेणी प्राप्त हुई है। उनकी जानकारी ढूँढो और उनकी एक सूची बनाओ।

इस पाठ में हमने प्राचीन भारत और संसार के बीच परस्पर संबंधों को समझा। इस प्रक्रिया में हमने यह भी सीखा कि प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने से विभिन्न देशों के बीच के संबंध किस प्रकार दृढ़ बनते हैं।



स्वाध्याय

प्र.१ अ) उचित विकल्प के सामने ☒ ऐसा चिह्न लगाओ।

१. गांधार शैली में बनी कौन-सी मूर्तियाँ बड़ी मात्रा में पाई गईं?

अ) शिव ☐

ब) विष्णु ☐

क) गौतम बुद्ध ☐

२. चीनी विद्वान भिक्षु युआन श्वांग ने भारत के किस विश्वविद्यालय में अनेक वर्ष ज्ञान साधना की?

अ) तक्षशिला ☐

ब) विक्रमशिला ☐

क) नालंदा ☐

३. रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित नृत्य-नाट्य किस देश में लोकप्रिय हैं?

अ) इंडोनेशिया ☐

ब) थाईलैंड ☐

क) कंबोडिया ☐

४. निम्न में से किस देश से होकर 'रेशम मार्ग' गुजरता है?

अ) भारत-श्रीलंका-कंबोडिया ☐

ब) भारत-अफगानिस्तान-मध्य एशिया ☐

क) भारत-इंडोनेशिया-चीन ☐

प्र.२ अ) निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो।

१. मौर्य साम्राज्य की शिल्पकला और स्थापत्य पर पर्शियन कला-स्थापत्य का प्रभाव किस प्रकार दिखाई देता है?

२. भारतीय संस्कृति का प्रसार भारत के बाहर भी बड़ी मात्रा में हुआ, इसके उदाहरण लिखो।

३. भारत के दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के साथ अत्यंत घनिष्ठ संबंध थे, इसके प्रमाण लिखो।

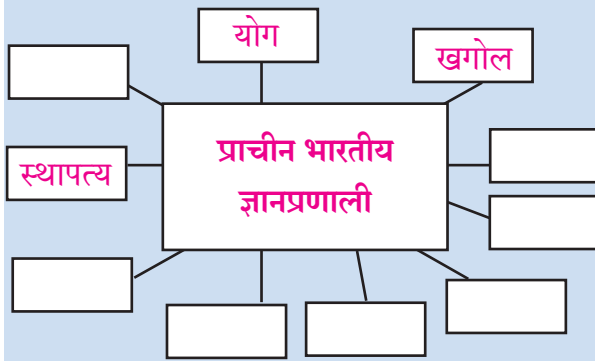
ब) टिप्पणियाँ लिखो।

१. रेशमी मार्ग

२. प्राचीन भारतीय संस्कृति का अन्य देशों पर प्रभाव

३. गांधारशिल्प

प्र.३ संकल्पना चित्र पूर्ण करो।



कृति

- संसार के मानचित्र प्रारूप में जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रभाव पहुँचा, वे स्थान दर्शाओ। जैसे- श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंबोडिया।
- अंतरजाल की सहायता से श्रीलंका के अनुराधपुर में जो बोधिवृक्ष है, उसका चित्र और जानकारी प्राप्त करो।

उपक्रम

- भारत और अन्य देशों के बीच किन बातों का आदान-प्रदान होता था, यह दर्शाने वाली सारिणी बनाओ।

जैसे-

देश	भारत से क्या ले गए ?	भारत पर क्या प्रभाव हुआ
रोम	काली मिर्च	व्यापार के कारण भारत में स्वर्ण आया
.....		
.....		

- अनेक भारतीय ग्रंथ अपने देश में ले जाकर युआन श्वांग ने उनका अनुवाद क्यों किया होगा, इसकी कक्षा में चर्चा करो।



शिल्प पट्ट : गांधार शैली



नागारिक शास्त्र



पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG-५ परिवार में प्रचलित बातों से लेकर समुदाय/प्रादेशिक/राष्ट्रीय स्तर पर समाज में व्याप्त भिन्न दो प्रकार की असमानता, पूर्वाग्रह को समझना और इन समस्याओं का निराकरण करने के लिए अग्रसर होना।			
अ. क्र.	पाठ्यक्रम की क्षमताएँ	अध्ययन निष्पत्ति	पृष्ठ क्रमांक
१	हमारा सामाजिक जीवन C-५.२ : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न स्तरों पर किए गए प्रयासों को पहचानता है और उसके आधार पर समानता, समावेशन और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए व्यक्ति क्या कर सकता है; इसका अध्ययन करता है।	१. समान संकल्पना को स्पष्ट करता है। २. परिवार का महत्व बताता है। अ) रिश्ते-नातों का महत्व बताता है। ब) सामाजिक रीति-प्रथाओं का वर्णन करता है। ३. मानव जीवन में सामाजिक संस्थाओं का योगदान स्पष्ट करता है। ४. सामाजिक संस्थाओं के कार्य बताता है। ५. विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, यह बताता है। ६. सामाजिक विविधता के विषय में जानकारी देता है। अ) धार्मिक विविधता के विषय में जानकारी बताता है। ब) भाषिक विविधता के विषय में जानकारी देता है। ७. सांस्कृतिक विविधता को स्पष्ट करता है।	८७, ९३ ८८, ९३ ८८ ९०, ९१ ८९, ९३ ८९ ८९ ९०, ९२, ९३ ९०, ९२ ९०, ९२, ९३ ९१, ९२
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG-८ भारतीय संविधान के विकास की प्रक्रिया समझकर भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्य दृढ़ करने के लिए संविधान का महत्व जानना।			
२	भारतीय संविधान C- ८.१ विगत कुछ दशकों में किसी भी देश के लिए विशेष रूप से भारत को संविधान की आवश्यकता क्यों अनुभव होती है और संविधान सूक्ष्म के उद्देश्य कौन-से हैं, इसे जानता है। C- ८.२ भारतीय संविधान की निर्मिति प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। इसमें अंतर्भूत भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आदर्श कल्पना तथा भारतीय विरासत, परंपराओं द्वारा निर्मित सभ्यता को समझता है।	१. संविधान का अर्थ बताता है। २. संविधान के प्रकार बताता है। ३. भारतीय संविधान की आवश्यकता और महत्व को स्पष्ट करता है। ४. भारतीय संविधान निर्मिति की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है। ५. संविधान सभा की जानकारी देता है। ६. मसौदा समिति की जानकारी देता है।	९५, ९९ ९५ ९५, ९९ ९५, ९६, ९९ ९६, ९७, ९८, ९९ ९७, ९८, ९९
३	भारतीय संविधान की उद्देशिका और विशेषताएँ C- ८.१ विगत कुछ दशकों में किसी भी देश के लिए विशेष रूप से भारत को संविधान की आवश्यकता क्यों अनुभव होती है और संविधान के सूक्ष्म उद्देश्य कौन-से हैं; यह बताता है। C- ८.२ भारतीय संविधान की निर्मिति प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। उसमें अंतर्भूत भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आदर्श कल्पना तथा भारतीय विरासत परंपराओं द्वारा निर्मित सभ्यता को समझता है।	७. भारतीय संविधान की उद्देशिका का महत्व स्पष्ट करता है। अ) भारतीय संविधान के उद्देश्य बताता है। ब) भारतीय संविधान की विशेषताएँ बताता है।	१००, १०२ १०१, १०२, १०३ १०१, १०३
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG-८ भारतीय संविधान की विकास प्रक्रिया समझकर भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों को दृढ़ बनाने के लिए संविधान का महत्व जानना।			
४	ग्रामीण स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था C- ८.३ स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के त्रिस्तरीय कार्यों का स्पष्टीकरण देता है और निम्न स्तर तक लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए उसका महत्व बताकर प्रशंसा करता है, प्रोत्साहन देता है।	१. स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की त्रिस्तरीय संरचना को स्पष्ट करता है। २. ग्राम पंचायत की जानकारी बताता है। अ) ग्राम पंचायत की संरचना बताता है। ब) ग्राम पंचायत के कार्य स्पष्ट करता है। क) ग्राम पंचायत प्रशासन की जानकारी देता है। ड) ग्राम सभा की जानकारी देता है।	१०४, १११ १०४, १०५ १०४, १०५, १११ १०५, १११ १०६, ११०, १११ १०६, १०७

		३. पंचायत समिति की संरचना को स्पष्ट करता है। अ. पंचायत समिति के कार्यों को स्पष्ट करता है। ब. पंचायत समिति प्रशासन की जानकारी देता है।	१०८ १०८ १०८, ११०, १११
		४. जिला परिषद की संरचना स्पष्ट करता है। अ) जिला परिषद के कार्य बताता है। ब) जिला परिषद प्रशासन की जानकारी बताता है।	१०९ १०९ १०९, ११०, १११
पाठ्यक्रम ध्येय : CG-८ भारतीय संविधान की विकास प्रक्रिया समझकर भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्य दृढ़ करने के लिए संविधान का महत्त्व जानना।			
५	शहरी स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था C- ८.३ स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के त्रिस्तरीय कार्यों का स्पष्टीकरण देता है और निम्न स्तर तक लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए उसका महत्त्व बताकर प्रशंसा करता है, प्रोत्साहन देता है।	१. नगर पंचायत की संरचना बताता है। २. नगर पंचायत के स्वास्थ्य और शिक्षा विषयक कार्य बताता है। ३. नगर परिषद की संरचना बताता है। अ) नगराध्यक्ष की चुनाव प्रक्रिया बताता है। ४. नगर परिषद के कार्य बताता है। अ) नगर परिषद के अनिवार्य कार्य बताता है। ब) नगर परिषद के ऐच्छिक कार्य बताता है। ५. नगर परिषद आय के स्रोत बताता है। ६. नगर निगम की संरचना बताता है। अ) नगर निगम के कार्य बताता है। ब) नगर निगम की विभिन्न विषय समितियों की जानकारी बताता है। क) नगर निगम की प्रशासन व्यवस्था को स्पष्ट करता है। ड) नगर निगम के आय स्रोत बताता है। ७. कटक मंडल का अर्थ स्पष्ट करता है। अ) कटक मंडल की रचना बताता है। ब) कटक मंडल की विशेषताएँ बताता है। क) कटक मंडल के कार्य बताता है।	११२, ११९, १२० ११३ ११२, ११३, ११४, ११९ ११४ ११३, ११४, ११९ ११३, ११४ ११४ ११५ ११५, ११६, ११९ ११६, ११९, १२० ११६, ११७ ११६, १२० ११७ ११७ ११८ ११८ ११८, ११९
पाठ्यक्रम ध्येय : CG-८ भारतीय संविधान की विकास प्रक्रिया को समझकर भारतीय समाज लोकतांत्रिक मूल्य दृढ़ करने के लिए संविधान का महत्त्व जानना।			
६	जिला प्रशासन C- ८.३ स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के त्रिस्तरीय कार्य का स्पष्टीकरण देता है और निम्न स्तर तक लोकतंत्र को दृढ़ बनाने के लिए उसका महत्त्व बताकर प्रशंसा करता है, प्रोत्साहन देता है।	१. जिला प्रशासन के विभिन्न विभागों के नाम बताता है। २. जिला राजस्व प्रशासन की संरचना को स्पष्ट करता है। अ) जिला राजस्व प्रशासन के कार्य का वर्णन करता है। ब) जिला राजस्व प्रशासन के अधिकार के संदर्भ में जानकारी देता है। ३. जिला पुलिस प्रशासन की संरचना को स्पष्ट करता है। अ) जिला पुलिस प्रशासन के कार्यों को स्पष्ट करता है। ४. जिला न्याय प्रशासन की संरचना को स्पष्ट करता है। अ) जिला न्याय प्रशासन के कार्य बताता है।	१२१ १२१, १२२ १२२, १२६, १२७ १२१, १२२, १२३, १२६ १२४ १२४, १२७ १२५, १२६ १२५, १२६, १२७

टीप : पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त किए गए मानचित्र शैक्षिक उद्देश्य हेतु बनाए गए हैं। इन मानचित्रों का उपयोग राजनीतिक और भौगोलिक प्रमाण के रूप में ग्राह्य न मानें। मानचित्र बनाते समय वे अधिकाधिक निर्दोष और अचूक होंगे; इसका प्रयास किया गया है। फिर भी कुछ त्रुटियाँ हों तो वे तकनीकी सीमा के कारण हो सकती हैं।

❀❀❀ विषय सूची ❀❀❀

अ.क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१	हमारा सामाजिक जीवन	८७
२	भारतीय संविधान	९४
३	भारतीय संविधान की उद्देशिका और विशेषताएँ	१००
४	स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था (ग्रामीण)	१०४
५	स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था (शहर)	११२
६	जिला प्रशासन	१२१



हमारा सामाजिक जीवन



१.१. समाज : अर्थ एवं आवश्यकता

१.२ सामाजिक संस्था और कार्य

१.३ सामाजिक विविधता

१.४ सांस्कृतिक विविधता

मानव की उत्क्रांति कैसे हुई; यह तुमने पढ़ा है। हमारा वर्तमान सामाजिक जीवन हजारों वर्षों की उत्क्रांति के परिणामस्वरूप साकार हुआ है। मानव ने घुमंतू अवस्था से स्थिर समाज जीवन की यात्रा की है।

१.१ समाज : अर्थ एवं आवश्यकता

केवल लोगों के समूह का अर्थ समाज नहीं होता है अपितु समूह में रहने वाले व्यक्तियों के बीच के संबंधों की व्यवस्था को समाज कहते हैं। समाज में वृद्ध, प्रौढ़, युवा, छोटे लड़के-लड़कियाँ; ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का समावेश होता है।

१.१.१ मानव को समाज की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई?

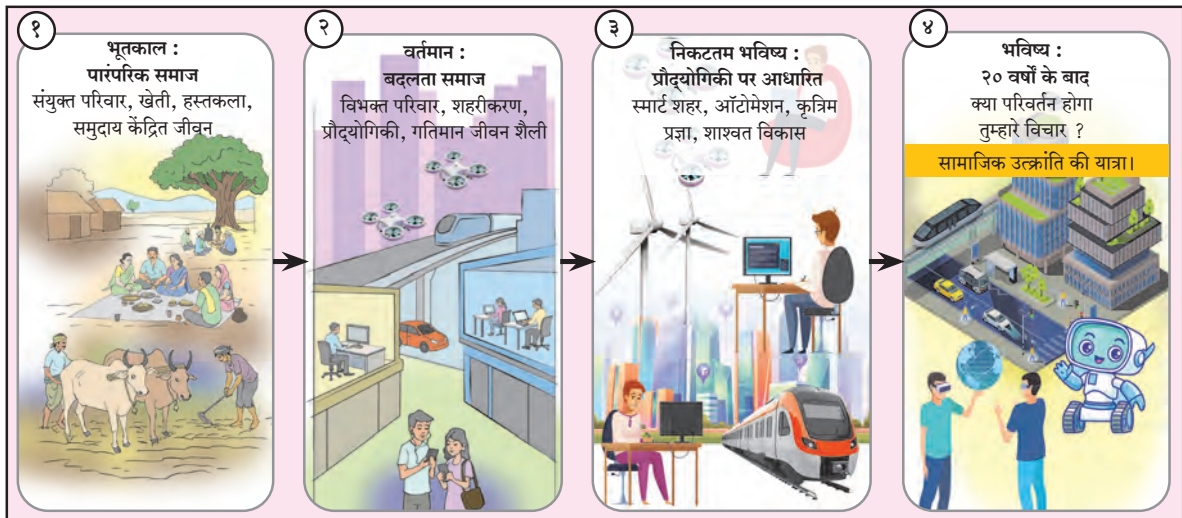
घुमंतू अवस्था में रहने वाले मानव को स्थिरता और संरक्षण प्राप्त नहीं था। वह अपनी शारीरिक और भावात्मक आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए एकत्रित आया। वह एकत्रित रूप में प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों का अधिक सक्षमता से सामना करने लगा। अन्न और आवास प्राप्त करने के लिए एकत्रित

रूप में परिश्रम करने लगा। समूह के सभी परिश्रम करते हैं तो सभी का जीवन आसान होता है; यह मानव की समझ में आया। इसी से मानव समाज के निर्माण का आरंभ हुआ।

१.१.२ मानव में समाजशीलता

मानव स्वाभाविक रूप से समाज से जुड़कर रहने में आनंद पाने वाला समाजशील प्राणी है। हमें सबको एक-दूसरे के साथ रहना अच्छा लगता है। मनुष्य केवल सुरक्षा के लिए अथवा अपनी शारीरिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए समाज में रहता नहीं है बल्कि वह अपना सर्वांगीण विकास होने हेतु समाज में रहता है। यदि हमें आनंद होता है तो हमें लगता है कि वह आनंद किसी के साथ तो साझा करना चाहिए। यदि हम दुखी हो जाते हैं तो हमें लगता है कि उस दुख को कोई तो समझे। हमें नई कल्पनाएँ सूझती हैं तो उन्हें अपने प्रियजनों को बताने की इच्छा होती है। इस प्रकार के भावात्मक और बौद्धिक आदान-प्रदान द्वारा हमारी समाजशीलता दिखाई देती है।

निम्न प्रथम तीन चित्र देखकर अंतिम चित्र में दिए प्रश्नों के उत्तर ढूँढो।

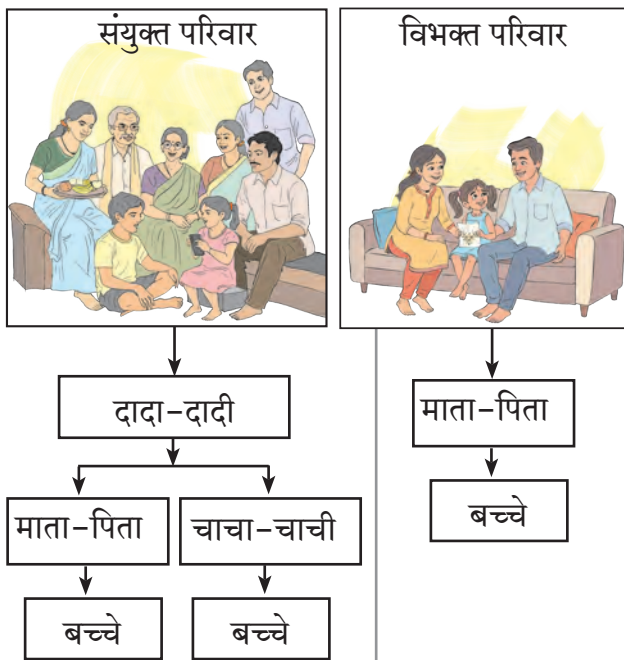


समाजशीलता : व्यक्तियों का अन्य लोगों के साथ सहजता, अच्छी बातचीत और सहयोग के साथ आचरण करने की क्षमता को समाजशीलता कहते हैं।



समाजशीलता के माध्यम से बालक का विकास

१.१.३ परिवार संस्था का विकास



मानव के प्रारंभिक समय में 'परिवार' की संकल्पना आज की तरह स्पष्ट नहीं थी। मानव समूह अथवा टोलियों में रहता था। प्राकृतिक आपदाओं से संरक्षण

परिवार : जो लोग खून का रिश्ता, विवाह अथवा दत्तक संबंध के कारण एकत्रित समूह में रहते हैं और एक-दूसरे की चिंता करते हैं, उस समूह को परिवार कहते हैं।

छोटा परिवार : इस परिवार में सदस्यों की संख्या ४ अथवा ४ से कम होती है, ऐसा परिवार छोटा परिवार अथवा विभक्त परिवार कहलाता है (जैसे - माता-पिता, भाई-बहन)।

बड़ा परिवार : जिस परिवार में माता-पिता-बच्चों के साथ दादा-दादी, चाचा-चाची और उनके बच्चे इकट्ठे रहते हैं, उस परिवार को बड़ा अथवा संयुक्त परिवार कहते हैं।

प्राप्त करने के लिए लोग एकत्रित रहने लगे। परिणामतः उनमें सुरक्षा की भावना जागृत हुई।

अन्न की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए मानव ने खेती करना प्रारंभ किया। परिणामतः उसके जीवन में स्थिरता आ गई। खेती के लिए बड़ी मात्रा में मानव बल की आवश्यकता होती है। इसी से 'परिवार पद्धति' अस्तित्व में आई।



चलो, करेंगे

तुम अपने परिवार की सारिणी बनाकर उसमें परिवार के कार्यों का वितरण दिखाओ। तुम स्वयं घर के कौन-कौन-से कार्य करते हो, इसकी सूची बनाओ।



१.१.४ समाज के कार्यों का वितरण

समाज के विभिन्न घटकों की विशिष्ट रूढ़ियाँ और परंपराओं के अनुसार नियम और कानून अस्तित्व में आते हैं। समूह के सभी लोगों को सारे कार्य करना संभव नहीं होता था। अतः समूह में कार्यों का विभाजन प्रारंभ हुआ और इसी से समाज का उदय हुआ। कालांतर में समाज में कार्यव्यापार और व्यवहार सुचारू रूप से चलें, इसके लिए नियम बनते चले गए।

१.२ सामाजिक संस्था और कार्य



परिवार, विद्यालय, महाविद्यालय, धार्मिक संगठन आदि को सामाजिक संस्था के रूप में जाना जाता है। इन संस्थाओं का मुख्य कार्य मूलभूत सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। सामाजिक संस्थाएँ उत्तम मूल्यों की सीख तथा भावात्मक आधार देने के साथ-साथ समाज में अनुशासन बनाए रखने का मुख्य कार्य भी करती हैं।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वतंत्र विचार करने की क्षमता होती है। विचार करने की इस क्षमता के विकसित होने में उसके परिवार, पड़ोसी, रिश्तेदारों, मित्र-सहेलियों और शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। साथ ही; रेडियो, समाचारपत्र, टीवी, फिल्म, नाटक, इंटरनेट, सामाजिक संगठन और धार्मिक संस्था आदि माध्यमों द्वारा प्रत्येक का व्यक्तित्व और विचार विकसित होते रहते हैं। स्वतंत्र विचार करने की क्षमता के फलस्वरूप व्यक्ति-व्यक्ति की विभिन्न पसंद-नापसंद,

रुचि-अरुचि उत्पन्न होती है। एक ही गाँव अथवा शहर के किसी एक क्षेत्र के समाज में रहने वाले विद्यार्थियों में विविध कलाएँ, गुण और कौशल विकसित होते हैं। इन्हीं कला-गुणों और कौशलों के आधार पर एक ही विद्यालय के विद्यार्थी भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हैं।

विद्यालय : एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था

समाज द्वारा निर्माण की गई एक मूलभूत सामाजिक संस्था विद्यालय है। अनुशासन, सहयोग, विभिन्न घटकों और विषयों की पहचान, कला-गुणों का संवर्धन, सामूहिक भावना जैसी बातें विद्यालय के माध्यम से हम सीखते हैं। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक आवश्यकताओं के बीच विद्यालय महत्वपूर्ण सेतु होता है।



चलो, करेंगे

- १) तुम्हारे मित्र-सहेलियों को किन कला-गुणों में रुचि है, उसकी सूची बनाओ।
- २) तुम्हारे मित्र-सहेलियों को भविष्य में क्या बनना अच्छा लगेगा? उनके साथ चर्चा करके सारिणी बनाओ।

१.२.१ समाज में परस्पर निर्भरता

पहले अन्न और आवास मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ थीं। परिवार में रहने वाले मानव को वस्त्र की आवश्यकता अनुभव होने लगी। मूलभूत आवश्यकताओं-अन्न, वस्त्र और आवास की पूर्ति करने हेतु स्थायी व्यवस्था निर्माण करने का दायित्व समाज का होता है। जैसे -

- १) अन्न की आपूर्ति करने हेतु खेती करना।
- २) खेती करने के लिए औजार और पशु उपलब्ध करना।
- ३) बीज उपलब्ध करना।

समाज : विशिष्ट प्रदेश में रहने वाला, स्वयं का आचरण पद्धतिवाला और जीवनविषयक दृष्टिकोण रखने वाला मानवी समूहों का पूर्ण समुदाय समाज कहलाता है।

सामाजिक संस्था : * मूलभूत सामाजिक कार्य को पूर्ण करने के लिए लोगों के आचरणों के संगठित रूप को ही सामाजिक संस्था कहते हैं। * विवाह संस्था, जाति संस्था, परिवार संस्था, शिक्षा संस्था, ये सामाजिक संस्था के कुछ उदाहरण हैं।

समाज के घटक : व्यक्ति, परिवार, समूह, संस्कृति, सामाजिक नियम और मूल्य, सामाजिक संबंध, सामाजिक संस्था ये सभी समाज के घटक हैं।

४) कृषि उपज/उत्पादन पर प्रसंस्करण के उद्योग निर्माण करना।

५) इन सभी बातों की पूर्ति होने के लिए वित्तीय सुविधाएँ (जैसे कि - पतसंचयिका अथवा बैंक से ऋण लेना) उपलब्ध कराना।

इस तरह की परिपूर्ण व्यवस्था समाज में निर्माण करनी पड़ती है। समाज के व्यक्तियों की प्रज्ञा और बुद्धिमानी द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सेवा-सुविधाओं की निर्मिति होती है। समाज के लोगों के कला-गुणों के माध्यम से सांस्कृतिक संपन्नता आती है और मनोरंजन के साधन तैयार होते हैं। समाज के लोगों के व्यापार कौशल और उद्यमशीलता द्वारा उद्योग-धंधों में वृद्धि होती है। समाज के सभी लोग भौतिक, मानसिक और भावात्मक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। इसी को समाज के लोगों की 'परस्पर निर्भरता' कहते हैं।



१.३. सामाजिक विविधता

भारतीय समाज में अनेक भाषाएँ, संस्कृति, खाद्यपदार्थ, धर्म, रीति-प्रथाएँ और परंपराएँ प्रचलित हैं। भारत की भौगोलिक विविधता भी उल्लेखनीय है। भौगोलिक विविधता का परिणाम सांस्कृतिक विविधता निर्माण होने में होता है। यह विविधता भारत की एक प्रमुख विशेषता है और भारत की वास्तविक शक्ति है।

१.३.१ धार्मिक विविधता

भारत में हिंदू, इस्लाम, बौद्ध, जैन, ईसाई, सिख और पारसी तथा अन्य धर्मों के लोग प्रेम और मिलनसारिता से रहते हैं। प्रत्येक को अपने-अपने धर्म के अनुसार पर्व-त्योहार मनाने की स्वतंत्रता है। इससे समाज में एकता निर्माण होती है।

१.३.२ भाषाई विविधता

समाज के कारण प्रत्येक मनुष्य में विशिष्ट गुण और क्षमता का विकास होता है। हम एक-दूसरे से बात करने के लिए भाषा सीखते हैं। वह भाषा हमें जन्मतः अवगत नहीं होती है। हम उस भाषा को अपने घर, पड़ोस और विद्यालय में सीखते हैं। विद्यालय में तो हमें विभिन्न भाषाएँ सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

हमारे आस-पास मराठी, हिंदी, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, बंगाली, सिंधी जैसी अनेक भाषाएँ बोलनेवाले लोग होते हैं। इसी तरह ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी जैसी बोली भाषाओं और गोंड, भील, संथाली जैसी आदिवासी बोली भाषाओं के कारण भाषाई विरासत समृद्ध होती है।

समाज में परस्पर निर्भरता	: समाज के लोग एक-दूसरे की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। इस स्थिति को परस्पर निर्भरता कहते हैं।
सामाजिक विविधता	: समाज में भाषा, धर्म, जाति, संस्कृति, परंपरा, पहनावा, विचारधारा आदि में भिन्नता पाई जाती है। इसे सामाजिक विविधता कहते हैं।
धार्मिक विविधता	: एक समाज में अथवा देश में विविध धर्मों के लोग इकट्ठे रहते हैं। इसे धार्मिक विविधता कहते हैं।



बताओ तो !

तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-सी भाषाएँ बोली जाती हैं?

१.४ सांस्कृतिक विविधता

मानवी समाज जीवन का विकास कला, भाषा, पहनावा, खाद्य, परंपरा, खेल आदि घटकों की अंतरक्रिया द्वारा हुआ है। भारत सांस्कृतिक विविधताओं से संपन्न देश है। प्रत्येक प्रदेश के उत्सव-त्योहार, गीत और रीति-प्रथाएँ आदि भिन्न हैं परंतु इस विविधता में प्रेरणा और आस्था एक ही है। अतः संपूर्ण देश एकता के सूत्र में बँधा हुआ है।



ढूँढो तो !

महाराष्ट्र में जनवरी महीने में मकर संक्रांति का त्योहार मनाया जाता है। उसी तरह; विविध प्रदेशों में जनवरी महीने में सूर्य का संक्रमण मनाए जाने वाले त्योहार किन नामों से जाने जाते हैं?

१.४.१ खाद्य विविधता

भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार कृषि की उपज में बदलाव आता है और उसके अनुसार दैनिक आहार में भी प्रदेश के अनुसार परिवर्तन हो जाता है। महाराष्ट्र में पिठल-भाकर (बेसन कोंचा) अन्य प्रदेशों में अपवाद रूप में पाया जाता है।

- **तेल** : भारत के दक्षिण में नारियल का तेल, उत्तर में सरसों का तेल तथा पश्चिम में मूँगफली के तेल का उपयोग किया जाता है।
- **मुख्य अन्न** : भारत के दक्षिण क्षेत्र में, तटीय क्षेत्र में और जहाँ जलाशयों-तालाबों की संख्या अधिक है, ऐसे क्षेत्रों में 'भात' (चावल) तथा उत्तर और मध्य भारत में 'गेहूँ, बाजरा, ज्वार और मकई' मुख्य अन्न है।
- **एकता** : आज इडली-डोसा और समोसा-पराँठा जैसे पदार्थ देशभर में लोकप्रिय हैं। यह 'विविधता में एकता' को दर्शाता है।



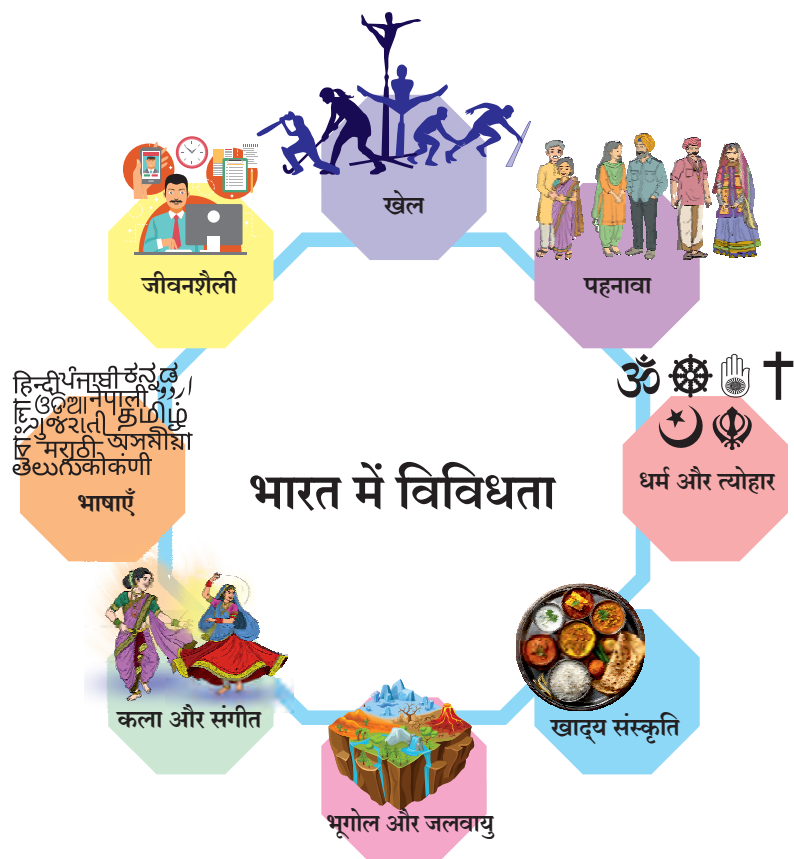
ढूँढो तो !

देश के विविध प्रदेशों में लोकप्रिय मिष्ठाननों की सूची बनाओ।
(जैसे - महाराष्ट्र - पूरनपोली)



भारत में खाद्य विविधता

- भाषाई विविधता** : एक देश में, राज्य में अथवा समाज में विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ और लिपियों का अस्तित्व में होना भाषाई विविधता कहलाती है।
- सांस्कृतिक विविधता** : विभिन्न भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ, रीति-प्रथाएँ, तीज-त्योहार और जीवनप्रणाली का होना सांस्कृतिक विविधता कहलाती है।



ढूँढो तो!

राज्य	भाषा	नृत्य प्रकार	खेल
महाराष्ट्र	मराठी	लावणी	कबड्डी
गुजरात			
राजस्थान			
पंजाब			
हरियाणा			
उत्तर प्रदेश			
पश्चिम बंगाल			
ओड़िशा			
असम			
कर्नाटक			
मध्य प्रदेश			
केरलम्			
तमिलनाडु			
छत्तीसगढ़			

१.४.२ विविधता – भारत की पहचान और शक्ति

भारतीय समाज में भाषा, धर्म, संस्कृति, व्यंजन में विविधता पाई जाती है। यह विविधता भारत की वास्तविक 'शक्ति' और 'विशेषता' है। विभिन्न समाजों के बीच स्थापित सामंजस्य और एक-दूसरे की परंपराओं और रीति-प्रथाओं का आदर किए जाने के कारण विशाल भौगोलिकता और प्रचंड जनसंख्या होने के बावजूद हमें सभी ओर भारतीयता का अनुभव होता है। एक-दूसरे की जीवन पद्धतियों और संस्कृतियों को जानने-समझने के कारण सभी जीवन पद्धतियाँ और संस्कृतियाँ संपन्न हुई हैं। अलग-अलग भाषाएँ एक-दूसरे के संपर्क में आने से अधिक समृद्ध हुई हैं। एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता की भावना होने से सामाजिक एकता निर्माण होती है। समय-समय पर समाज पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं की अवधि में सामाजिक एकता की भावना से एक-दूसरे को सहयोग किया जाता है। भारत की विविधता को समेटने-समा लेने वाली लोकतांत्रिक प्रणाली को सबने स्वीकार किया है। यह भारत की विविधता की परिचायक है।



स्वाध्याय

प्र.१ पहचानो और लिखो।

- मानव ने अन्न की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए यह व्यवसाय आरंभ किया -----
- लोग खून का रिश्ता, विवाह अथवा दत्तक संबंध के कारण एकत्रित रहते हैं और एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं। वह सामाजिक संस्था -----
- भारत के दक्षिणी तटीय क्षेत्र के लोगों का मुख्य अन्न -----

प्र.२ सूची बनाओ।

कम-से-कम उन पाँच भाषाओं की सूची बनाओ, जिन्हें तुम जानते हो।

प्र.३ निम्न संकल्पना स्पष्ट करो।

- समाज
- परिवार संस्था

प्र.४ समाज के लिए नीति-नियमों और कानून की आवश्यकता क्यों होती है? तुम अपने शब्दों में लिखो।

प्र.५ संकल्पना चित्र पूर्ण करो।



प्र.६ चलो, स्वयं ही जाँचकर देखेंगे।

क्या तुम 'आदर्श नागरिक' हो?

निम्न प्रश्नों के आगे (✓) अथवा (✗) ऐसा चिह्न लगाओ।

- मैं कूड़ा कूड़ेदान में डालता हूँ। []
- मैं कतार में खड़ा रहता हूँ,
धक्का-मुक्की नहीं करता। []
- मैं पानी बरबाद नहीं करता हूँ। []
- मैं अपने पड़ोसियों और बड़े-बुजुर्ग
नागरिकों की सहायता करता हूँ। []
- मैं सार्वजनिक बगीचे के फूल तोड़ता
नहीं हूँ। []

उपक्रम :

- भारत के संघराज्य के अनुसार खाद्य पदार्थ, तीज-त्योहार और नृत्य में पाई जाने वाली विविधता को दर्शाने वाली सारिणी बनाओ और कक्षा में लगाओ।
- भारत के मानचित्र में सभी राज्यों को विभिन्न रंगों में रँगो और वहाँ की प्रसिद्ध एक बात अथवा घटक का नाम लिखो।
- सबके लिए 'विद्यालय' एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, इसे स्पष्ट करने वाली चित्रसारिणी शिक्षकों की सहायता से तैयार करो।



२ भारतीय संविधान



२.१. संविधान का अर्थ, आवश्यकता और महत्त्व

२.२ भारतीय संविधान की निर्माण प्रक्रिया

समता : क्या तुम जानते हो? स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं।

अमन : जी हाँ! स्वतंत्रता दिवस अर्थात् १५ अगस्त और गणतंत्र दिवस अर्थात् २६ जनवरी को हमारे विद्यालय में ध्वजारोहण करते हैं और विविध कार्यक्रम भी होते हैं। इन दो दिनों में कितना उत्साह और आनंद का वातावरण होता है!

मेरी : १५ अगस्त १९४७ को हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हम अंग्रेजों की परतंत्रता से मुक्त हुए। अतः प्रतिवर्ष हम १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं।

समता : लेकिन गणतंत्र दिवस निश्चित रूप से क्या है?

अमन : भारत में हमारे देश का प्रशासन चलाने के लिए तैयार किया गया संविधान २६ जनवरी १९५० को लागू किया गया। अतः प्रतिवर्ष २६ जनवरी को हम गणतंत्र दिवस मनाते हैं।

२.३ संविधान सभा का कार्य

मेरी : परंतु इस दिन को गणतंत्र दिवस क्यों कहते हैं? संविधान क्या होता है? उसे किसने बनाया और संविधान की आवश्यकता क्यों होती है? २६ जनवरी १९५० के दिन ही संविधान क्यों लागू हुआ?

भारतीय संविधान के बारे में मेरी के मन में जो प्रश्न उत्पन्न हुए, वे प्रश्न और जिज्ञासा तुम्हारे मन में भी होंगे। तो चलो, हम इन घटकों के माध्यम से समझेंगे।

पिछले पाठ में हमने समाज के बारे में अध्ययन किया। समाज के सभी वर्ग प्रेम और आत्मीयता से एकत्रित रहें और सभी को अपनी उन्नति के समान अवसर उपलब्ध हों, इसके लिए कानून और नियमों की आवश्यकता होती है। समाज को संचालित करने के लिए लगभग सभी देशों ने 'संविधान' की निर्मिति की है। हमारे देश का प्रशासन हमारे संविधान के अनुसार चलाया जाता है।



सोचो

मैदान पर खेला गया क्रिकेट मैच और सड़क पर खेला गया क्रिकेट मैच में क्या अंतर है? इसे निम्न मुद्दों के आधार पर बताकर इन मुद्दों का क्या महत्त्व होता है, यह बताओ।

- | | |
|-------------|------------------|
| (१) नियम | (२) सीमा रेखा |
| (३) सुरक्षा | (४) पंच (अंपायर) |

क्रिकेट के मैदान पर खेले गए मैच में संगठनात्मकता, औपचारिकता, लिखित नियमों का पालन किया जाता है परंतु सड़क पर खेले गए मैच में लिखित नियम नहीं होते हैं,

संगठनात्मकता नहीं होती है और अधिकृत पंच (अंपायर) नहीं होते हैं। इसी तरह यदि देश को व्यवस्थित और सुचारू रूप से चलाना है तो संविधान की आवश्यकता है। यदि देश का संविधान नहीं होगा तो देश का प्रशासन व्यवस्थित और सुचारू रूप से नहीं चल सकता।



२.१ संविधान का अर्थ, आवश्यकता और महत्व

किसी भी देश का प्रशासन सुव्यवस्थित रूप से चलाने और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए संविधान की बहुत आवश्यकता होती है। देश का प्रशासन चलाने के लिए बनाए गए मौलिक कानून, नियम और प्रावधानों को संयुक्त रूप में 'संविधान' कहते हैं। संविधान को 'राष्ट्र संविधान' भी कहते हैं।

संविधान की आवश्यकता क्यों होती है, इसके प्रमुख कारण निम्नानुसार हैं:

१. नियमों का दायरा और सुव्यवस्था : संविधान देश की कानून-व्यवस्था का सर्वोच्च स्रोत है। समाज में विविध जातियों, धर्मों और विचारों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। उनके बीच समन्वय बनाए रखने और देश का प्रशासन सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ मौलिक नियमों की आवश्यकता होती है। यह नियमावली संविधान प्रदान करता है।

२. सरकार के अधिकारों पर नियंत्रण : यदि संविधान नहीं होगा तो सरकार सत्ता का दुरुपयोग कर सकती है। संविधान सरकार अधिकारों के संदर्भ में निर्देश देता है और नियंत्रण रखता है।

३. नागरिकों के अधिकारों की रक्षा : संविधान नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार प्रदान करता है और उनकी रक्षा करता है। (जैसे-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संचार की स्वतंत्रता)

४. सत्ता का विभाजन: संविधान के कारण देश के प्रशासन का तीन महत्वपूर्ण अंगों में विभाजन किया जाता है।

- **विधायिका :** कानून गठित करने वाले अंग को विधायिका कहते हैं।

- **कार्यपालिका :** कानून का कार्यान्वयन करने वाले अंग को 'कार्यपालिका' कहते हैं।

- **न्यायपालिका :** कानून की व्याख्या करना और न्याय करने वाले अंग को 'न्यायपालिका' कहते हैं।

५. अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा : लोकतंत्र में बहुमत का सम्मान किया जाता है परंतु संविधान के कारण बहुसंख्यक समूह अल्पसंख्यकों पर अन्याय नहीं कर सकता। अल्पसंख्यकों की भाषा, संस्कृति और शैक्षिक अधिकारों की रक्षा का दायित्व संविधान पर होता है।

६. देश के उद्देश्यों और मूल्यों की व्याख्या करना :

देश को किस दिशा में ले जाना है, यह संविधान की 'उद्देशिका' से व्याख्यायित होता है। जैसे - भारतीय संविधान ने न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता इन उद्देश्यों को स्वीकार किया है।

संविधान देश की 'आत्मा' है। यह भारत जैसे देश में लोकतंत्र को जीवित रखने का कार्य करता है।



करके देखो

अपनी कक्षा में शांति और अनुशासन बना रहे, इसके लिए नियमावली बनाओ।

२.१.१ संविधान के प्रकार

सामान्यतः संविधान के दो प्रकार हैं। लिखित और अलिखित संविधान

लिखित : देश का प्रशासन चलाने के लिए आवश्यक सभी मौलिक नियम, कानून और सिद्धांत जब एक ही अथवा कुछ निश्चित लिखित दस्तावेजों में क्रमबद्ध रूप में संग्रहीत किए जाते हैं, उसे 'लिखित संविधान' कहते हैं। जैसे - भारत, अमेरिका।

अलिखित : जिस देश का प्रशासन चलाने के लिए आवश्यक नियम किसी भी विशिष्ट समय में, किसी विशिष्ट संविधान समिति द्वारा एकत्रित होकर लिखे नहीं जाते हैं, उसे 'अलिखित संविधान' कहते हैं। जैसे - ब्रिटेन (यूनाइटेड किंगडम)



चलो, ढूँढ़ेंगे और चर्चा करेंगे

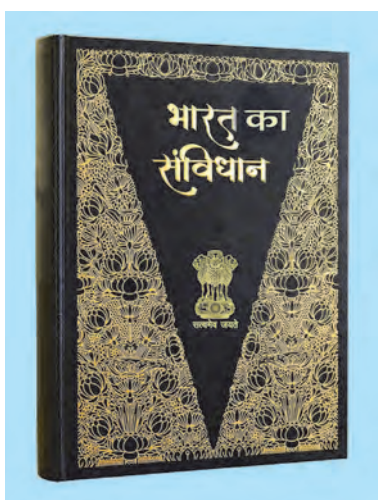
किन-किन देशों में लिखित संविधान और अलिखित संविधान है, यह अंतरजाल की सहायता से ढूँढ़ो और कक्षा में चर्चा करो।

२.२ भारतीय संविधान की निर्मिति प्रक्रिया

भारत की भौगोलिक विशालता, प्रचंड जनसंख्या और सांस्कृतिक विविधता ध्यान में लें तो मालूम होगा कि संविधान के बिना देश का प्रशासन चलाना कितना कठिन है। देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को दृढ़ करने के लिए संविधान आवश्यक है।

हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त होगी, यह निश्चित होने के पश्चात सन १९४६ ई. में संविधान निर्मिति की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इसके लिए संविधान सभा का गठन किया गया।

“स्वतंत्र भारत का प्रशासन ब्रिटिशों द्वारा बनाए गए कानून के अनुसार नहीं अपितु वह प्रशासन स्वयं भारतीयों द्वारा बनाए जाने वाले कानून के अनुसार चलना चाहिए”, ऐसा दृढ़ मत स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं का था।



क्या तुम जानते हो?

देश के विविध प्रांतों (उस समय मुंबई प्रांत, बंगाल प्रांत, मद्रास (चेन्नई) प्रांत थे) का प्रशासन चलाने के लिए १९४६ ई. में जनप्रतिनिधियों का चुनाव किया गया था। प्रत्येक प्रांत के प्रतिनिधियों ने उनके बीच से कुछ प्रतिनिधि को संविधान सभा के कार्य में सम्मिलित होने के लिए चुना था। उस समय देश में विविध राजाओं की रियासतें थीं। उन रियासतदारों ने संविधान सभा के कार्य में सम्मिलित होने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे थे। इस प्रकार उस समय संविधान सभा में प्रांतों और रियासतों के कुल २९९ सदस्य थे। उनमें कुछ महिला सदस्या भी थीं।



समझेंगे

संविधान सभा के सदस्यों के दो वर्ग थे:

१. प्रांतों की विधायिका से चुनकर आए सदस्यों की संख्या – २२९

२. रियासतदारों द्वारा नियुक्त सदस्यों की संख्या – ७०



ढूँढ़ो तो !

१९२८ ई. में एमस्टरडैम में आयोजित ओलंपिक प्रतियोगिता में भारत की हॉकी टीम ने भारत को प्रथम ओलंपिक स्वर्णपदक जितवा दिया था। आगे चलकर इस हॉकी टीम का कप्तान भारत की संविधान सभा का सदस्य बना। उनका नाम क्या है, वह ढूँढ़ो।

२.३ संविधान सभा का कार्य

स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए संविधान सभा का गठन किया गया। संविधान सभा की प्रथम बैठक ९ दिसंबर १९४६ को हुई। डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को सभा के अस्थायी अध्यक्ष के रूप में चुना गया। ११ दिसंबर १९४६ को संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद का चुनाव किया गया।



डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा



डॉ. राजेंद्र प्रसाद

संविधान सभा के कानूनी सलाहकार के रूप में बी. एन. राव की नियुक्ति की गई थी।

संविधान सभा के कार्य में सुसूत्रता और क्रमबद्धता लाने के लिए कुल २२ समितियाँ गठित की गईं।

संविधान सभा की महत्वपूर्ण समितियाँ

समिति का नाम	समिति प्रमुख
संविधान सभा नियम समिति (मार्गदर्शक समिति)	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
मसौदा समिति	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
संघराज्य समिति	पं. जवाहरलाल नेहरू
मूलभूत अधिकार एवं अल्पसंख्यक समिति	सरदार वल्लभभाई पटेल

उपरोक्त समिति और अन्य सभी समितियों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों का एकत्रित विचार करते हुए संविधान का प्रारूप तैयार करने हेतु मसौदा समिति स्थापित की गई।

२.३.१ मसौदा समिति

भारतीय संविधान की निर्मिति प्रक्रिया में मसौदा समिति सबसे महत्वपूर्ण समिति थी। इस समिति का गठन २९ अगस्त १९४७ को किया गया। विभिन्न समितियों से प्राप्त प्रतिवेदनों का मसौदा समिति ने पुनरावलोकन करके संविधान को अंतिम स्वरूप प्रदान करने हेतु एक वास्तविक मसौदा तैयार किया। इस समिति द्वारा तैयार किए हुए अंतिम मसौदे को २६ नवंबर १९४९ को संविधान सभा ने स्वीकार किया।

मसौदा समिति के सदस्य :

मसौदा समिति में अध्यक्ष सहित कुल सात सदस्य थे।

१. डॉ. बी. आर. आंबेडकर (अध्यक्ष)
२. श्री एन. गोपालस्वामी अय्यंगार
३. श्री अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर
४. डॉ. के. एम. मुन्शी
५. श्री मोहम्मद सादुल्ला
६. श्री बी. एल. मित्तर (इनके त्यागपत्र देने के पश्चात् श्री के. एन. माधवराव की नियुक्ति हुई)
७. श्री डी. पी. खेतान (इनकी मृत्यु के पश्चात् श्री टी. टी. कृष्णामाचारी की नियुक्ति हुई)



क्या तुम जानते हो ?

दिसंबर १९२९ ई. में हुए लाहौर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिशों से 'पूर्ण स्वराज्य' की माँग की थी। इस प्रस्ताव के अनुसार २६ जनवरी १९३० को पूरे देश में पहली बार 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाया गया था। भारतीयों के स्वतंत्रता युद्ध के इसी ऐतिहासिक दिन का महत्त्व और याद स्थायी रूप में रहे इसलिए '२६ जनवरी १९५०' को संविधान लागू किया गया। अतः यह दिन 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का मसौदा समिति में योगदान



संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारतीय संविधान का मसौदा प्रस्तुत करते हुए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने विविध देशों के संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन किया। साथ ही, संविधान सभा की सभी समितियों के प्रतिवेदनों का गहन अध्ययन करके मसौदा तैयार किया और उसे संविधान में प्रस्तुत किया।

इस मसौदे के प्रत्येक प्रावधान पर विस्तार में विचार-विनिमय हुआ। विचार-विनिमय के दौरान संविधान सभा के सदस्यों के प्रश्नों और शंकाओं के उत्तर देने

का दायित्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने सक्षमता से निभाया। संविधान सभा की सूचनाओं के अनुसार संविधान के मसौदे में परिवर्तन करने का महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने पूर्ण किया और संविधान का अंतिम मसौदा तैयार किया। उनके इस अतुलनीय योगदान के कारण उन्हें 'भारतीय संविधान का शिल्पकार' कहते हैं।

		
विजयालक्ष्मी पंडित	सरोजिनी नायडू	अम्मू स्वामीनाथन
		
रेणुका रे	एनी मैस्करीन	सुचेता कृपलानी
		
दाक्षायनी वेलायुधन	हंसा मेहता	बेगम एजाज रसूल
		
मालती चौधरी	लीला रॉय	राजकुमारी अमृत कौर
		
दुर्गाबाई देशमुख	पूर्णिमा बैनर्जी	कमला चौधरी

संविधान सभा की महिला सदस्य



क्या तुम जानते हो?

- मसौदा समिति द्वारा तैयार किए गए संविधान का प्रथम मसौदा फरवरी १९४८ ई. में प्रकाशित कर उसपर चर्चा की गई।
- संविधान सभा में विविध विषयों पर चर्चा हुई। अधिकांश प्रावधानों पर एकमत से निर्णय लिए गए।
- संविधान सभा का कार्य २ वर्ष, ११ महीने और १८ दिन चला। (९ दिसंबर १९४६ से २५ नवंबर १९४९)
- संविधान सभा की कार्यावधि में ५३,००० लोगों ने दर्शक दीर्घा में बैठकर संविधान सभा का कार्य प्रत्यक्ष में देखा।
- संविधान सभा के सदस्यों ने संविधान की प्रति पर २४ जनवरी १९५० को हस्ताक्षर किए।
- मूल संविधान में उद्देशिका, २२ भाग/खंड, ३९५ अनुच्छेद / धाराएँ और ८ परिशिष्ट थे।
- संविधान सभा ने २६ नवंबर १९४९ को संपूर्ण संविधान को स्वीकार किया। अतः २६ नवंबर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- संविधान के कार्यान्वयन के लिए २६ जनवरी १९५० का दिन निर्धारित किया गया। अतः यह दिन हम 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाते हैं।
- संविधान की निर्मिति होने के पश्चात २६ जनवरी १९५० से १९५२ में प्रथम आम चुनाव होने तक संविधान सभा ने भारत की 'अस्थायी संसद' के रूप में कार्य किया।



समझेंगे

- मूल संविधान की अंग्रेजी पांडुलिपि का लेखन किया - प्रेम बिहारी नारायण रायजादा

- मूल संविधान की हिंदी पांडुलिपि का लेखन किया - वसंत कृष्ण वैद्य

- दोनों पांडुलिपियों की सजावट की - आचार्य नंदलाल बोस



स्वाध्याय

प्र.१ बताओ तो।

- कानून बनाने वाली

- संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष

- भारतीय संविधान के शिल्पकार

प्र.२ निम्न सारिणी पूर्ण करो।

समिति प्रमुख	समिति का नाम
-----	संविधान सभा की नियम समिति
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	-----
-----	संघराज्य समिति
सरदार वल्लभभाई पटेल	-----
-----	-----

प्र.३ संकल्पना स्पष्ट करो।

- संविधान
- मसौदा समिति

प्र.४ प्रत्येक देश को संविधान की आवश्यकता क्यों होती है? इस विषय में तुम अपने विचार लिखो।

प्र.५ तुम क्या करोगे?

‘सामान्यतः लड़कों के कार्य और लड़कियों के कार्य में भेद किया जाता है।’ संविधान में उल्लिखित समता मूल्य को समझाकर बताने के लिए तुम क्या करोगे?

तुम्हारी कृति

उपक्रम

- कक्षा प्रमुख (मॉनिटर) का चुनाव करने के लिए प्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया कराओ।
- कॉपी में मौलिक अधिकार और उनसे संबंधित तुम्हारे कर्तव्यों की सारिणी बनाओ।





भारतीय संविधान की उद्देशिका और विशेषताएँ



३.१. उद्देशिका

३.२ भारतीय संविधान के अनुसार राज्य का स्वरूप

३.३ भारतीय संविधान के उद्देश्य

३.४ भारतीय संविधान की विशेषताएँ



संविधान सभा में उद्देश्यों का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए
पंडित जवाहरलाल नेहरू

१३ दिसंबर १९४६ को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा के सम्मुख 'उद्देश्यों का प्रस्ताव' प्रस्तुत किया। आगे चलकर इसी में से भारतीय संविधान की उद्देशिका विकसित हुई।

३.१ उद्देशिका

भारतीय संविधान की प्रस्तावना को 'उद्देशिका' कहते हैं। संविधान की उद्देशिका द्वारा संविधान के मूल्य और उद्देश्य स्पष्ट होते हैं। अतः उद्देशिका को 'संविधान की आत्मा' कहा जाता है।

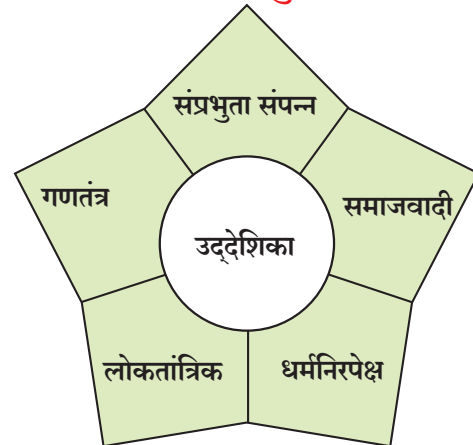


करके देखो

भारतीय संविधान की उद्देशिका का लेखन तुम अपनी लिखावट में करो।

भारत का संविधान भारत के लोगों ने तैयार किया है और स्वेच्छा से स्वीकार किया है। संविधान की उद्देशिका में भारत को 'संप्रभुता संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र' के रूप में घोषित किया है।

३.२ भारतीय संविधान के अनुसार राज्य का स्वरूप



संप्रभुता संपन्न : जिस देश पर किसी भी बाहरी शक्ति का नियंत्रण नहीं होता है और जो देश स्वयं के निर्णय लेने में पूर्णतः स्वतंत्र होता है, उस देश को 'संप्रभुता संपन्न' कहते हैं। भारत को सर्वोच्च कानून बनाने और विदेश नीति निर्धारित करने का सर्वोच्च अधिकार है।

समाजवादी : देश की संपत्ति का निर्माण समाज मिलकर करता है और उसपर राज्यसत्ता का स्वामित्व होता है। इसी को 'समाजवादी व्यवस्था' कहते हैं। संपत्ति का केंद्रीकरण न होकर समाज में व्याप्त आर्थिक और सामाजिकता कम करना समाजवादी व्यवस्था का उद्देश्य है।

धर्मनिरपेक्ष : धर्मनिरपेक्ष अर्थात् देश ने किसी भी धर्म को अधिकृत धर्म के रूप में स्वीकार नहीं किया है। सभी धर्मों को समान माना जाता है और प्रत्येक नागरिक को अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्म का पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

लोकतंत्र : लोकतंत्र में सत्ता का उद्गम स्थान जनता होता है और वे स्वयं अपने प्रतिनिधि चुनते हैं। अतः इस व्यवस्था की पहचान 'लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए' रूप में होती है।

गणतंत्र : गणतंत्र में देश के सभी सार्वजनिक पद (जैसे- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मेयर (महापौर), सरपंच आदि) वंशपरंपरा से किसी को भी प्राप्त नहीं होते हैं। ये पद जनता द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से निर्धारित अवधि के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि को प्राप्त होते हैं।

३.३ भारतीय संविधान के उद्देश्य

भारतीय स्वतंत्रता युद्ध द्वारा न्याय, स्वतंत्रता, समता, बंधुता मूल्य सामने आए और इन्हीं मूल्यों पर आधारित भारत के निर्माण का उद्देश्य संविधान ने स्वीकार किया है।

१. न्याय : जाति, धर्म, वंश, लिंग और भाषा के आधार पर किसी के भी साथ; किसी भी प्रकार का भेदभाव न करते हुए सभी को अपनी उन्नति करने हेतु समान अवसर उपलब्ध कराने को ही न्याय कहते हैं। इस शब्द में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय का समावेश होता है।

२. स्वतंत्रता : नागरिकों पर किसी भी प्रकार का अनुचित प्रतिबंध न होना और उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त होना ही स्वतंत्रता है। इस शब्द में विचार, अभिव्यक्ति, संचार, संगठन, व्यवसाय, श्रद्धा और उपासना पद्धति की स्वतंत्रता का अंतर्भाव होता है।

३. समता : जाति, धर्म, वंश, लिंग, भाषा अथवा जन्मस्थान के आधार पर किसी को भी श्रेष्ठ अथवा कनिष्ठ न मानते हुए सभी को समान मानना ही समता कहलाती है।

४. बंधुता : देश के सभी नागरिकों में एकता और आत्मीयता की भावना होने को बंधुता कहते हैं। यह भावना व्यक्ति की गरिमा की रक्षा करती है और राष्ट्र की एकता को दृढ़ बनाती है।

३.४ भारतीय संविधान की विशेषताएँ :

भारतीय संविधान की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं द्वारा संविधान का महत्त्व अधोरेखांकित होता है।

१. सबसे बृहद लिखित संविधान :

भारत का संविधान अत्यंत व्यापक, गहन और बृहद है। विश्व के सभी लिखित संविधानों में भारत का संविधान सबसे बृहद है।

२. विश्व के विविध संविधानों से चुनिंदा घटकों का समावेश :

संविधान सभा ने विश्व के सभी संविधानों का अध्ययन करते हुए उन संविधानों से भारत देश के लिए उचित और समीचीन घटकों का समावेश संविधान में किया है।

३. कठोरता और लचीलापन का समन्वय :

संविधान के प्रावधानों में सहजता से परिवर्तन किया जाता है, उसे 'लचीला संविधान' कहते हैं। संविधान के प्रावधानों में परिवर्तन करना बहुत कठिन हो तो उसे 'कठोर संविधान' कहते हैं। भारत का संविधान कठोरता और लचीलापन का समन्वय है।

४. नागरिकों के मौलिक अधिकार :

भारतीय संविधान ने भारत के सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए हैं। संविधान ने उन अधिकारों की रक्षा करने का दायित्व न्यायपालिका को सौंपा है।

५. नागरिकों के मौलिक कर्तव्य :

भारतीय संविधान ने मौलिक अधिकारों के साथ नागरिकों को कुछ मौलिक कर्तव्यों का पालन करने का भी निर्देश दिया है। प्रत्येक भारतीय को मौलिक कर्तव्यों का पालन करना अपेक्षित है।

६. राज्य के नीति निर्देशक तत्त्व :

भारतीय संविधान में नीति निर्देशक तत्त्व दिए गए हैं। इन नीति निर्देशक तत्त्वों के अनुसार प्रशासन चलाना अपेक्षित है।

७. संघराज्यात्मक पद्धति

भारत राज्यों का संघ (Union of State) है। संविधान ने देश में संघ (केंद्र) सरकार और राज्य सरकार के अधिकारों का विभाजन किया है। केंद्र से संबंधित विषयों पर संसद कानून बना सकती है और राज्य स्तर के विषयों से संबंधित कानून राज्य विधानमंडल करता है।

८. संसदीय लोकतंत्र :

संसदीय लोकतंत्र में मतदाता उनके प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। चुनकर आए प्रतिनिधियों में से देश का प्रधानमंत्री चुना जाता है और प्रधानमंत्री अपने मंत्रिमंडल का गठन करता है।



क्या तुम जानते हो?

९. वयस्क मताधिकार

१८ वर्ष पूर्ण आयुवाले भारतीय नागरिक को मतदान का अधिकार प्राप्त है। इसे 'वयस्क मताधिकार' कहते हैं।

संविधान सभा में महाराष्ट्र के कुछ प्रमुख सदस्य:



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर



डॉ. पंजाबराव देशमुख



श्री केशवराव जेधे



डॉ. दुर्गाबाई देशमुख



श्री शंकरराव देव



श्री नरहर गाडगीळ



श्री बाळासाहेब खर्डेकर



श्री दादा धर्माधिकारी



श्री ब्रजलाल बियाणी



श्री माधव (बापुजी) अणे



स्वाध्याय

प्र.१ याद करो और लिखो।

१. मैं संविधान का प्रारंभ हूँ। मुझे संविधान की आत्मा कहते हैं। मैं कौन हूँ?

२. मैं एक पुस्तक हूँ। इसमें देश का प्रशासन चलाने के नियम और कानून हैं। मैं कौन हूँ?

प्र.२ जोड़ियाँ मिलाओ।

‘अ’ समूह

‘ब’ समूह

१. स्वतंत्रता

(अ) ‘मैं’ और ‘दूसरों’ में भेदभाव न मानना

२. समता

(ब) यह भावना कि हम सभी भारतीय एक हैं।

३. बंधुता

(क) स्वयं की उन्नति करने हेतु अनुकूल वातावरण प्राप्त होना।

(ड) कोई भी कार्य स्वच्छंदता से करना

प्र.३ तराजू का 'संतुलन' बनाकर रखो।

संकल्पना : संविधान ने एक पलड़े में 'अधिकार' दिए हैं और दूसरे पलड़े में 'कर्तव्य' दिए हैं।

प्रश्न : निम्न प्रसंग में 'संतुलन' कैसे बनाकर रखोगे ?

१. अधिकार : 'सार्वजनिक बगीचे में खेलना मेरा अधिकार है।'

परंतु मेरा कर्तव्य क्या है?

२. अधिकार : सार्वजनिक वस्तु (जैसे- परिवहन निगम की बस) का उपयोग करना मेरा अधिकार है।

प्र.४ संकल्पना स्पष्ट करो।

१. धर्मनिरपेक्ष

२. लोकतंत्र

प्र.५ आगामी १० वर्षों में तुम्हारे सपनों का भारत कैसे होगा, इस विषय में तुम अपने विचार लिखो।

उपक्रम

- विद्यालय के पुस्तकालय से संविधान की प्रति प्राप्त करो और उसमें नागरिकों के मौलिक कर्तव्य ढूँढ़ो और लिखो।
- 'संप्रभुता संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्र और गणतंत्र' शब्दों के आधार पर भारतीय संविधान के घोषवाक्य बनाओ और कक्षा में लगाओ।





४

स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था (ग्रामीण)



४.१ ग्रामीण स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था की संरचना

४.३ पंचायत समिति

४.२ ग्राम पंचायत

४.४ जिला परिषद

‘सच्चा भारत गाँवों में बसता है।’ – महात्मा गांधी

रोहन : अरे सिया, देश का प्रशासन कैसे चलता है, इसकी हमने जानकारी प्राप्त की परंतु हमारे गाँव का प्रशासन कैसे चलता है?

सिया : हमारे गाँव, तहसील और हमारे जिले का शासन कैसे चलता है, इसके लिए पंचायतराज व्यवस्था है।



ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं को ‘पंचायतराज’ कहते हैं। गाँव, तहसील और जिला स्तर पर स्वायत्त शासन संस्था स्थानीय जनप्रतिनिधियों के हाथों में हो, इसलिए पंचायतराज व्यवस्था का निर्माण किया गया है। इसके अनुसार ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद; इस प्रकार त्रिस्तरीय रचना की गई है। इसके फलस्वरूप लोकतंत्र का विकेंद्रीकरण हुआ। स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधियों के हाथों में अधिक-से-अधिक सत्ता सौंपी गई है।

४.१ ग्रामीण स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था की रचना



क्या तुम जानते हो?

२२ दिसंबर १९९२ को ७३ वाँ और ७४ वाँ संविधान संशोधन हुआ। इस संशोधन द्वारा पंचायतराज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ।

४.२ ग्राम पंचायत

गाँव का प्रशासन चलाने वाली और ग्राम विकास के कार्य करने वाली स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था को ‘ग्राम पंचायत’ कहते हैं। पंचायतराज रचना में ग्राम पंचायत आधारभूत संस्था है। ग्राम पंचायत के सदस्यों

की संख्या गाँव की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की जाती है। महाराष्ट्र में ग्राम पंचायत सदस्य संख्या जनसंख्या के अनुसार न्यूनतम ७ और अधिकतम १७ है। ग्राम पंचायत का कार्यकाल ५ वर्ष का होता है। ग्राम पंचायत के सभी सदस्यों का चुनाव वयस्क मताधिकार और गुप्त मतदान पद्धति द्वारा किया जाता है। चुनाव में खड़ा होने के लिए सदस्य की न्यूनतम आयु २१ वर्ष होनी चाहिए।

ग्राम पंचायत के सदस्यों के चुनाव हेतु प्रभाग (वार्ड) बनाए जाते हैं। प्रत्येक प्रभाग से सदस्य चुने जाते हैं। इनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए कुछ स्थान आरक्षित होते हैं। महाराष्ट्र की ग्राम पंचायत में महिला प्रतिनिधियों के लिए ५० प्रतिशत स्थान आरक्षित होते हैं।



ढूँढ़ो तो!

हमारे पड़ोसी राज्य की ग्राम पंचायत में महिलाओं के लिए कितने प्रतिशत स्थान आरक्षित हैं?

ग्राम पंचायत के निर्वाचित सदस्यों को 'पंच अथवा सदस्य' कहते हैं। निर्वाचित सदस्य उनमें किसी एक को सरपंच और दूसरे सदस्य को उपसरपंच के रूप में चुनते हैं परंतु वर्तमान समय में सरपंच का चुनाव सीधे जनता द्वारा ही किया जाता है। सरपंच ग्राम पंचायत का लोकनियुक्त पदाधिकारी होता है।

ग्राम पंचायत सदस्य संख्या :
निकष - जनसंख्या के अनुसार



खंड ग्राम पंचायत

छह सौ से कम जनसंख्या वाले दो अथवा अधिक गाँवों के लिए एक ही ग्राम पंचायत होती है। उसे 'खंड पंचायत' कहते हैं।

४.२.१ ग्राम पंचायत के कार्य

गाँव के विकास हेतु ग्राम पंचायत निम्न कार्य करती है:



- गाँव के लिए रास्ते बनाना एवं मरम्मत करना।
- गाँव में बिजली आपूर्ति, पेयजल और धोवनजल निपदान का प्रबंधन करना।
- जन्म-मृत्यु और विवाह का पंजीकरण करना।
- गाँव में स्वच्छता बनाए रखना।
- गाँव में प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की आपूर्ति करना।
- निवास कर और जल कर इकट्ठा करना।
- गाँव के लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देना।



समझेंगे

महाराष्ट्र में आदर्श ग्राम पंचायत

अहिल्यानगर जिले में हिवरे बाजार एक छोटा गाँव है। हिवरे बाजार को लगातार अकाल की स्थिति और अल्प आय की समस्या का सामना करना पड़ता था। इस समस्या को हल करने के लिए गाँव में वर्षा का भंडारण और जलाशय क्षेत्र का संवर्धन किया गया। गाँव में विपुल मात्रा में पेड़ लगाए जाने से जलस्तर में बड़ी मात्रा में वृद्धि

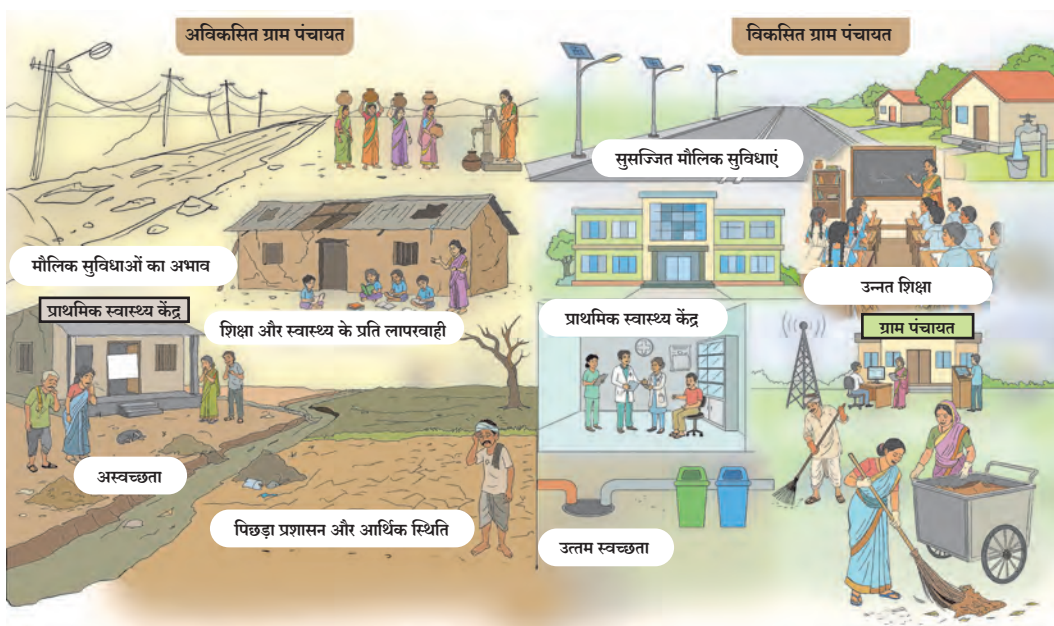
हुई। ग्रामीणों के सहयोग से कुछ ही वर्षों में हिवरे बाजार हरा भरा और समृद्ध गाँव बन गया। हिवरे बाजार गाँव ने आदर्श ग्राम पंचायत का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस कार्य के लिए गाँव के तत्कालीन सरपंच श्री पोपटराव पवार को वर्ष २०२० में भारत सरकार के पद्मश्री नागरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



चर्चा करो

निम्न चित्र देखो और उनमें पाए जाने वाले अंतर पर चर्चा करो।

अविकसित और विकसित ग्राम पंचायत में अंतर



चर्चा करो

- आदर्श गाँव किसे कहते हैं?
- महाराष्ट्र के आदर्श गाँवों के नाम ढूँढो।

४.२.२. 'ग्राम सेवक' / 'ग्राम पंचायत अधिकारी'

ग्राम पंचायत का प्रशासनिक प्रमुख ग्राम सेवक होता है। ग्राम पंचायत के कार्यालयीन कार्य और दैनिक व्यवहार करने के लिए उसकी नियुक्ति की जाती है। ग्राम सेवक ग्राम पंचायत का सचिव होता है। ग्राम पंचायत के लिए आवश्यकतानुसार एक अथवा अधिक ग्राम सेवकों की नियुक्ति की जा सकती है। उसकी नियुक्ति जिला

परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा की जाती है।



क्या तुम जानते हो?

दिनांक २३ सितंबर २०२४ के शासन निर्णय के अनुसार 'ग्राम सेवक' पद का नाम बदलकर 'ग्राम पंचायत अधिकारी' किया गया है।

४.२.३ ग्राम सभा

गाँव के सभी मतदाताओं का ग्राम सभा में समावेश होता है। ग्राम सभा का अध्यक्ष सरपंच होता है। सरपंच की अनुपस्थिति में उपसरपंच ग्राम सभा की अध्यक्षता करता है। ग्राम पंचायत के प्रशासन पर नियंत्रण रखने और गाँव के विकास कार्यों को अंतिम स्वीकृति देने हेतु १८ वर्ष आयु पूर्ण करने वाले सभी मतदाताओं की सभा होती है।

ग्राम पंचायत के प्रशासन में ग्राम सभा को महत्व प्राप्त है। महाराष्ट्र में पूरे वर्ष में न्यूनतम चार ग्राम सभा

की बैठकों का आयोजन करना कानूनन बंधनकारक है। ग्राम सभाएँ २६ जनवरी, १ मई, १५ अगस्त और २ अक्टूबर के दिन होती हैं। इसके अतिरिक्त सरपंच को विशेष सभा बुलाने का अधिकार प्राप्त है। सरपंच ग्राम सभा की बैठकों का आयोजन करता है। ग्राम सभा प्रारंभ होने से पूर्व महिलाओं की सभा आयोजित की जाती है।



करके देखो

- अभी-अभी गाँव में हुई ग्राम सभा के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
- तुम अपने गाँव के सरपंच का साक्षात्कार लो। उन्होंने गाँव में कौन-कौन-से कार्य किए हैं, उनकी सूची बनाओ।



ग्राम सभा के कार्य

ग्राम पंचायत के आय-व्यय की जाँच करना और उसे मान्यता प्रदान करना। वार्षिक अनुमानपत्र को स्वीकृति देना। पिछले वित्तीय वर्ष का प्रतिवेदन और वर्तमान वर्ष के कार्यक्रम की रूपरेखा निश्चित करना। इन कार्यों पर ग्राम सभा में चर्चा होती है और तत्पश्चात निर्णय लिए जाते हैं। ग्राम पंचायत अधिकारी ग्राम सभा के सभी कार्यों का लेखन अंकन कॉपी में करता है।

स्थानीय कर (निवास कर, जल कर) और केंद्र सरकार, राज्य सरकार और जिला परिषद द्वारा प्राप्त होने वाला अनुदान ही ग्राम पंचायत की आय के प्रमुख स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त बाजार कर, व्यवसाय कर और ग्राम पंचायत की संपत्ति से प्राप्त होने वाला किराया इनके माध्यम से कोष उत्पन्न किया जाता है।



कृति करो

विद्यालय में अभिरूप ग्राम सभा का आयोजन करो।



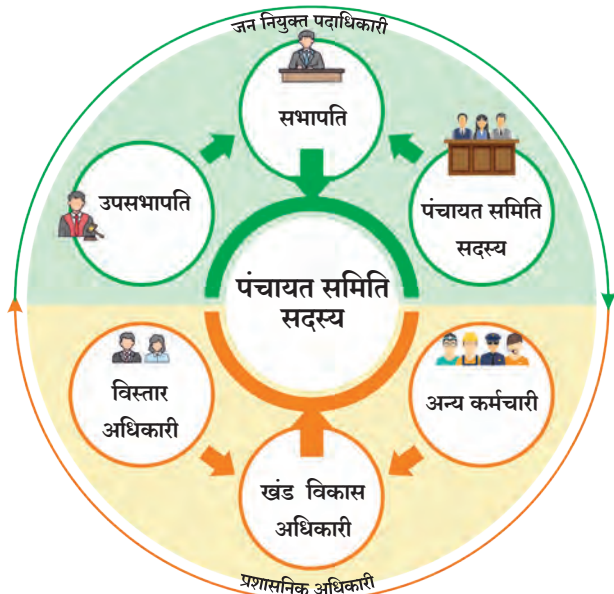
सोचो

यदि तुम सरपंच बन जाते हो तो तुम्हें कौन-कौन-से कार्य करना अच्छा लगेगा?

४.३ पंचायत समिति

एक ही तहसील के सभी गाँवों का एकत्रित एक विकास खंड होता है। विकास खंड के प्रशासन की देखरेख करने वाली संस्था को 'पंचायत समिति' कहते हैं। ग्राम पंचायत और जिला परिषद को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण सेतु के रूप में पंचायत समिति कार्य करती है। पंचायत समिति में जनसंख्या के अनुसार न्यूनतम १५ और अधिकतम ६४ सदस्य होते हैं।

पंचायत समिति की संरचना



४.३.१ पंचायत समिति का सभापति

पंचायत समिति के निर्वाचित सदस्य उनमें से एक सदस्य का सभापति और एक अन्य सदस्य का उपसभापति के रूप में चुनाव करते हैं। पंचायत समिति के सभापति और उपसभापति का कार्यकाल ढाई वर्ष का होता है। पंचायत समिति की सभा बुलाना, सभा की अध्यक्षता करना, सभा पर नियंत्रण रखना, जिला परिषद द्वारा दिए गए आदेशों का कार्यान्वयन कराना, पंचायत समिति के प्रशासन पर नियंत्रण रखना पंचायत समिति के सभापति के प्रमुख कार्य हैं। सभापति की अनुपस्थिति में उपसभापति उसके कार्य कार्यान्वित करता है।

४.३.२ खंड विकास अधिकारी

खंड विकास अधिकारी पंचायत समिति का प्रशासनिक प्रमुख होता है। महाराष्ट्र में प्रत्येक पंचायत समिति में एक खंड विकास अधिकारी होता है। महाराष्ट्र

लोकसेवा आयोग की ली जाने वाली परीक्षा द्वारा खंड विकास अधिकारी का चयन किया जाता है परंतु यह नियुक्ति महाराष्ट्र सरकार करती है। वह तहसील की विकास योजनाओं और निर्णयों का कार्यान्वयन करने का कार्य करता है। उसके नियंत्रण में पंचायत समिति की व्यवस्था कार्य करती है।

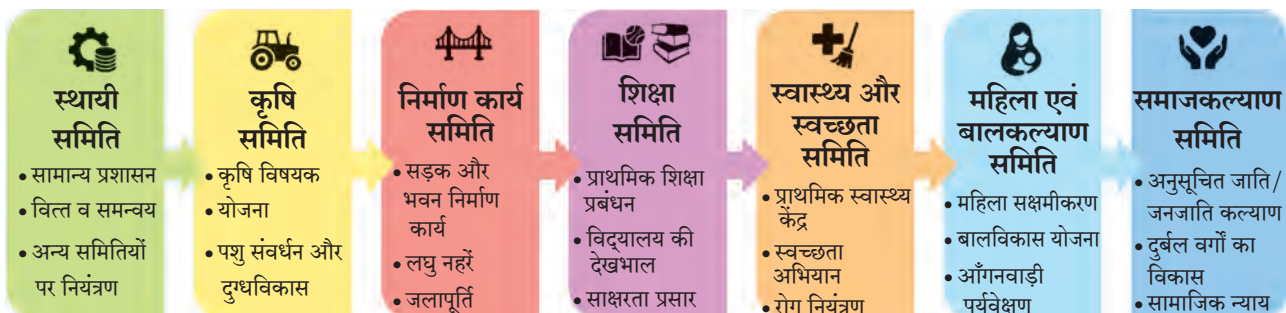
४.३.३ पंचायत समिति के कार्य

- पंचायत समिति के क्षेत्रों के कार्यों का नियोजन करना।
- जिला परिषद द्वारा पंचायत समिति के कार्यक्षेत्र में चल रहे कार्यों की देखरेख करना।
- जिला परिषद और ग्राम पंचायत के बीच समन्वय बनाए रखना।
- तहसील की विकास योजनाओं का कार्यान्वयन करना।

पंचायत समिति के उपरोक्त प्रमुख कार्य हैं। पंचायत समिति में सामान्य प्रशासन, सार्वजनिक निर्माण कार्य, वित्त, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला एवं बालकल्याण और समाजकल्याण आदि विभाग होते हैं। उनके द्वारा कार्य का नियोजन और कार्यवाही की जाती है।

पंचायत समिति के स्वयं के आय के स्रोत नहीं हैं। जिला परिषद के अनुमानपत्र में पंचायत समिति के अनुमानपत्र का समावेश रहता है। पंचायत समिति के क्षेत्र में चलाई जाने वाली योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु जिला परिषद और राज्य सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है।

पंचायत समिति विभागों के प्रमुख कार्य





ढूँढो तो !

- पंचायत समिति के सभापति का चयन कौन करता है?
- पंचायत समिति का प्रशासनिक प्रमुख कौन होता है?

४.४ जिला परिषद

स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की जिला स्तर पर कार्यरत जिला परिषद सर्वोच्च संस्था है। वर्तमान में महाराष्ट्र में ३६ जिले हैं परंतु जिला परिषदों की संख्या ३४ हैं क्योंकि महाराष्ट्र में मुंबई शहर और मुंबई उपनगर जिले पूर्णतः नागरी जनसंख्या के होने के कारण वहाँ जिला परिषद अस्तित्व में नहीं है।

जिला परिषद में वयस्क मतदान पद्धति के अनुसार चुनाव होते हैं। जिला परिषद में न्यूनतम ५० और अधिकतम ७५ सदस्य होते हैं। सभी पंचायत समिति के सदस्य जिला परिषद के पदसिद्ध सदस्य होते हैं। सदस्यों का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है।

४.४.१ जिला परिषद अध्यक्ष

जिला परिषद में निर्वाचित सदस्य उन्हीं के बीच से एक का अध्यक्ष और एक अन्य का उपाध्यक्ष के रूप में चयन करते हैं। उनका कार्यकाल ढाई वर्ष का होता है। जिला परिषद के अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष अध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन करता है। जिला परिषद अध्यक्ष स्थायी समिति का पदसिद्ध अध्यक्ष होता है।

४.४.२ मुख्य कार्यकारी अधिकारी

प्रत्येक जिला परिषद के लिए एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी होता है। वह जिला परिषद के प्रशासनिक प्रमुख के रूप में कार्य करता है। जिला परिषद के प्रशासन पर उसका नियंत्रण रहता है। जिला परिषद का मुख्य कार्यकारी अधिकारी भारतीय प्रशासनिक सेवा से संलग्न अधिकारी होता है। उसकी नियुक्ति राज्य सरकार करती है। जिला परिषद के कार्यों पर ध्यान रखना और लिए गए निर्णयों का कार्यान्वयन करना मुख्य कार्यकारी अधिकारी के प्रमुख कार्य हैं।

४.४.३ जिला परिषद के कार्य

जिला परिषद में स्थायी समिति, वित्त समिति, निर्माण कार्य समिति, कृषि समिति, समाज कल्याण समिति, शिक्षा समिति, स्वास्थ्य समिति, पशुसंवर्धन एवं दुग्धशाला समिति, महिला और बालकल्याण समिति, जल प्रबंधन और जलापूर्ति समिति, इस प्रकार कुल १० समितियाँ होती हैं। इन समितियों में स्थायी समिति सबसे महत्वपूर्ण समिति होती है। प्रत्येक समिति के लिए एक सभापति चुना जाता है। जिला परिषद की आय के स्रोत जल कर, मेला कर, बाजार कर हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार भूमि राजस्व के अनुपात में निर्धारित अनुदान जिला परिषद को देती है। जिला परिषद इन समितियों के माध्यम से जिले के विकास कार्य करती है। इसमें प्रमुख रूप से निम्न कार्यों का समावेश होता है।

जिला परिषद विभाग और प्रमुख कार्य

समिति	प्रमुख कार्य
 स्थायी	१. सामान्य प्रशासन, वित्त व समन्वय। २. अन्य समितियों पर नियंत्रण।
 वित्त	१. जिला परिषद के आय-व्यय का वितरण रखना। २. लेखा परीक्षण करना।
 कृषि	१. बीज, खाद और औजारों का वितरण। २. आधुनिक कृषि तकनीकी का प्रशिक्षण देना।
 समाज कल्याण	१. पिछड़े वर्गों के लिए वित्तीय सहायता करना। २. दिव्यांग और निराधार लोगों के लिए योजना चलाना।
 शिक्षा	१. प्राथमिक शालाओं का नियंत्रण और प्रबंधन करना। २. विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देना और गणवेश का वितरण।
 पशु संवर्धन और दुग्ध शाला	१. पशु संवर्धन विकास योजना बनाना। २. पशु वैद्यकीय अस्पतालों पर नियंत्रण रखना।
 जल प्रबंधन और जलापूर्ति	१. स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराना। २. जल संवर्धन।
 निर्माण कार्य	१. गाँव को जोड़ने वाली सड़कों और पुलों का निर्माण कार्य करना। २. पेयजल की टंकियों का निर्माण कार्य करना।
 स्वास्थ्य	१. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) संचालित करना। २. संसर्गजन्य रोग नियंत्रण, टीकाकरण और स्वच्छता अभियान।
 महिला और बालकल्याण	१. महिला सक्षमीकरण, आँगनवाड़ी सर्वेक्षण। २. पोषण आहार योजना।



करके देखो

अंतरजाल की सहायता से तुम अपने क्षेत्र की जिला परिषद के संकेत स्थल पर जाओ और जिला परिषद की कार्य प्रणाली को समझो।

स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था: तुलनात्मक सारणी

मुद्दे	ग्राम पंचायत	पंचायत समिति	जिला परिषद
स्तर	 गाँव के स्तर पर	 तहसील स्तर पर	 जिला स्तर पर
सदस्य संख्या	 ७ से १७	 १५ से ४५	 ५० से ७५
पदाधिकारी	 सरपंच, उपसरपंच	 सभापति, उपसभापति	 अध्यक्ष, उपाध्यक्ष
कार्यकाल	 ५ वर्ष → सरपंच ५ वर्ष → सदस्य	 २.५ वर्ष → सभापति ५ वर्ष → सदस्य	 २.५ वर्ष → अध्यक्ष ५ वर्ष → सदस्य
चुनाव	 प्रति ५ वर्ष	 प्रति ५ वर्ष	 प्रति ५ वर्ष
त्यागपत्र	 सरपंच → सभापति (पं.स.) सदस्य → सरपंच	 सभापति → अध्यक्ष (जि.प.) सदस्य → सभापति (पं.स.)	 अध्यक्ष → विभागीय आयुक्त सदस्य → अध्यक्ष (जि.प.)
प्रशासनिक अधिकारी	 ग्राम सेवक/ग्राम पंचायत अधिकारी	 खंड विकास अधिकारी	 मुख्य कार्यकारी अधिकारी
बैठकें	 मासिक सभा, ग्राम सभा (वर्ष में ४ बार)	 महीने में एक बार	 ३ महीने में एक बार



स्वाध्याय

प्र.१ निम्न कार्य और उन्हें करने वाले अधिकारियों की जोड़ियाँ मिलाओ।

‘अ’ गुट

‘ब’ गुट

अ) खंड विकास अधिकारी (BDO)

१) गाँव के व्यक्तियों के जन्म-मृत्यु का पंजीकरण करना।

ब) मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO)

२) तहसील के विकास कार्यों की देखरेख करना।

क) ग्राम पंचायत अधिकारी

३) जिला परिषद द्वारा लिए गए निर्णयों का कार्यान्वयन करना।

प्र.२ पहचानो, मैं कौन हूँ?

१. गाँव का ‘प्रथम नागरिक’

२. जिला परिषद के सभी प्रशासनिक कार्यों पर नियंत्रण रखता है।

प्र.३ तुम क्या करोगे?

प्रसंग १: तुम्हारे विद्यालय की सड़क पर बहुत गड्ढे हो गए हैं और वर्षाकाल में उन गड्ढों में पानी जमा हो जाता है। यह समस्या हल करने के लिए तुम किसे पत्र लिखोगे?

अ) पुलिस थाना

ब) ग्राम पंचायत

क) बैंक मैनेजर

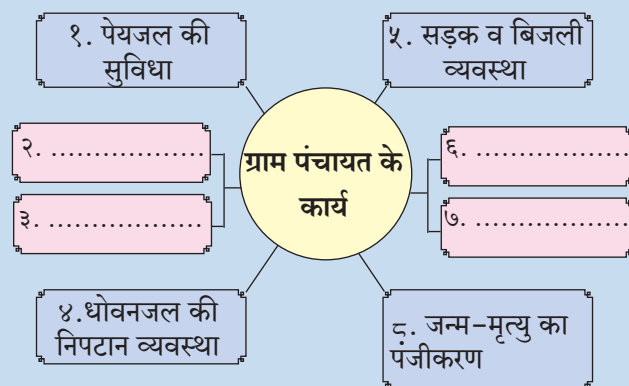
ड) अन्य

तुम्हारा उत्तर और कारण :

प्रसंग २ : २५० जनसंख्या वाली वाड़ी (बस्ती) के लिए क्या 'ग्राम पंचायत' की स्थापना की जा सकेगी? यदि नहीं तो वहाँ कौन-सी स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था कार्य करेगी?

तुम्हारा उत्तर और कारण।

प्र.४ निम्न संकल्पना चित्र पूर्ण करो :



प्र.५ निम्न सारिणी पूर्ण करो (महाराष्ट्र में ग्रामीण स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था-त्रिस्तरीय रचना):

स्तर	जनप्रतिनिधि प्रमुख	प्रशासनिक प्रमुख
ग्राम पंचायत	-----	-----
पंचायत समिति	-----	-----
जिला परिषद	-----	-----

उपक्रम

- तुम्हारे परिसर में निकट के समय में जो विकास कार्य हुए हैं, उनकी जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में उनपर चर्चा करो।
- परिसर के उन विकास कार्यों के कारण पर्यावरण की रक्षा हुई अथवा हानि, इस विषय पर कक्षा में विद्यार्थियों को दो गुट बनाओ और उन गुटों में चर्चा कराओ।
- प्राचीन भारत में आधुनिक समय की ग्राम पंचायत के समान अन्य और कौन-सी संस्थाएँ थीं, उन्हें खोजो और उनपर चर्चा करो।

जैसे-

- जनपद
- महात्मा बसवेश्वर के समय का 'अनुभव मंटप'
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उल्लिखित शासन रचना



स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था (शहर)



५.१ नगर पंचायत

५.२ नगर परिषद

५.३ नगर निगम (महानगरपालिका)

५.४ कटक मंडल

पिछले पाठ में हमने ग्रामीण क्षेत्र की स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं का अध्ययन किया। इस पाठ में हम शहर स्तर की शासन रचना और उनके कार्यों को समझेंगे। शहर की स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था में नगर पंचायत, नगर परिषद, नगर निगम (महानगरपालिका) और कटक मंडल का समावेश होता है।

शहरीकरण के होने से हमारे देश में शहरों की संख्या में वृद्धि हो रही है। अतः शहर की शासन व्यवस्था और प्रशासन के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।



चर्चा करो

शहरों को ग्रसने वाली समस्याओं की चर्चा करो।

५.१ नगर पंचायत

किसी ग्रामीण जनबस्ती का जब शहरीकरण होने लगता है, उस समय राज्य सरकार उस जनता की बस्ती के लिए नगर पंचायत की स्थापना करती है। नगर पंचायत शहर की स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था है। ग्यारह हजार से अधिक और पच्चीस हजार से कम

जनसंख्या वाले शहरों में नगर पंचायत की स्थापना की जाती है। नगर पंचायत की स्थापना के लिए जनसंख्या प्रमुख शर्त है।

५.१.१ नगर पंचायत की संरचना

नगर पंचायत के सदस्यों का चुनाव वयस्क और गुप्त मतदान पद्धति द्वारा होता है। नगर पंचायत सदस्यों के चुनाव हेतु प्रभाग बनाए जाते हैं। इन प्रभागों से सदस्य चुने जाते हैं। अध्यक्ष सीधे जनता द्वारा चुना जाता है। नगर पंचायत में १७ सदस्य होते हैं। महिला और उपेक्षित वर्गों के लिए कुछ स्थान आरक्षित होते हैं।

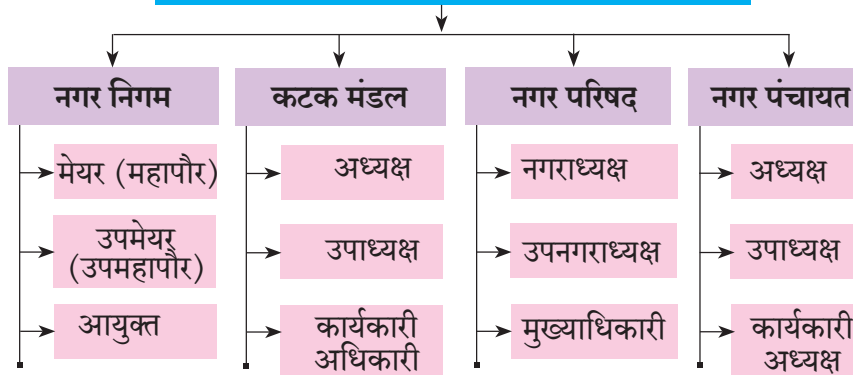


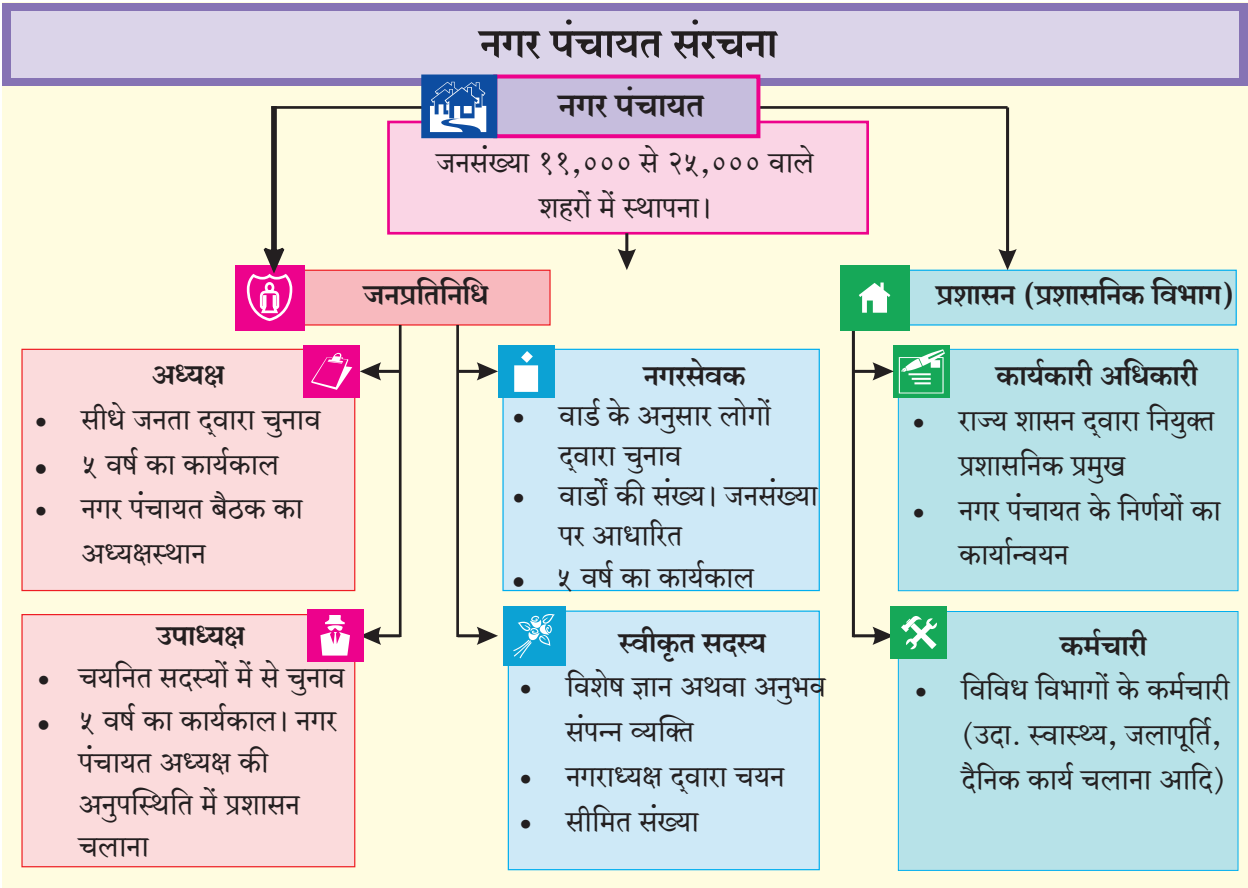
क्या तुम जानते हो?

महाराष्ट्र में कुल १४६ नगर पंचायतें हैं। सबसे अधिक नगर पंचायतें नागपुर विभाग में हैं।

नगर पंचायत के प्रमुख को 'नगराध्यक्ष' कहते हैं। नगराध्यक्ष सीधे जनता द्वारा चुना जाता है। उसका कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। नगर पंचायत के सभी कार्य उसकी अध्यक्षता में पूर्ण किए जाते हैं।

शहरी स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं की संरचना





करके देखो

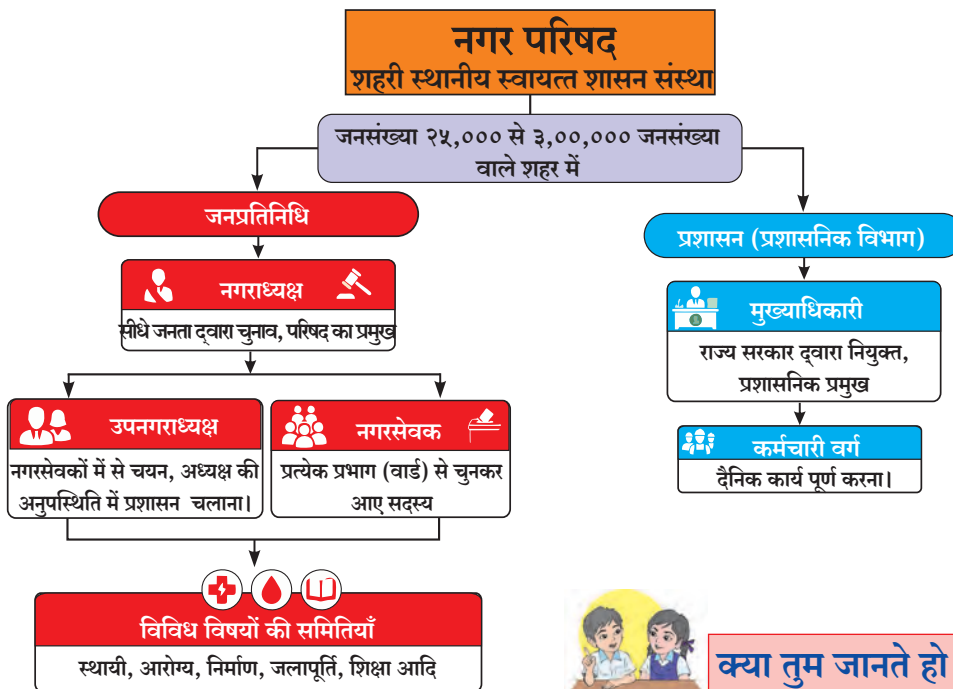
निम्न चित्र में नगर परिषद और नगर पंचायत के कार्य दर्शाए गए हैं। चित्र देखकर कार्य लिखो।



नगर पंचायत अपने कार्यक्षेत्र में विविध कर निर्धारित करती है। प्राप्त होनेवाली कर राशि में से नगर पंचायत सारे कार्य करती है। इसके अतिरिक्त नगर पंचायत को कुछ सरकारी अनुदान भी प्राप्त होता है।

५.२ नगर परिषद

नगर परिषद की स्थापना २५ हजार से अधिक जनसंख्यावाले शहर में की जाती है। जनसंख्या निकषों के आधार पर नगर परिषद को अ, ब और क वर्गों में विभाजित किया जाता है।



क्या तुम जानते हो?

महाराष्ट्र में कुल २४८ नगर परिषदें हैं, उनमें अधिकतम ५० नगर परिषदें पुणे और ४९ नगर परिषदें छत्रपति संभाजीनगर विभाग में हैं। अमरावती ४१, नाशिक ४५, नागपुर ४१ तथा कोकण विभाग में २२ नगर परिषदें हैं।

संदर्भ: (<https://mahadma.maharashtra.gov.in/>)

५.२.१ नगर परिषद की संरचना

नगर परिषद में गुप्त और वयस्क मतदान पद्धति द्वारा सदस्यों का चुनाव किया जाता है। उन्हें 'नगरसेवक' कहा जाता है। नगर परिषद कार्यकाल ५ वर्ष का होता है। नगर परिषद की सदस्य संख्या न्यूनतम १७ और अधिकतम ३८ होती है।

नगर पंचायत और नगर परिषद के कार्य			
मुख्य प्रकार	काम का स्वरूप	विवरण	
१. अनिवार्य कार्य	स्वास्थ्य	१) शहर में स्वच्छता बनाए रखना और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पूर्ति। २) सार्वजनिक अस्पतालों का निर्माण करवाना और लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना। ३) संसर्गजन्य रोगों पर नियंत्रण रखना।	४) सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता बनाए रखना और कूड़े-कचरे का प्रबंधन करना। ५) धोवनजल की निपटान व्यवस्था करना और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना। ६) स्वास्थ्य विषयक जनजागृति करना।
	शिक्षा	१) प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना। २) समाज के अपेक्षित वर्गों को शिक्षा की धारा में लाने हेतु विभिन्न उपक्रमों का आयोजन करना।	३) आवश्यकतानुसार नए विद्यालय खोलना और उनकी देखरेख करना। ४) व्यावसायिक शिक्षा का प्रशिक्षण देना।
	अन्य	१) सड़क पर बिजली की सुविधा। २) शहर के नागरिकों के जन्म-मृत्यु (तथा विवाह) का पंजीकरण।	३) विविध स्वरूप का कर निर्धारण। ४) शहर में श्मशान भूमि और दफन भूमि की व्यवस्था करना।
२. ऐच्छिक कार्य		१) सार्वजनिक उद्यानों को विकसित करना और उनका प्रबंधन करना। २) व्यायामशाला, धर्मशालाओं का निर्माण करवाना।	३) खेल का मैदान उपलब्ध कराना। ४) निर्धनों के लिए मकानों का निर्माण करवाना। ५) रोजगार निर्माण करना।

५.२.२ नगराध्यक्ष

नगर परिषद प्रमुख को 'नगराध्यक्ष' कहते हैं। उसका चुनाव सीधे जनता द्वारा किया जाता है। उसका कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। नगराध्यक्ष नगर का प्रथम नागरिक होता है। नगर परिषद की सभी बैठकों का वह अध्यक्ष पद विभूषित करता है। नगर परिषद के आर्थिक प्रशासन पर नगराध्यक्ष ध्यान रखता है। उसकी अनुपस्थिति में उपनगराध्यक्ष प्रशासन चलाता है। नगर परिषद में चुनकर आने वाले सदस्यों के बीच में से उपाध्यक्ष का चयन किया जाता है।

५.२.३ मुख्याधिकारी

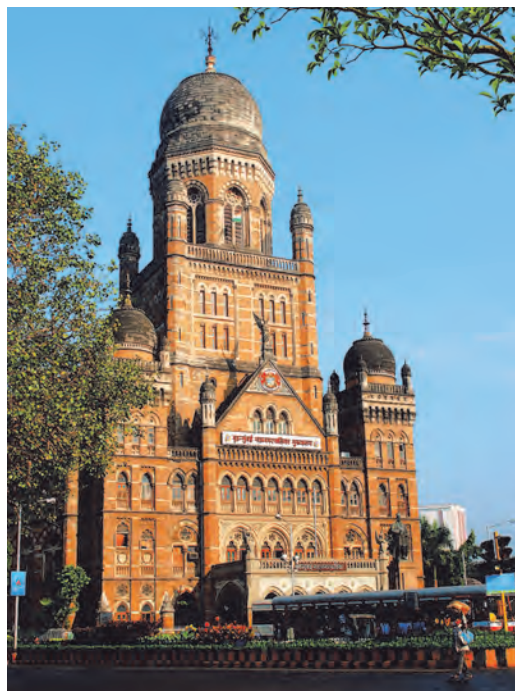
नगर परिषद का प्रशासनिक प्रमुख उसका मुख्याधिकारी होता है। वह राज्य सरकार का अधिकारी होता है। राज्य लोकसेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली परीक्षा द्वारा मुख्याधिकारी की नियुक्ति की जाती है। नगर परिषद के प्रशासनिक कार्यों को पूर्ण करने का दायित्व उसपर होता है।

५.२.४ नगर परिषद के आय स्रोत

नगर परिषद की आय के स्वतंत्र स्रोत हैं। नगर परिषद अपने क्षेत्र में विविध करों का निर्धारण करती है। नगर परिषद भूमि और भवनों, आयातित सामान, व्यवसाय, निवास, व्यापार और नौकरी, नाट्यगृह और थिएटर जलापूर्ति आदि पर कर निर्धारण करती है। नगर परिषद करों द्वारा प्राप्त होने वाली आय से अपने व्यय का प्रबंधन करती है। इसके अतिरिक्त नगर परिषद को राज्य सरकार द्वारा आर्थिक सहायता और अनुदान प्राप्त होता है।

५.३ नगर निगम (महानगरपालिका)

नगर निगम शहरी स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था है। जिस शहर की जनसंख्या तीन लाख से अधिक होती है और जिस शहर की वार्षिक आय लगभग दो करोड़ होती है, उन शहरों के लिए नगर निगम की स्थापना की जाती है। महाराष्ट्र सरकार को नगर निगम की स्थापना करने का अधिकार प्राप्त है। महाराष्ट्र का प्रथम नगर निगम मुंबई है। वर्तमान में महाराष्ट्र में कुल २९ नगर निगम हैं।



बृहन्मुंबई नगर निगम

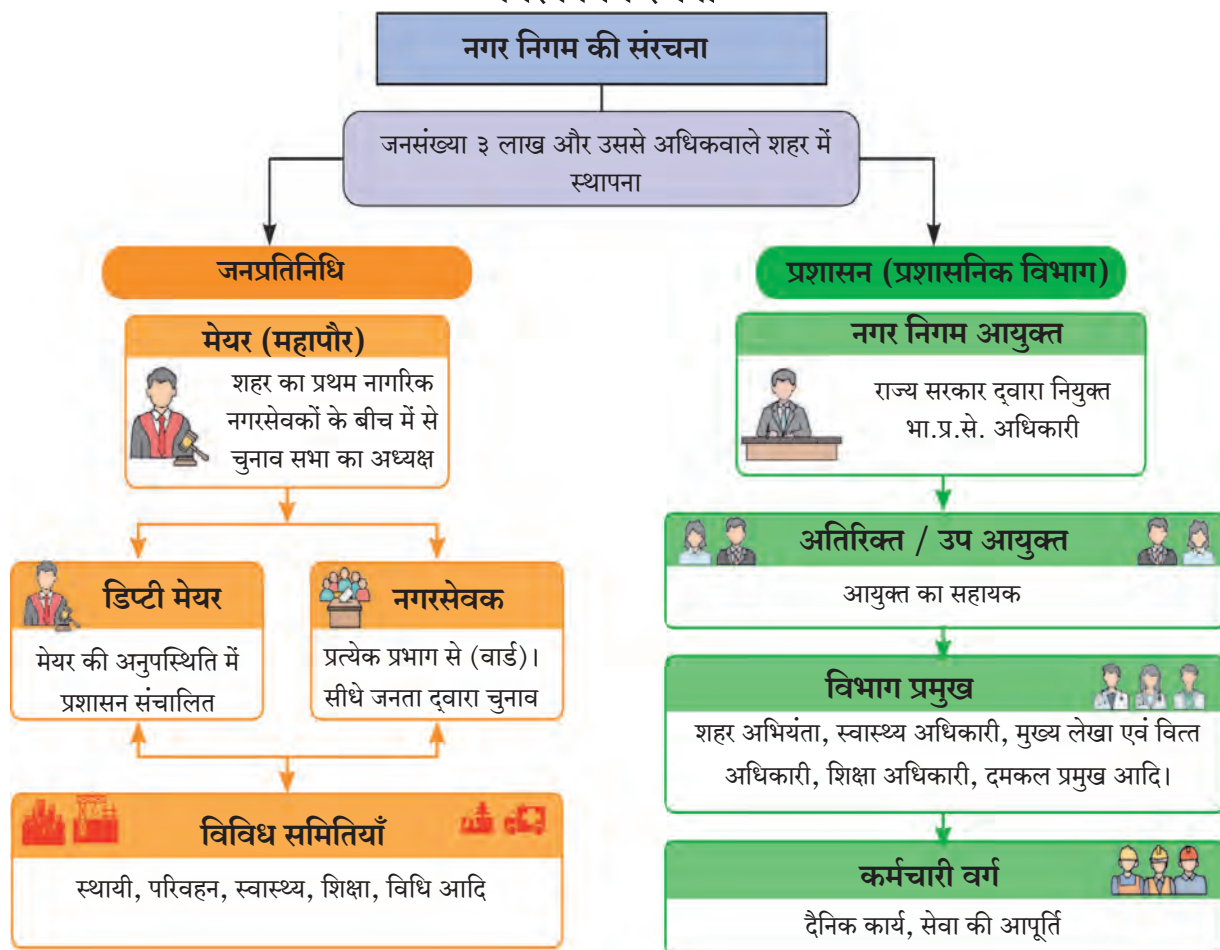
५.३.१ नगर निगम (महानगरपालिका) की संरचना

शहर की जनसंख्या के आधार पर नगर निगम सदस्यों की संख्या निर्धारित की जाती है। प्रत्येक नगर निगम की सदस्य संख्या का निर्धारण राज्य चुनाव आयोग करता है। सदस्य संख्या का निर्धारण करने के पश्चात जनसंख्या के अनुपात में शहर के विभिन्न प्रभाग बनाए जाते हैं। इस समय महाराष्ट्र में चार सदस्यीय प्रभाग रचना है। केवल बृहन्मुंबई नगर निगम में एक सदस्यीय प्रभाग है।

नगर निगम की न्यूनतम सदस्य संख्या ६५ है। बृहन्मुंबई नगर निगम में अधिकतम सदस्य संख्या २२७ है। प्रभाग में चुनकर आने वाले सदस्य को 'नगरसेवक' कहते हैं। नगरसेवकों का चुनाव वयस्क और गुप्त मतदान पद्धति द्वारा किया जाता है। नगरसेवकों का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है।

नगर निगम का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व भी राज्य सरकार नगर निगम को विसर्जित कर सकती है। नगर निगम विसर्जित किए जाने पर अथवा उसका कार्यकाल समाप्त हो गया हो तो आगामी छह महीने के भीतर नगर निगम के चुनाव कराना बंधनकारक होता है।

नगर निगम रचना



नगर निगम के अध्यक्ष को 'मेयर' (महापौर) और उपाध्यक्ष को 'डिप्टी मेयर' (उपमहापौर) कहते हैं। मेयर शहर का प्रथम नागरिक होता है। मेयर और डिप्टी मेयर का कार्यकाल ढाई वर्ष का होता है। कार्यकाल पूर्ण होने से पहले भी वे अपने पद का त्यागपत्र दे सकते हैं।

५.३.२ नगर निगम आयुक्त

नगर निगम का प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी

आयुक्त होता है। उसके मार्गदर्शन में नगर निगम का संपूर्ण प्रशासन चलाया जाता है। राज्य सरकार द्वारा नगर निगम आयुक्त की नियुक्ति की जाती है। आयुक्त पद का अधिकारी भारतीय प्रशासनिक सेवा (भा.प्र.से. / आई.ए.एस.) से अधिकारी होता है। शहर के प्रशासन का मुख्य दायित्व नगर निगम आयुक्त पर होता है।

५.३.३ नगर निगम के कार्य

नगर निगम कार्यों के अनिवार्य और ऐच्छिक कार्य, ये दो प्रकार हैं।

अनिवार्य कार्य	ऐच्छिक कार्य
शहर की जलापूर्ति और धोवनजल निपटान का प्रबंध करना।	शहर में बाग-बगीचे बनवाना।
बिजली आपूर्ति, सड़क निर्माण और मरम्मत, शहर की स्वच्छता, अस्पताल की व्यवस्था करना।	नाट्यगृह, स्टेडियम, वस्तुसंग्रहालय का निर्माण कार्य करना।
श्मशान भूमि - दफन भूमि की व्यवस्था करना और जन्म-मृत्यु का पंजीकरण करना।	शहर में मनोरंजन के साधन उपलब्ध करना।

स्वास्थ्य और प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना।	सड़क के दोनों ओर और अन्यत्र पेड़ लगाना, शहर का सौंदर्यीकरण करना।
संसर्गजन्य रोगों पर नियंत्रण रखना।	सार्वजनिक वाचनालय और पुस्तकालय प्रारंभ करना
शहर में परिवहन व्यवस्था करना।	मेला प्रदर्शनी का आयोजन करना, शहर में भटकने वाले, खुले रूप में घूमने वाले पशुओं का बंदोबस्त करना
ढहने की अवस्थावाली असुरक्षित इमारतों से लोगों की सुरक्षा करना।	अन्य कार्य

५.३.४ नगर निगम की विविध समितियाँ

नगर निगम विविध समितियों के माध्यम से कार्य करता है।

- जैसे - स्थायी समिति, शिक्षा समिति, परिवहन समिति, सार्वजनिक स्वास्थ्य समिति, कानून समिति, सार्वजनिक निर्माण समिति और बाजार समिति आदि। स्थायी समिति नगर निगम की सबसे महत्वपूर्ण समिति है।

५.३.५ नगर निगम के आय स्रोत

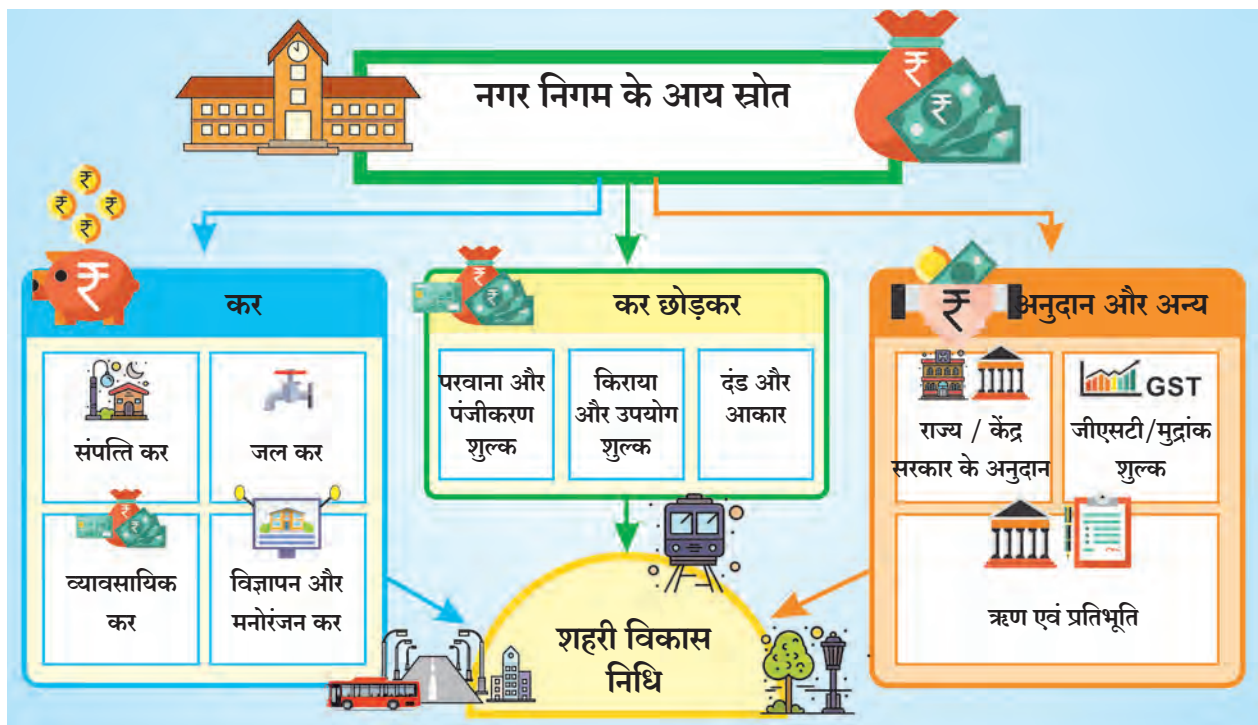
नगर निगम की आय के दो स्रोत हैं :

१. नगर निगम प्रत्यक्ष कर का निर्धारण कर आय प्राप्त करता है। प्रत्यक्ष करों में संपत्ति कर, परिवहन कर, फिल्म और विज्ञापन पर लगाया जाने वाला कर, जल कर आदि का समावेश होता है।

२. अप्रत्यक्ष आय में शुल्क सहायक वसूली, सरकारी अनुदान और आर्थिक सहायता का समावेश होता है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक हितों की योजना पूर्ण करने के लिए नगर निगम को सरकार की सहमति से ऋण पत्र प्रतिभूति बेचने का अधिकार प्राप्त है।

५.४ कटक मंडल (Cantonment Board)

कटक मंडल शहरी प्रशासन का एक प्रकार है। इसे 'छावनी मंडल' भी कहा जाता है। कटक मंडल की स्थापना वर्ष १९२४ में हुई। जिस स्थान पर लश्करी (सेना) छावनी होती है, वहाँ अन्य नागरिकों की भी बस्ती होती है। लश्कर के उस क्षेत्र में नागरिकों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए और उनकी नागरी आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए कटक मंडल की स्थापना की गई है।





क्या तुम जानते हो?

भारत में कुल ६१ कटक मंडल हैं। उनमें से महाराष्ट्र में ७ कटक मंडल हैं। वे इस प्रकार हैं - खड़की, पुणे कैंटोन्मेंट, देहूरोड (पुणे) - भिंगार (अहिल्यानगर), देवलाली (नाशिक), छत्रपति संभाजीनगर और कामठी (नागपुर)

भारत के सभी कटक मंडल भारत सरकार के रक्षा विभाग के अधीन हैं। विभिन्न छावनी मंडल की सदस्य संख्या अलग-अलग होती है। कटक मंडल का प्रशासन प्रमुख केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त कार्यकारी अधिकारी होता है। कटक मंडल की जनसंख्या के अनुसार प्रभाग बनाए जाते हैं। उन प्रभागों में लोगों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि कटक मंडल के सदस्य होते हैं। उनका कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। इसके अतिरिक्त कटक मंडल में सरकार द्वारा नियुक्त सेना के अधिकारी होते हैं। इन सबके द्वारा कटक मंडल का प्रशासन चलाया जाता है।

छावनी का प्रमुख सेनाधिकारी कटक मंडल का पदसिद्ध अध्यक्ष होता है। कटक मंडल का उपाध्यक्ष नागरी क्षेत्र का जनसामान्यों का प्रतिनिधि होता है।

५.४.१ कटक मंडल की विशेषताएँ

- कटक मंडल की स्थापना भारत सरकार के रक्षा विभाग द्वारा की जाती है।
- कटक मंडल एकमात्र स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था है जो भारत सरकार के अधीन है।
- कटक मंडल के व्यय हेतु आवश्यक वित्तीय सहायता रक्षा विभाग द्वारा की जाती है।
- कटक मंडल सैनिकों और उनके साथ छावनी के सामान्य नागरिकों को आवश्यक सेवाओं की पूर्ति करता है।
- कटक मंडल सैनिकी छावनीवाले क्षेत्र का प्रशासनिक कार्य संचालित करता है।

५.४.२ कटक मंडल के कार्य

- सैन्य और नागरी बस्तीवाले क्षेत्र का स्थानीय प्रशासन चलाना।
- छावनी क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार व्यवस्था, जलापूर्ति, सड़क आदि का प्रबंध करना।
- सड़क की बिजली व्यवस्था, बाग-बगीचे, साफ-सफाई जैसी मौलिक सुविधाओं की पूर्ति करना।
- बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए छावनी क्षेत्र में विद्यालय चलाना और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

कटक मंडल संरचना : श्रेणी और सदस्य संख्या

श्रेणी	जनसंख्या निकष	कुल सदस्य	सदस्य रचना		
			निर्वाचित सदस्य		नामनिर्देशित सदस्य
प्रथम श्रेणी (I)	५०,००० से अधिक	१५	७ निर्वाचित	+	८ नामनिर्देशित/पदसिद्ध
द्वितीय श्रेणी (II)	१०,००० से ५०,०००	१५	७ निर्वाचित	+	८ नामनिर्देशित/पदसिद्ध
तृतीय श्रेणी (III)	२,५०० से १०,०००	९	४ निर्वाचित	+	५ नामनिर्देशित/पदसिद्ध
चतुर्थ श्रेणी (IV)	२,५०० से कम	३	१ निर्वाचित	+	२ नामनिर्देशित/पदसिद्ध

विशेष टिप्पणी : कटक मंडल में लश्करी (सेना का) प्रशासन का प्रभाव बना रहे इसलिए नामित/ पदसिद्ध सदस्यों की संख्या निर्वाचित सदस्यों की अपेक्षा सदैव एक से अधिक होती है।

- दमकल दल की व्यवस्था करना।
- अस्पताल, टीकाकरण अभियान आदि का प्रबंध करना।
- सड़क के दोनों ओर पेड़ लगाना और उनकी देख-भाल करना।
- स्थानीय कर संकलित करना और उस कर राशि में से नागरिकों की सुविधाओं की व्यवस्था करना।

कटक मंडल के आय स्रोत

- छावनी क्षेत्र के प्रत्यक्ष करों से प्राप्त होने वाली आय।
- केंद्र सरकार और केंद्रीय रक्षा विभाग द्वारा प्राप्त होने वाली वित्तीय सहायता।



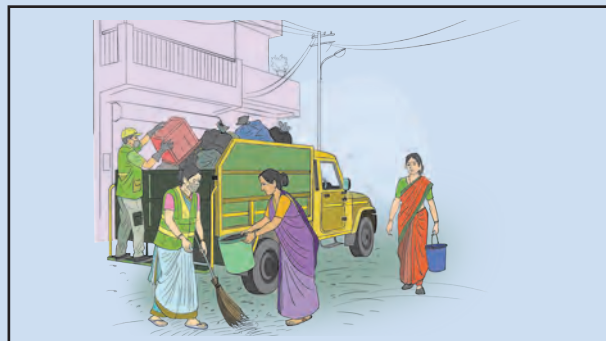
स्वाध्याय

प्र.१ निम्न चित्र देखकर तुम्हारे परिसर में इन सुविधाओं की आपूर्ति करने वाली स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था कौन-सी है? वह लिखो।



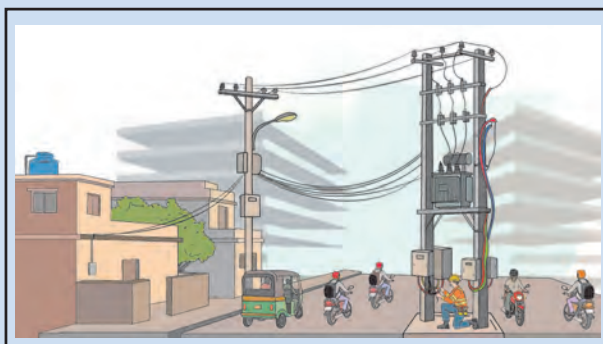
इस सुविधा की आपूर्ति करने वाली संस्था

.....



इस सुविधा की आपूर्ति करने वाली संस्था

.....



इस सुविधा की आपूर्ति करने वाली संस्था

.....



इस सुविधा की आपूर्ति करने वाली संस्था

.....

प्र.२ पहचानो तो, मैं कौन हूँ?

१. जनसंख्या कम परंतु शहरीकरण होने लगता है, मैं कौन हूँ?

.....

२. मेरे बिना नगरपरिषद का अनुमान पत्र पारित नहीं हो सकता, मैं कौन हूँ?

.....

३. मैं बड़े शहरों की प्रशासनिक रीढ़ की हड्डी हूँ, मेरी नियुक्ति राज्य सरकार करती है, मैं कौन हूँ?

.....

प्र.३ निम्न सारिणी पूर्ण करो

शासन संस्था	प्रमुख निर्वाचित अधिकारी	प्रशासनिक अधिकारी
नगर पंचायत	अध्यक्ष	
.....		मुख्य अधिकारी
.....	मेयर	

प्र.४ किसी 'आदर्श शहर' का संकल्पना चित्र बनाओ; जिसमें स्थानीय स्वायत्त शासन संस्था द्वारा आपूर्ति की गई न्यूनतम ५ सुविधाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी। (जैसे - साइकिल ट्रैक, सौरऊर्जा, बिजली बत्ती, कूड़ा-कचरा वर्गीकरण उद्यान, पेयजल की सुविधा आदि)

प्र.५ तुम्हारे शहर को 'स्मार्ट और स्वच्छ शहर' बनाने के लिए न्यूनतम ४ घोष वाक्य तैयार करो।

जैसे - 'शहर हमारा घर है', 'उसे साफ-सुथरा रखना हमारा कर्तव्य है।'

तुम्हारे घोष वाक्य:

१.

२.

३.

४.

उपक्रम

- परिसर के सार्वजनिक उद्यानों की वर्तमान स्थिति देखकर यह लिखो कि वहाँ किन नई सुविधाओं की आवश्यकता है।
- शहर की सार्वजनिक दीवारों पर स्थानीय प्रशासन द्वारा क्या स्वच्छता का संदेश देने वाले चित्र बनाए गए हैं? उनका निरीक्षण करो और उन संदेशों को अपनी कॉपी में लिखो।



जिला प्रशासन



६.१ जिला प्रशासन की पहचान

६.२ जिला राजस्व प्रशासन: रचना, कार्य, अधिकार

६.३ जिला पुलिस प्रशासन: रचना, कार्य, अधिकार

६.४ जिला न्याय प्रशासन: रचना एवं कार्य

“विद्यार्थी मित्रो, कल्पना करो कि हम किसी एक बड़े जहाज पर सवार हैं। इस जहाज पर हजारों लोग रहते हैं। किसी को भूख लगी है, किसी को अस्पताल जाना है तो किसी को खेलने के लिए सुरक्षित स्थान चाहिए। अब मुझे बताओ कि इतने बड़े जहाज पर कोई गड़बड़ी न हो; इसके लिए किसी न किसी की आवश्यकता तो होती है न? इसके लिए जहाज पर कप्तान होते हैं। वे कप्तान जहाज के प्रमुख होते हैं और कोई भी समस्या उत्पन्न होने पर वे अपने सहयोगियों के साथ उस समस्या को हल करते हैं। जहाज को पूरी सुरक्षा के साथ अपने निर्धारित गंतव्य स्थान तक पहुँचाने में ‘कप्तान’ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

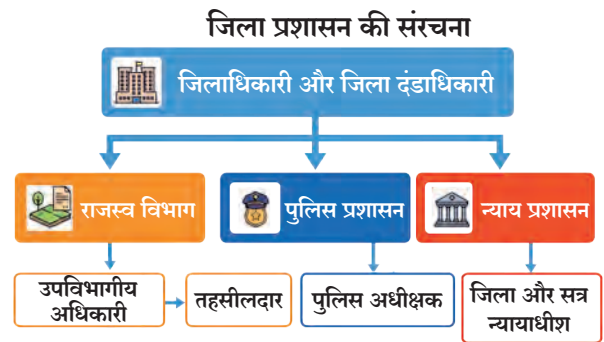
हमारा जिला अर्थात् यही ‘जहाज’ है और जिले का जिलाधिकारी उसका ‘कप्तान’ है!



सांगली जिलाधिकारी कार्यालय

६.१ जिला प्रशासन की पहचान

विविध जिलों को मिलाकर राज्य बनता है।



जिले की स्वतंत्र प्रशासनिक व्यवस्था होती है। इसी को ‘जिला प्रशासन’ कहते हैं। जिले को प्रशासन के एक महत्वपूर्ण घटक रूप में समझा जाता है। राज्य प्रशासन और स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के बीच जिला प्रशासन महत्वपूर्ण सेतु है। जिला प्रशासन पर राजस्व संकलन, कृषि सिंचाई, लोककल्याणकारी कार्य, आपदाकालीन कार्य, सस्ता अनाज वितरण, चुनावों का आयोजन, स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं के कार्यों की देखरेख करने का दायित्व होता है।

जिलाधिकारी जिला प्रशासन का प्रमुख होता है। प्रशासन व्यवस्था के मुख्य घटक के रूप में जिले को देखा जाता है। ऐसी मौलिक प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा चलाए जाने वाले सभी सार्वजनिक व्यवहारों का प्रबंधन ही “जिला प्रशासन” है।

६.२ जिला राजस्व प्रशासन: रचना, कार्य और अधिकार :

जिला प्रशासन का एक महत्वपूर्ण विभाग

जिला राजस्व व्यवस्था है। इसमें जिलाधिकारी, उपजिलाधिकारी, उपविभागीय अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, मंडल अधिकारी और ग्राम महसूल अधिकारी (पटवारी) का समावेश रहता है। यह व्यवस्था भूमि, राजस्व प्रशासन, कानून व्यवस्था, नागरिकों के कार्य, प्राकृतिक आपदा प्रबंधन और राहत कार्य जैसे महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करती है।

जिला राजस्व प्रशासन: संरचना

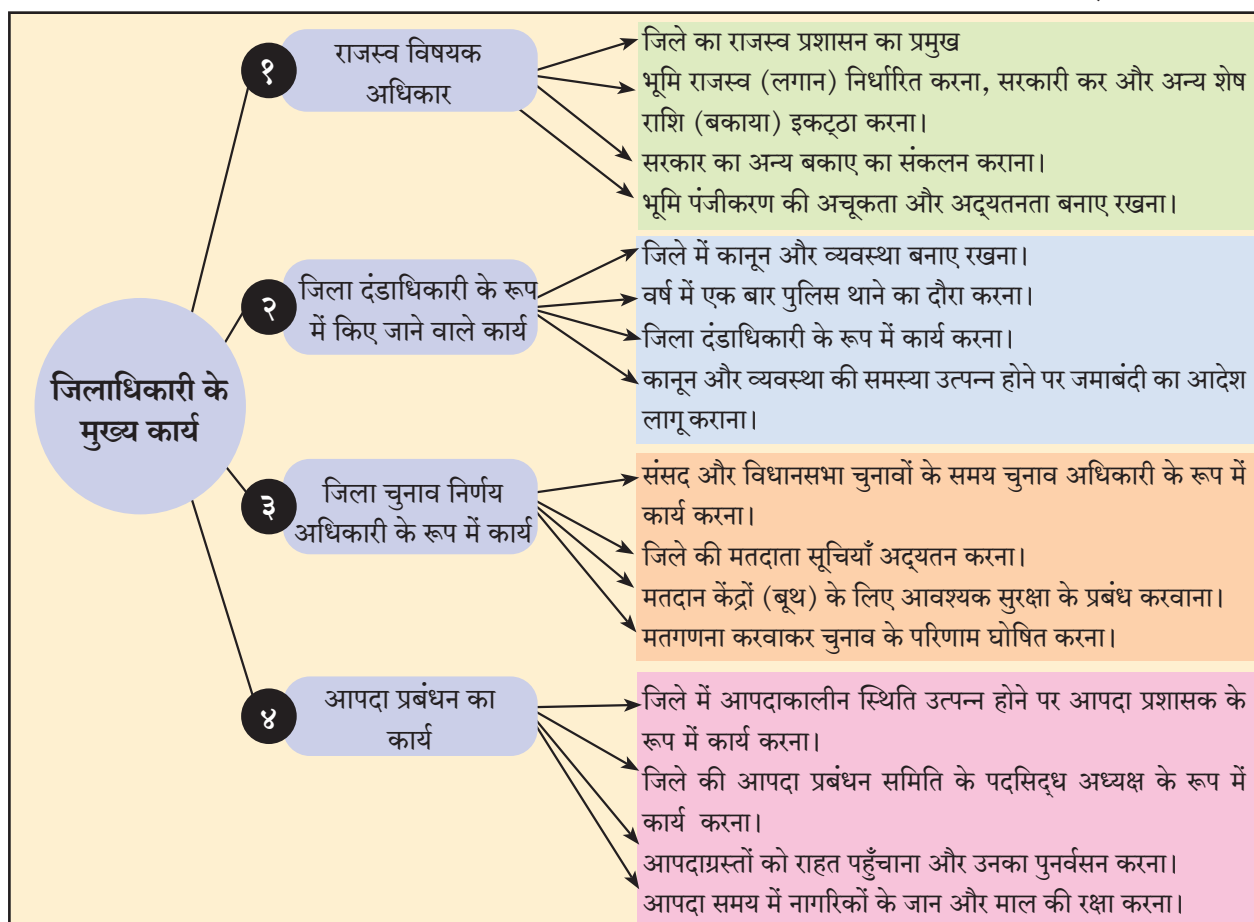
१. जिलाधिकारी	जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी
२. उपजिलाधिकारी	जिलाधिकारी की सहायता करना
३. तहसीलदार	तहसील का प्रमुख राजस्व अधिकारी
४. नायब तहसीलदार	तहसीलदार की सहायता करना
५. मंडल अधिकारी / मंडल निरीक्षक	अनेक गाँवों के समूहों (खंड) की देखरेख करना
६. पटवारी	गाँव का राजस्व अधिकारी
७. कोतवाल	पटवारी की सहायता करना।

६.२.१ जिलाधिकारी

जिलाधिकारी भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी होता है। वह जिले का प्रशासन प्रमुख होता है। उसका चुनाव संघ लोक सेवा आयोग द्वारा किया जाता है। परंतु उसकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है। अन्य कार्यों का निर्वहन करने के साथ-साथ उसे कानून सुव्यवस्था बनाए रखने और भूमि राजस्व संकलन करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करने का दायित्व निभाना पड़ता है। साथ ही ; राज्य और राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का कार्यान्वयन करने के अधिकार भी जिलाधिकारी को प्राप्त रहते हैं।

तहसीलदार

विभिन्न छोटे उपविभाग मिलकर जिला बनता है। इस उपविभाग को 'तहसील' कहते हैं। तहसील राजस्व प्रशासन का प्रमुख तहसीलदार होता है। वह तहसील के अंतर्गत सारे गाँव देहात और तहसील के मुख्यालय से संबंधित राजस्व विषयक दायित्व पूर्ण करता है।



वह जिलाधिकारी के अधीन रहकर कार्य करता है।
उसके कार्य निम्नानुसार हैं :

- भूमि के दस्तावेजों का पंजीकरण और विभाजन करना।
- भूमि राजस्व (लगान) की वसूली करना।
- भूमि पर अनाधिकार रूप से आक्रमण होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही कर उसका उन्मूलन करना।
- आपदा प्रबंधन और राहत कार्यों में सहभागी होना।
- नागरी सुविधाओं विषयक सभी महत्वपूर्ण प्रमाणपत्र प्रदान करना।
- भूमिविषयक दिवानी स्वरूप के कुछ विषयों (प्रकरण) में न्यायदंडाधिकारी के रूप में कार्य करना।



करके देखो

१. चित्र देखो और उसके आधार पर तुम्हें क्या समझा; यह बताओ।

२. केंद्र सरकार द्वारा लड़कियों के विकास और उनकी शिक्षा के लिए प्रारंभ की गई योजनाओं की अधिक जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में उसपर समूह में चर्चा करो।



पटवारी

पटवारी गाँव स्तर पर राजस्व विभाग का कर्मचारी होता है। वह ग्रामीण नागरी प्रशासन में निम्न दायित्वों का निर्वाह करता है।

- राजस्व वसूल करना, तकाबी ऋण और उसकी वसूली करना।
- गाँव की स्थावर/अचल संपत्ति का पंजीकरण करना और उनकी प्रतिलिपियाँ देना।
- अकाल निवारण के कार्यों की कार्यवाही करना।
- चुनाव के सौंपे गए कार्य करना।
- जिलाधिकारी द्वारा समय-समय निर्धारित किए गए पंजीकरण, पुस्तकें और लेखा-जोखा रखना।

पटवारी पर प्रत्यक्ष नियंत्रण मंडल अधिकारी और उसके पश्चात तहसीलदार का होता है।



समझेंगे

महाराष्ट्र के कुछ भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य:

डॉ. राजेंद्र भारूड (भा. प्र. से. IAS)

कोविड-१९ महामारी का मुकाबला करने के लिए नंदूरबार के तत्कालीन जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र भारूड ने उनके चिकित्सा ज्ञान का उपयोग कर 'ऑक्सीजन प्लांट' तैयार करवाए।

परिणामतः ऑक्सीजन उपलब्धता के विषय में नंदूरबार जिला आत्मनिर्भर बना। कोरोना संक्रमित आदिवासियों के पृथक्करण अथवा एकाकीकरण के लिए विद्यालय, समाज मंदिर, छात्रावासों और धर्मशालाओं में 'ऑक्सीजन' सहित बेड तैयार करवाए।

ई. जेड. खोब्रागडे (पूर्व भा. प्र. से. IAS)

भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्य करते हुए ई. जेड. खोब्रागडे ने संविधान के प्रति जागृति उत्पन्न हो, इस उद्देश्य से नागपुर जिले के प्रत्येक विद्यालय में 'संविधान की उद्देशिका वाचन' उपक्रम चलाया। महाराष्ट्र शासन द्वारा इस उपक्रम का संज्ञान लेकर वर्ष २००८ से महाराष्ट्र के प्रत्येक विद्यालय में उद्देशिका का वाचन अनिवार्य कर दिया।

६.२.२ जिला प्रशासन द्वारा चलाई जाने वाली महत्वपूर्ण योजनाएँ

केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाएँ चलाने का दायित्व जिलाधिकारी का होता है। जिलाधिकारी विभिन्न विकास एवं कल्याणकारी योजनाएँ कार्यान्वित करता है। उसकी जानकारी निम्नानुसार है:

१. सामाजिक और कल्याणकारी योजनाएँ : समाज की महिलाएँ, बालक, अप्रगत वर्ग, सामाजिक और आर्थिक रूप से दुर्बल वर्ग आदि की कल्याणकारी योजनाएँ। जैसे - बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, अंत्योदय योजना आदि।

२. ग्रामीण विकास और रोजगार निर्माण की योजनाएँ:

जीवन निर्वाह और ग्रामीण संचार व्यवस्था के संदर्भ में योजनाएँ। जैसे- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय और महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण जीवनोन्नति अभियान, मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना आदि।

३. कृषि विषयक योजनाएँ : कृषि उपज को बढ़ाना, सिंचाई और जल भंडारण की सुविधा आपूर्ति, फसलों में विविधता लाना, किसानों को ऋण उपलब्ध कराना आदि योजनाएँ जिला प्रशासन द्वारा चलाई जाती हैं। जैसे- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना।



बताओ तो !

तुम जिलाधिकारी बनोगे तो तुम क्या-क्या कार्य करोगे ?

६.३ जिला पुलिस प्रशासन: संरचना, कार्य और अधिकार :

जिला पुलिस व्यवस्था के महत्वपूर्ण कार्य सार्वजनिक सुरक्षा, कानून और व्यवस्था बनाए रखना और अपराधों की रोक-थाम करना आदि है। पुलिस व्यवस्था की सतर्कता के कारण लोगों को सुरक्षा प्राप्त होती है, न्याय मिलता है। नागरिकों के जीवन और संपत्ति की रक्षा होती है।

जिला स्तर पर पुलिस व्यवस्था का प्रमुख पुलिस अधीक्षक होता है और वह जिला पुलिस दल का नेतृत्व करता है। जिले की संपूर्ण पुलिस व्यवस्था पुलिस अधीक्षक के अधीन कार्य करती है। संघ लोकसेवा आयोग द्वारा पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति की जाती है।



ढूँढ़ो तो!

महाराष्ट्र पुलिस सेवा दल का ध्येय वाक्य 'सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय' है। इस वाक्य का अर्थ खोजो।



जिला पुलिस प्रशासन व्यवस्था की संरचना

१. पुलिस अधीक्षक (S.P.)
२. अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (Addl. S.P.)
३. पुलिस उपअधीक्षक (Dy.S.P.)
४. पुलिस निरीक्षक (P.I.)
५. सहायक पुलिस निरीक्षक (A.P.I.)
६. पुलिस उपनिरीक्षक (P.S.I.)
७. सहायक पुलिस उपनिरीक्षक (A.S.I.)
८. पुलिस हवलदार (H.C.)
९. पुलिस सिपाही (P.C.)

६.३.२ पुलिस अधीक्षक के कार्य और अधिकार

- जिले में अपराधों की रोक-थाम करना और उसपर नियंत्रण रखना।
- सामान्य जनता में सुरक्षा की भावना का निर्माण करना।
- यातायात का प्रबंधन करना।
- आपदा प्रबंधन और आपातकालीन परिस्थिति में सहयोगी का दायित्व निभाना।

जिला पुलिस प्रशासन पर अति महत्वपूर्ण व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व होता है।



क्या तुम जानते हो?

साइबर अपराध

संगणक और अंतरजाल के माध्यम से व्यक्ति अथवा संस्था आदि की संगणक प्रणाली में घुसकर उसकी जानकारी है करना (चुराना), उसका दुरुपयोग करना, वायरस भेजना, मेल द्वारा ठगी करना, धमकी भेजना, फिरौती माँगना जैसी गतिविधियाँ करने को 'साइबर अपराध' कहते हैं।

साइबर हेल्प लाइन १९३०

६.४ जिला न्याय प्रशासन : रचना व कार्य

जिला स्तर पर जिला न्यायाधीश प्रमुख न्यायिक प्राधिकारी होते हैं। जब वे दीवानी मुकदमों के संदर्भ में कार्य करते हैं, तब उन्हें 'जिला न्यायाधीश' कहते हैं और जब वे फौजदारी (अपराध) मुकदमों के संदर्भ में कार्य करते हैं, तब उन्हें 'सत्र न्यायाधीश' कहते हैं।

६.४.१ जिला न्यायालय

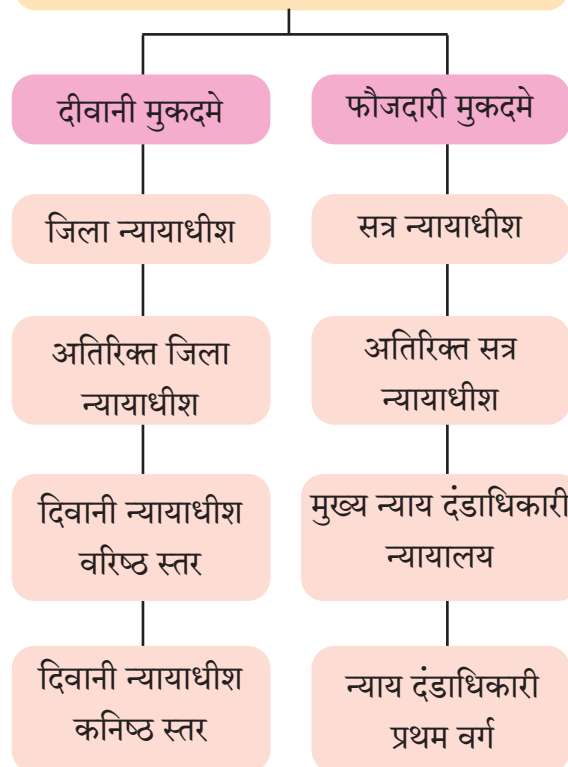
न्यायपालिका अथवा न्यायव्यवस्था संविधान की रक्षक की भूमिका निभाती है। यह न्याय की परिचायक है। उच्चतम न्यायालय के अधीन उच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के अधीन जिला न्यायालय कार्य करता है। उच्च न्यायालय की सलाह के अनुसार राज्य के राज्यपाल जिला न्यायाधीश की नियुक्ति करते हैं। जिले से संबंधित कानून विषयक सभी विवादों का निराकरण करने का अधिकार जिला न्यायालय को प्राप्त है।



जिला न्यायालय

प्रत्येक जिले के जिला न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश होते हैं। उन्हें जिला और सत्र न्यायाधीश कहते हैं। उनके कार्यों में सहायता करने के लिए अन्य कनिष्ठ न्यायाधीश होते हैं। जिला न्यायालय में दिवानी (सिविल) और फौजदारी (क्रिमिनल) मुकदमे चलाए जाते हैं।

जिला और सत्र न्यायालय की प्रारूप सारिणी:



६.४.२ जिला न्यायालय के कार्य

१. न्यायिक अधिकार : जिला न्यायालय जिला स्तर पर दिवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवाई करता है।

- **दिवानी मुकदमे:** अ) भूमि और अन्य संपत्ति के स्वामित्व अधिकार के संदर्भ में स्वत्वाधिकार (कब्जा), अनाधिकार आक्रमण आदि विवादों के मुकदमे चलाना। ब) परिवार में संपत्ति की बँटवारा, उत्तराधिकारी के अधिकार आदि के संदर्भ में मुकदमे।

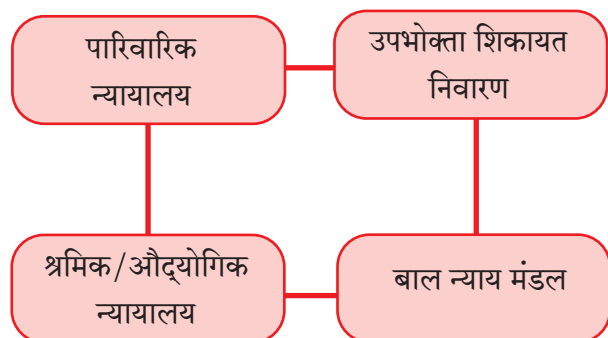
- **फौजदारी मुकदमे :** सत्र न्यायालय में वे सभी आपराधिक मुकदमे चलाए जाते हैं, जिन मुकदमों में तीन वर्ष से अधिक दंड अथवा सजा का प्रावधान होता है। जैसे - डकैती, हत्या आदि गंभीर अपराध

२. अपील की सुनवाई : जिला न्यायालय जिले का अपीलीय न्यायालय है। कनिष्ठ न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय अथवा आदेश पर 'अपीलीय न्यायालय' के रूप में वह जाना जाता है। दिवानी न्यायाधीश (वरिष्ठ

स्तर) और मुख्य न्याय दंडाधिकारी के निर्णय के विरुद्ध प्रविष्ट किए गए अपील चलाने का अधिकार जिला न्यायालय को है।

३. प्रशासनिक अधिकार : जिला और सत्र न्यायालय के अंतर्गत आने वाले न्यायालय से संबंधित कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण और अनुशासन भंग विषयक कार्यवाही करने के सभी अधिकार जिला न्यायालय को होते हैं।

जिला स्तर पर अन्य न्यायालय:



समझेंगे

विधि सेवा प्राधिकरण किसे कहते हैं?

समाज के दुर्बल वर्गों को निःशुल्क कानूनी सहायता करने के उद्देश्य से भारत में विधि सेवा प्राधिकरण की स्थापना वर्ष १९८७ में की गई। समाज के दुर्बल वर्गों को न्यायालयीन अथवा कानूनविषयक निःशुल्क सेवा और सहायता प्रदान करना विधि सेवा प्राधिकरण का मुख्य उद्देश्य है। आर्थिक अथवा अन्य अक्षमताओं के कारण कोई भी नागरिक वंचित न रहे, यह एक प्रमुख उद्देश्य विधि सेवा प्राधिकरण का है।



स्वाध्याय

प्र.१ पहचानो तो, मैं कौन हूँ?

- मैं जिले का प्रथम प्रशासनिक अधिकारी हूँ और आपदा प्रबंधन समिति का अध्यक्ष हूँ।
.....
- मैं गाँव स्तर पर शांति बनाए रखने में पुलिस की सहायता करता हूँ।
.....
- मैं तहसील स्तर पर राजस्व एकत्रित करता हूँ और 'तहसील दंडाधिकारी' के रूप में जाना जाता हूँ।
.....
- मैं जिले में अपराधों की रोकथाम करने हेतु पुलिस दल का नेतृत्व करता हूँ।
.....

प्र.२ निम्न प्रसंगों में तुम किस अधिकारी से संपर्क करोगे?

- तुम भूमि की खसरा-खतौनी (सात बारह) की प्रतिलिपि प्राप्त करना चाहते हो -
.....
- तुम्हारे परिसर में चोरी हो गई है और शिकायत करनी हो तो -
.....
- दो व्यक्तियों के बीच चल रहे भूमि का विवाद न्यायालय में ले जाना है तो -
.....
- प्राकृतिक आपदा के कारण (जैसे - ओलावृष्टि) हुई फसलों की हानि का पंचनामा करने के लिए -
.....

प्र.३ निम्न सारिणी पूर्ण करो।

अधिकारी	कार्य
जिलाधिकारी	जिले का राजस्व संकलित करना और कानून व्यवस्था बनाए रखना
जिला पुलिस अधीक्षक	
तहसीलदार	
जिला न्यायाधीश	
पटवारी	

प्र.४ संकल्पना स्पष्ट करो।

- जिलाधिकारी
- तहसीलदार

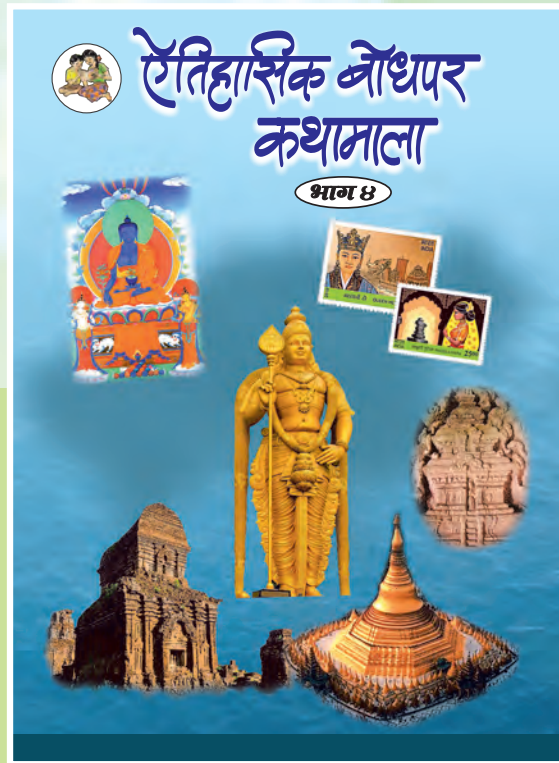
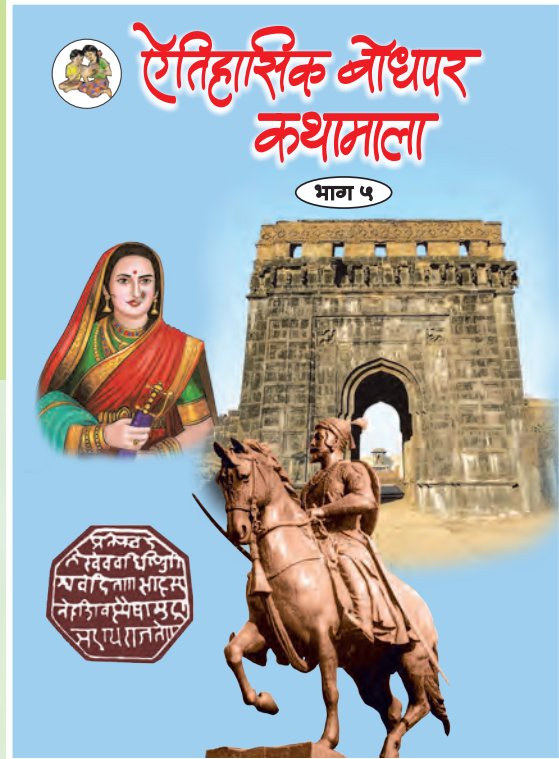
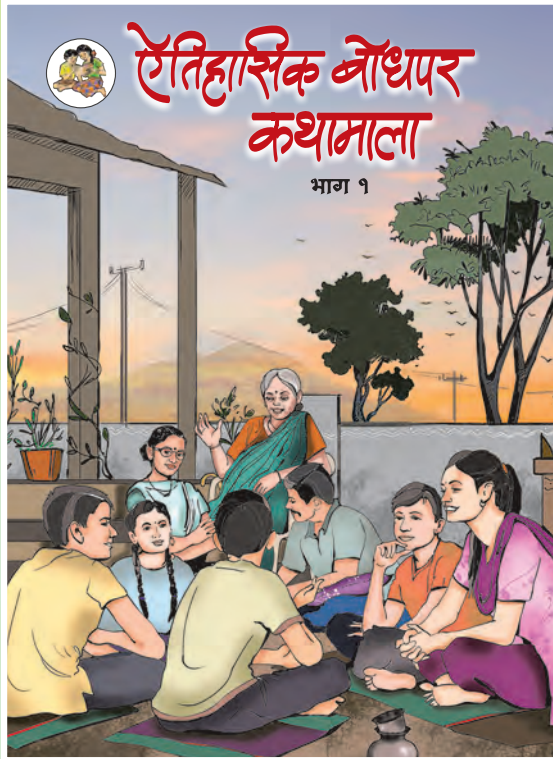
प्र.५ कल्पना करो और लिखो, 'मैं जिलाधिकारी बना तो

तुम्हारे जिले में अतिवृष्टि होने से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसी परिस्थिति में जिलाधिकारी के रूप में तुम किन तीन कार्यों को सबसे अधिक प्राथमिकता दोगे और क्यों ?

उपक्रम

- जिला प्रशासन द्वारा चलाई जा रही 'आपदा प्रबंधन' व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करो और आपदाकालीन संपर्क क्रमांकों की सूची बनाओ।
- जिलाधिकारी और अन्य विभाग के प्रमुख (जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य) जिले के विकास पर चर्चा कर रहे हैं, इस प्रसंग से संबंधित लघु नाटिका प्रस्तुत करो।
- तुम्हारे परिसर के किसी प्रशासनिक अधिकारी से साक्षात्कार करो।
- जिलाधिकारी अथवा तहसीलदार बनने के लिए कौन-सी परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ती है? उसकी जानकारी प्राप्त करो और उस विषय में कक्षा में चर्चा करो।

विद्यार्थी मित्रो..... अधिक जानकारी के लिए यह भी पढ़ो



प्रिय विद्यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो। ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है।

- १) स्वयं को दोष मत दो।
- २) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ।
- ३) तुम पॉक्सो ई-बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है। तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो। तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है।



इस बटन को दबाओ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाइट पर उपलब्ध है।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो। ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है।



चाइल्ड लाइन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। महिला एवं बालविकास मंत्रालय द्वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाइन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है।



नए समाज की ओर
Towards a new dawn

विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें।



महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति तथा
अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, पुणे.

इतिहास व नागरिकशास्त्र
इयत्ता सहावी (हिंदी माध्यम)

(निःशुल्क वितरण के लिए)



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha